

श्रीमान् लक्ष्मीनारायण श्रीदेव

दिल्ली-ब्रजमेठ

स्वर्ग में महासभा

श्रीमान् पं० लद्ददत्तशर्माद्वित

डा० भवानीलाल भारतीय

जित सैन्धवा...पं०

तिथि.....पं०

पं० रामनारायण शुभ्रसुखेकालकान्तराम श्रीमान्

द्वितीयो के उद्घाटकाशाधाराय इटोनो

में भुद्धित कराके प्रकाशित की

गुरुरेष्वरी बराई गई किसी को छापने का
आधिकार नहीं

प्रथमचार

१०००

दूसरा ।

गुरु विरजानन्द दण्डी

मन्दिर -

पु. परिग्रहण कम २८९९ ॥

द्वानन्द महिला महाविद्यालय, कुम्भेश्वर

८० नंगी जाय १०००

पुस्तकालय

७५०-६३४..... ३४४

प्रिय १८०१

१-श्रीमद्भुता..... १८०१

खर्ग में अहासभा ॥

कालचक के पहिये को घुमाते हुए सूर्यनारायण
त्योंही उत्तरायण हुये त्योंही देवलोक में धोर घबराहट
भय गई इस घबराहट के कारणों को लिखा जाय तो
एक करोड़ लोकों का महा महा महाभारत बन जाय
तो भी पाठकों के सन्तोषार्थ संक्षेप से दो चार कारणों
का वर्णन करना अत्यन्त आवश्यक जीन पड़ता है।

इस घबराहट का खास कारण तो यह या कि मि-
स्टर टक्कर ने फ़क्कर बन के जब से मुक्तिसेना बनाई और
वारकाई (War cry) समाचारपत्र निकाला तब से दे-
वता लोगों को हर समय यही मन्देह और भय बना-
रहता है कि नमालूम किस समय टक्करासुर के सैनिक
खर्ग में सीढ़ी लगा के चढ़ आवें और हम लोगों को
मार के खर्ग से निकाल दें। गत २३ दिसम्बर सन् १८६६
को फ़ू मैशन के देवता ने खर्ग में जा के देवताओं से
प्रार्थना की कि महाराज मुझे कृष्णों ने मार के भगा-
टिया, मर्त्यलोक से मेरी उपासना को ईसाई उठाना
चाहते हैं आप सब कौमपरवर हैं लिहाज़ा मेरी रक्षा
करना आप लोगों का फ़र्ज़ है, फ़ू मैशन चर्च के देवता

(२)

की प्रार्थना को सुन के देवराज इन्द्र की ध्यान आया कि सहजेकट कमीटी में जो पब्लिक मीटिङ्ग वा महासभा करने का प्रस्ताव हुआ था उस को अब करना चाहिये। देवराज इन्द्र इस विचार में बैठे ही थे कि इतने में अ-संख्य पितरों ने देवदर्बार की घेर लिया और चिन्ह के दुहाई देने लगे इन की चिन्हाहट को सुन के महाराज इन्द्र भी ध्वनी और अपने द्वारपाल से बोले कि इन सब को खामोश कर के दर्वार में हाज़िर करो हुक्म पाते ही द्वारपाल सब को बुला लाया ।

उन सब ने हाथ जोड़ के विनय करी कि महाराज हम लोग बड़े कष्ट में हैं । हम में से अधिक लोग अरब इन्डियान के रहने वाले हैं हम लोगों ने जितने सुकर्म किये थे उन में से किसी का भी हम को फल नहीं मिला और न हमारे पुत्र हमारा आदृ ही करते हैं जो हम को यहां खाने को मिले लिहाज़ा हम सब भूखों सरे जाते हैं अगर हम को पहिले से यह अन्ये भालूम होता तो हम कभी सुकर्म नहीं करते ।

इन लोगों की बात की आर्यावर्तीय पितरों ने भी ताईद की और कहा कि वेश्वर यह लोग सत्य कहने अगर हम लोग जानते कि सुकर्म और कुकर्म करनेवालों को स्वर्ग में एक ही स्थान सिलता है तो हम लोग क्यों सुकर्म करते, देखिये जिस महिषासुर ने बड़े २ महर्षियों को खताया आप सब लोगों को युद्ध में धताया वही

आज सुक्तपदवी पाके आनन्द भोग रहा है इस के अ-
तिरिक्त रावण और वाणादि अनेक अन्यायी राक्षस भी
सुक्त हो चैन उड़ा रहे हैं तब अन्य लोगों का सुकर्म करना
फल भारना नहीं तो क्या ? महाराज ! आप इस लवण-
धींधीं को मिटाइये नहीं तो जगत् में अन्धेर हो जायगा ।

इन लोगों की अर्ज पूरी नहीं हुई थी कि इतने में
देवतों के एक दल ने आ कर इन्द्र महाराज से प्रार्थना
की कि हे देवराज ! आज कल हम लोग भूखे मर रहे
कहीं पर यज्ञ नहीं होता जो हम को भाग मिले, यज्ञ
के विना उत्तम धुआं नहीं होता, धुआं ही नहीं तो बा-
दर काहे के बने, बस बादरों के अभाव से वर्षा का अ-
भाव हो रहा है, अवर्षण से संसार की यह दशा है कि
शाकस्वरी देवी (शार्कराडेय पुराण में लिखा है कि शा-
कस्वरी देवी ने १२ वर्ष तक देवताओं को शाक खिला-
के जिलाया था) की तर्कारी भी सूख गई, जो हमारे
भक्त पहिले बर्फी और पेड़ों का भोग लगाया करते थे
अब उन को बाजरे की रोटी भी नहीं मिलती है ।

इन लोगों की ताईद करते हुए काशीपति विश्व-
नाथ बोल उठे, महाराज ! बेशक आज कल देवतों को
बड़ा कष्ट है मेरी ही दशा देखिये न ! मैं जो एक बार
भूमि की तरह में यवन के डर से ज्ञानवापी कुए में जा
गिरा था तो काशी के पर्णों ने मेरी एवज में एक कायम
मुकाम (Officiating) विश्वनाथ बना लिया भगर

आद्यर्थ यह है कि अब तक भी कोई मेरा भक्त मुझे कुए से नहीं निकालता है, हालांकि मेरा सग़ज़ चावल और सड़े पानी की बदवू से सड़ा जाता है और मैं कुए में पड़ा महाकष्ट भोग रहा हूँ और मेरा क्रायम मुकाम मुस्तकिल (Permanent) विश्वनाथ बन के गुलबर्गे उड़ा रहा है, हे देवराज ! यदि आप हम लोगों के कष्ट को दूर न करेंगे तो हम सब भिलके बलि को देवराज बनालेंगे ॥

इन सब की बातों को सुन के देवराज इन्द्र ने मुस्करा के कहा हां भाई अब तो तुम्हारी नज़र बढ़ गई है अब आपलोग अमेरिका की ओर क्यों न देखने ! मगर याद रखिये कि अब वहां बलिका बल नहीं है अब तो पाताल में रिपब्लिकन गवर्नरेट (प्रजातंत्र) हो गई है अगर स्वर्ग में भी वही साम्यवाद आपलोग चलाकेंगे तो हम भी सत्यलोक के सनुष्यों की महाकांग्रेस करा के आप लोगों की भक्ति को नेस्त नाबूद कर देंगे । सरण रखिये कि जैसी उन्नति हम आप लोगों की करसक्ते हैं वैसी उन्नति विदेशीय राजा बलि नहीं कर सकता है मैं अभी सब संसार के देवतों की महासभा करके आप लोगों के दुःख दूर करने के उपायों को बड़े यत्न से करूँगा

इतना कह के महाराजा इन्द्र ने समस्त दिग्पाल और सूर्य चन्द्रमा आदि प्रधान २ देवतों को सम्मति करने के वास्ते बुलाया वह लोग पलक मुरते देवराज की अमरावतीपुरी में आ विराजे ॥

प्रथम सब की समति से एक मनेजिङ् कमेटी कायम की गई थी कि इस कमेटी का खास काम नोटिस देना व सभा के बास्ते स्थानादि का प्रबन्ध करना था इस कारण श्री सूर्य नारायण इस के सभापति चन्द्रमा उपभापति और अग्निदेव सेक्रेटरी नियत किये गये, प्रथम मनेजिङ् कमेटी के मेम्बरों की राय हुई कि श्री विघ्न विनायक लभ्योदर से विज्ञापन लिखा के बितीर्ण किये आयं परन्तु श्री शुक्राचार्य ने कहा कि अब वह ज़माना नहीं है जब हाथ से लिख लिख कर दिशा बरों को चिट्ठी भेजी जाता थी, अब तो इन्हाँलाइटेशन रोशनी का ज़माना है इस लिये किसी प्रेस में दो चार अरब नोटिस लघाके बांट देने चाहिये, आजकल फी मेल एजू-केशन (स्त्री शिक्षा) तरफ़ी पर है लिहाज़ा सरस्ती देवी पलमात्र में नोटिस कम्पोज़ फरके छपा सकती हैं। इन सब की बातों को सुन के भुवन भास्कर भगवान् बोले कि नोटिस बांटने व छपाने की कोई ज़हरत नहीं है क्योंकि इएटेलीजेन्स डिपार्टमेंट (समाचार विभाग) ने इतनी उच्चति करली है कि पलक मारते सारे संसार में सभा के समाचार पहुंच जायगे, मैं हेलोग्राफ (सूर्य की किरणों के द्वारा जो समाचार भेजे जाते हैं) के द्वारा मेरे सित्र शीतररिम (चन्द्रमा) नाइट सिगनेल्स के द्वारा और अग्निदेव जी महाराज तड़िद्याम (तार) के द्वारा पलमा भारते सर्वत्र समाचार पहुंचा देगे आप लोग बि-

ज्ञापन बांटने की चिन्ता को छोड़ के दूसरे प्रबन्ध की-जिये ॥ मैनेजिङ् कमेटी की सम्मति से अमरावती के टौनहाल में वसन्तपंचमी को सभा का होना स्थिर हुआ, सभा में अधिक भीड़ होने की सम्भावना थी इस कारण इनस्पेक्टर जनरल आफ डिवाइन् (हास्पिटेल्स सिविल एंड मिलेटरी) (अश्विनी कुमारों को) बुला के आज्ञा दी गई कि आप अपनी डिसपैन्सरी के सहित सभा मण्डप के दाहनी और हर समय हाजिर रहिये थों कि आजकल बोद्धोनिकल्पेण (महानारी) का अधिक भय है, इस के अतिरिक्त डिवाइन मेल सर्विस के सुपरिशटेल्डेट वायु देव को आज्ञा मिली कि तुम हर समय यहां हाजिर रहो और जिस सभासद् का कहीं से कोई पत्र आवेफौरन उसे उस के पास पहुंचा दो ।

इन प्रबन्धों को करने के पश्चात् मैनेजिङ् कमेटी ने विदेशी देवताओं के वास्ते टौनहाल के हाते में एक होटल तयार कराया और योरोपियन देवतों के वास्ते भोजन पकाने के निमित्त मातड़नी देवी को उच्चिष्ठ चारणालनी के सहित सम्पूर्ण सामग्री देके नियत कर दिया बंगदेशीय देवतों के वास्ते मत्स्यप्रिया बगलामुखी नियुक्त की गई यवनदेशी और अफ्रीका के देवतों के खान पान का प्रबन्ध करने को कज्जलगिरिनिभा काली जी नियत की गई, ऐसे ही चीन, जापान और मलाया आदि द्वीपों के देवतों के खान पान का प्रबन्ध करने को बांगे-झवरी और पद्मा देवी को (यह दोनों देवी बौद्ध सम्प्र-

आर्य समाज लड़ैल

क्लिन्अजमेर

खर्ग में महावभा ।

३

दाय में जानी जाती हैं) आदेश मिला, भैनेजिझु कमेटी ने इस प्रकार से सबके खान पान का प्रबन्ध करके, टौन-हाल के द्वार पर (Welcome to Holy Gods) सुन्दर अक्षरों में लिख के लगवा दिया और द्वार पालों को प्राज्ञा दी दी कि जो कोई सभा में विघ्न डालने के अभिप्राय से कुछ काम करे उसको जहनुम रसीद करो और जो सीधे खभाव से सभा में जाना चाहे उसे हर्गिज भत रोको ।

प्रबन्ध करते ही करते वसन्तपञ्चमी का दिन आगया उस रोज़ प्रातःकाल ही से सभा मण्डप में देवतों का आना आरम्भ हुआ सब लोग अपने २ ब्लाक में जा बैठे, ए० ब्लाक में ओरजिनेल (असली) देवतों के बास्ते कुर्सियों की कतार लगी हुई थी, और उस ही के बीच में सभापति के बास्ते एक रत्न जटित सिंहासन विद्या हुआ था इस के दाहिनी ओर बी० ब्लाक था इस में सहर्ष मण्डल तथा वेदों के मानने वाले मुक्त जीवों के बास्ते कुर्सियां बिछीं हुईं थीं, बांईं ओर सी० ब्लाक में यूरोप तथा अरब आदि देशों के देवता तथा पैग़स्बर लोग विद्यमान थे और ही० ब्लाक में मोहर्न (नये जमाने के) ऋषि तथा धर्माचार्य लोग विराजमान थे ।

देवियों को आसन देने के समय प्रबन्धकर्ताओं में वैमनस्य हो गया क्योंकि कई एक की सम्मतिथी कि देवियों को देवतों के बीच में आसन न मिलना चाहिये क्योंकि सनातनधर्म वाले स्त्रियों को सभा में बिठलाना

पाप समझते हैं । दूसरे कहते थे कि जिस दुर्गा देवी ने भहिषासुर को और शुभ्म निशुभ्म आदि दैत्यों को युद्ध में मारा वह अब किसे पड़दा करेंगी खैर अन्त में यह स्थिर हुआ कि ए० छलाक के पास ही एक फीमेल क्वार्टर बनाया जाय और सब देवी उस ही में बैठ के सभा को देखें और आवश्यकतानुसार सम्मति भी दें ।

इस के अनन्तर प्रबन्धकत्तों ने जो छो० छलाक की ओर देखा तो वहां पूरी अशांति पाई कुछ लोग आगे बैठने के बास्ते आपस में झगड़ा कर रहे थे इस कोलाहल को सुन के भैनेजिङ्ग कमेटी के सभापति ने सब को यथा स्थान बिठला के शान्ति की जब सब लोग यथा स्थान बैठ यथे और सभा में शान्ति स्थापित हो गई, तब रिसेप्शन कमेटी वा अस्थर्धना सभा के सभापति कुमार जयन्त ने इस प्रकार से अपना व्याख्यान आँख मिया

दयारुद्यन

देव, देवो, ऋषि, मुक्त और धर्मराचार्यवृन्द !

मैं आप लोगों को धन्यवाद देने योग्य नहीं हूं क्यों कि कलियुगी रामायण में मुझे कठवा लिख दिया है, भला सोचिये तो सही कि मैं अपने देव स्वरूप को त्याग कर कठवा क्यों बनता ? प्रधम तो योगी के बिना किसी बोयह शक्ति ही ईश्वर ने नहीं दी कि अपने शरीर को बिना मृत्यु के छोड़ के दूसरा शरीर धारण करे, यदि मुझे योगी ही माना जाय तो क्या योगी इतना भी नहीं स-

स्वर्ग में महासभा ।

६

मक सक्ता कि श्रीरामचन्द्र जी की धर्मयद्वी सती साध्वी पतिव्रता सीता जी परपुरुष से प्रीति नहीं कर सकती हैं मैं फ़ख नारने वयों जाऊँ, फिर उस ही रामायण में यह भी लिखा है कि महाराज रामचन्द्र जी ने मेरी एक आंख फोड़ डाली परन्तु देखिये मेरे दोनों नेत्र कमल से खिले हुये हैं, यदि कहिये कि कठवे हृष की आंख फोड़ दी थी और दूस ही कारण अब तक भी सब कठवे काणे होते हैं तो यह महा अन्याय है कि अपराध करूँ मैं आंख फोड़ी जाय कठवों को, इस के अतिक्रि श्रीरामचन्द्र जी के और मेरे जन्म से भी पूर्व काकभुसुख का होना पुराणों में लिखा है परन्तु उस के भी दो नेत्र नहीं लिखे अस्तु—मैं अपनी अधिक सफाई देना नहीं चाहता हूँ क्योंकि सत्यलोक के मनुष्यों ने कुछ मुझे ही दोष नहीं लगाया है वरन् भगवान् विष्णु को भी दोषों का भरडार बना दिया है, देवतों की दुर्दशा को दूर करने के वास्ते जो आपलोग लाखों कोश से यहां आये और अमरावती के टौनहाल को सुशोभित किया इस कारण मैं आप लोगों को अरबों धन्यवाद देता हूँ ।

देवदन्द ! पुराणों को मानने वालों ने स्वर्ग को थियेटर हमलोगों को नगाड़ची और देवाङ्गनाशीं को नटनी समझ रखा है क्योंकि अपने देश के छोटे २ आनन्दोस्तव में लिख दिया है कि “देवादुन्मभयो नेदुर्नृतुश्चाप्सरोगम्भः (अथवा) अवादयन्तः पठहान् पुष्पवृष्टि सुषोदिवि” इन के अलावा दीन इसलामियां वालों के स्पृह से तो बहिरङ्गत

भी हूरों का बाजार है इन सब लबड़ धीं २ के दूर करने के बास्ते जो आप लोग आज इस टौनहाल में इकट्ठे हुए हैं इस परिश्रम के बास्ते मैं आप लोगों को रिसेप्शन कमेटी की ओर से धन्यवाद देता हूँ ॥

इस स्पीच के समाप्त होते ही महाराज कुवेर ने प्रस्ताव किया कि आज की जनरल कमेटी में भगवान् विष्णु सभापति बनाये जायं यद्यपि इस का अनुसूदन अनेक लोगों ने किया परन्तु विष्णु भगवान् ने यह कह के हसे अनझीकार किया कि हम तो आज कल किसी काम के ही नहीं रहे हैं, जब से शंकराचार्य ने वेदोंकी अड़ काटने को सेलफ गवर्नर्मेंट चलाया, तब से छोटे २ बालक भी खुदखुदा बन गये, सृष्टि करने और वेद बनाने के समय हम एक ही स्वतन्त्र थे पर सृष्टि का और वेदों का नाश करने को करोड़ों ब्रह्म बन गये हैं, अब तो हम केवल स्थियों की कसम खाने को ही रह गये हैं और देखिये जो हमारे भक्त बनने का दम भरते हैं वही हम को गाली देते हैं, “महाब्राह्मो गोविन्दः” (विष्णु सहस्र नाम) अर्थात् विष्णु बड़ा सुवर हैं कहिये किसे गरज है जो आप का सभापति बन के गाली खाय !

विष्णु भगवान् की बात को सुन के भोलानाथ शङ्कर जो हंसते २ खड़े हुये और मुस्फराके कहने लगे कि गाली से क्यों घबड़ते हो ! १६१०८ पटरानी और मनोहारिणी

वृज बनिताओं का रसास्थादन भी तो आप को ही कराया गया है, क्या कड़ुये २ शू और भीठे भीठे गप की कहावत की चरितार्थ करना चाहते हो ! रास करते बक्क तो छ महीने की रात करदी और कुछ भी न शर्माये पर अब जरा देर को सभापति बनते आप की नानी भरती है, क्या गोपियों का यह गीत अच्छा लगता था कि—

फलाफलापितन्ते पदास्त्रुजम् ।

कणुकुचेषुनश्वास्त्रहच्छयम् ॥

और प्रेमातुर भक्तों के मुख से महाबराह शब्द को सुन के कान कटे पड़ते हैं। कैलाशवासी शश्मु की बात का सुन के सरस्वती देवा के पिता श्री ब्रह्मा जी खड़े हो के बोले, चूंकि विष्णु के दोषों पर इस सभा में विचार किया जायगा लिहाज्ञा विष्णु को सभापति बनाना मुनासिब नहीं है। मेरी राय नाकिस में आज की सभा में भी देवराज इन्द्र ही सभापति के आसन को ग्रहण करें।

अनेक वादानुवाद तथा अनुसोदन प्रसोदन होने के पश्चात् देवराज इन्द्रने सभापति का आसन ग्रहण किया जिस समय इन्द्र व्याख्यान देने को खड़े हुए उस समय चिर्यस और करतालि की ध्वनि सेटौनहाल गूंज उठा।

सभापति का व्याख्यान ॥

देवदन्द ! आप लोगों ने जो सुझे इस महती देव-सभा का प्रधान बनाया यह आप लोगों ने मेरे आफ-

शियल रेङ्क का जान्य बढ़ा के अपनी नियमवर्तिता का अपूर्व परिचय दिया है, इस महत्वी सभा के महाधिवेशन का छट्टेष्य यह है कि मर्त्यलोक के निवासियों ने जो देवता लोगों पर सहस्रों दोष लगाये हैं और धोखा धड़ी लगा रखी है इस से हम लोगों का ही अपमान नहीं होता है बरन परम रूपालु एरमेश्वर का भी पूरा अपमान होता है मेरे तो पूरे परिवार का ही पुराण बनाने वाले ने चोर और व्यभिचारी लिख दिया है । नृसिंह-पुराण के २८ आठ्याय में मेरे पुत्र जयन्तकुमार को लिखा है कि राजा शन्तनु ने एक वृद्धावन बसा के जो अत्यन्त मनोहर बाण बनाया था उस की पूर्णों को मेरा पुत्र चुरा लाता था, एक दिन माली ने मेरे पुत्र को फूल चुराते हुए और नृसिंह की स्वप्नप्राप्ति आज्ञा से दीवारों पर नृसिंह का निर्मात्य छिड़क दिया उस के लांघने से जयन्तकुमार ऐसा शक्तिहीन हो गया कि वह रथ पर न चढ़ सका तब सारथी के उपदेश से वृद्धावन में १२ वर्ष रहा और ब्राह्मणों का उच्छ्वास बटोरता रहा तब उस के शरीर में शक्ति आई । भला इस कथा के बनाने वालों से कोई पूछे कि जब यवनों ने भारत पर आक्रमण किया और देवसन्दिरों को लोड़ा नृसिंह की अनेक मूर्तियों को तोड़ के फेक दिया तब क्या नृसिंह का निर्मात्य नहीं रहा था ? जो भारत की सीजा पर छिड़क देने और उस को

नांघने से सब यवन शक्तिहीन हो जाते, इस के अतिरिक्त उस ही वृसिंहपुराण के ४३ अध्याय में सुके व्यभिचारी लिखा है, जब हिरण्यकश्यप तपश्चर्या करने गया था (तब इन्द्र उस की गर्भवती द्यो को उठा के लेगया और उस से व्यभिचार करना चाहा तब नारद ने इन्द्र को समझाया और कहा कि यह गर्भवती है इस के उदर में परम भागवत है) क्या मैं ऐसा अज्ञानी था कि इतना भी न समझता था कि यह गर्भवती है, खैर यह तो कुछ बड़ी निन्दा ही नहीं है सुके बढ़के विष्णु को लूल बनाया है, एक जगह तो लिखा है कि सब देवतों के कहने से भूगु ऋषि ने विष्णु के वक्षस्थल में लात मारी परन्तु विष्णु भगवान् की ऐसी शान्ति बड़ी कि भूगु के पद को दबाने लगे और कहने लगे कि आप के कमल समझोमल पढ़ों में मेरे कठोर वक्षस्थल की बड़ी चोट लगी होगी, दूसरी जगह (भविष्यपुराण ५६ अध्याय) लिखा है कि विष्णु महाराज ने भूगु की स्त्री का चक्र से सिर काट डाला, कहिये तो उस समय वह शान्ति विष्णु की कहां को उड़ गई थी जो अवध्य ब्राह्मणी को भी मार डाला और इस ही का यह फल भिला कि अब विष्णु को बराबर अवतार लेना पड़ता है मैं सत्य कहता हूँ कि जब मैं ऐसी ऐसी फालसरिपोर्ट मेरे आफिस में आने लगी तब मैं मेरा दस्तर भी गेन्दा हो गया, मैं सत्य कहता हूँ कि सुके अब इन रिपोर्टों पर तनक भी विश्वास नहीं रहा

है, जो दान धर्म दानपात्र के उपकारार्थ था वह अब दित्यलगी सात्र रह गया है, गोदान केवल इस वास्ते या कि वेदाभ्यासी ब्रह्मचारी के निष्पत्त शरीर में शक्ति का रुंचार हो परन्तु स्वार्थान्य लोगों ने सुवर्ण धेनु हीरे के दांत लगा के (भविष्य पु० उत्तरार्द्ध १३७ अध्याय भवि० उ० १३८ अध्याय भवि० उ० १६० अध्याय) दान करना लिखा है । फिर उस से भी बढ़ के रत्नधेनु के दान का माहात्म्य लिखा है यदि वास्तव में सुवर्णधेनु को गौही समझा जाता है तो उस के अङ्ग प्रत्यङ्ग को बेच कर खाना क्या महापाप नहीं है ? और आश्वर्य सुनिये सुअर का भी दान करना लिखा है आर्थित् तिलका सुअर बना के दान करें इस दान का ऐसा माहात्म्य लिखा है कि इस दान का करने वाला अपने पुत्र कलत्र और मित्रों सहित स्वर्ग को चला जाय सोचिये तो सही कि जो मनुष्य असली सुअर का दान करें वह तो स्वर्ग से भी १० हाथ जंचा चला जाय ।

तीर्थों के माहात्म्यों का जहां वर्णन किया है वहां तो हास्यरस का अन्त ही कर दिया है सैने स्वयम् अपने नेत्रों से देखा है कि प्रयागराज के माहात्म्य में लिखा है कि जो मनुष्य ऊपर को पैर और नीचं को सिर दरके गंगा और यमुना के संगम में आचमन करे तो १००००० वर्ष तक स्वर्ग में सुख भीगे (देखो कूर्मपुराण) महाशय वृद्ध ! मैं कहां तक कहूं इन फालत् रिपोर्टों में देवतों की ऐसी बुराई लिखी है कि जिन को उन्ते भी हंसी आती

है गणेश को लम्बोदर और हाथी के सिर युक्त लिख दे
फिर चुहे की सवारी लिखदी है भला कहिये तो हाथी
की सवारी चुही क्यों कर हो सकती है ?

प्रियदेववृन्द ! आज कल जो भारतवासियों पर
स्वार्थी जनों ने टैक्स लगा रखे हैं उन के विषय में मैं
केवल एक दृष्टान्त देकेअपने व्याख्यान को समाप्त करूँगा ॥

दृष्टान्त यह है कि एक उजबक नगर नामक शहर
में एक गवर गणडसिंह नामक राजा था, वह राजा अप-
ने नाम के अनुसार ऐसा सूख और आलसी था कि उस
के अमले और प्यादे मन माने कार्य करते थे परन्तु वह
इतना भी नहीं जानता था कि मेरे राज्य में कितने
ग्राम हैं और उन का शासन कौन करता है, एक दिन
उस की राजधानी में किसी और राज्य का एक मनुष्य
घीव वेचने को आया परन्तु बाजार तक जाते जाते उ-
स का सम्पूर्ण घीव कर अर्थात् ड्युटी (महसूल) में ही
उड़गया कहीं राजा का कर, कहीं युवराज का कर, कहीं
रानी का कर कहीं राजभाता का कर कहीं राज-
भाता का कर, कहीं मन्त्री और कहीं उपमंत्री आदि
का करलेते जब उस व्यापारी के कपडे तक भी सिपाहियों
ने छीन लिये तब वह रोता हुआ राजा के पास गया पर-
न्तु राजा ने उस को धक्के देके निकलवा दिया तब उ-
सने समझा कि इसराज्य में अन्धेर है अतएव मैं भी अ-
पना कार्य सिद्ध कर सकता हूँ बस वह भी इमरान के पास
जा बैठा और जो मुर्दा उधर आवे उस के ही साथियों

से कहे कि हमारा १) ८० राज करके नाम से पहिले दे
दो तब प्रेत की क्रिया करो जब उससे कोई पूँछे कि तुम
कौन हो तब ही वह कह दे कि हम राणी के साले हैं,
अनेक वर्षों तक वह इस ही रीति से कर लेता रहा, कुछ
काल के अनन्तर गवरगण्ड सिंह राजा की साता भी मर्द
और स्थयम् राजा साहिब इमशान में गये और राणी के
साले का नाम सुन के बहुत चकित हुए, जब १) ८० उ-
स का कर देके आगे बढ़े तब अवसर पाके राणी साहि-
दा ने राजा से पूँछा कि आप ने किस को कर दिया आप
तो स्थयम् राजा हैं राजा ने कहा कि यह राणी के साले
का कर दिया जाता है; राणी ने हंस के कहा
कि स्त्रियों के साले नहीं होते हैं आप समझ के बात
कीजिये, राजा ने क्रोध के साथ उत्तर दिया कि इस
बात को हम भी जानते हैं कि स्त्रियों के साले नहीं होते
परन्तु सनातन धर्म की रीति को मेटना भी तो पाप है
देवबृन्द ! आज कल दान की भी यही दुर्दशा जगत् में
हो रही है, कोई मृत्युज्ञय के जप से अमर होना चाहता
है कोई शनैश्चर और केतु के मुजावर को घोड़ा सा लोहा
वा तिल उड़ा देके शरीर को अजर और निरोग बनाना
चाहता है कोई दो चार ८० की चान्दी दे के अपने
कर्म फल को उच्छृंन करके ईश्वर के नियम को भड़ा-
करने की चेष्टा कर रहा है, मुक्ति के विषय में भी संसा-
री जनों की यही दशा है जिन लोगों ने रिश्वत लेने के
जन्म भर शराब खोरी और सीने जोरी की है वह भी

ईसामसीह की शरण में आके मुक्ति को मुंह बाय रहेहैं
ऐसे ही खुदा के मखलूक के खाल में मिला के और मुह-
म्मद के मोहताज बनके नजात पाने को उत्सुक होरहे हैं
परन्तु परमेश्वर पर भी विष्वास नहीं है और न मुकम्मर्म
का भरीसा है सुतराम् हम लोगों को अब ऐसा उद्योग
करना चाहिये जिससे जगत् में ईश्वर की भक्ति बढ़े और
मनुष्यों की श्रद्धा सत्य धर्म में बढ़े यदि अब भी हम
लोग आलश्य करेंगे तो जगत् में नास्तिक और आस्तिका-
भासों का ही प्रस्ताव फैल जायगा, और सत्य धर्म नाममात्र
को भी नरहेगा, मैं चाहता हूं कि आप की सभा में सब
लोग स्वतन्त्र भाव से अपनी २ राय प्रकाशित करें ।

सभापति के अवस्थानानन्दर देवर्षि नारद खड़े हो
के कहने लगे चूंकि पुराण वालों ने मेरी असीम निन्दा
की है लिहाजा में प्रस्ताव करता हूं कि पुराण (ब्रह्मवै-
वर्तादि) और मेरे नाम को कलहित करने वाले नारद
पंचरात्रादि पुस्तक रटी खाने में फेंक दिये जायं मैं शपथ
पूर्ण कहता हूं कि मैंने उन पुस्तकों की हर्मिज नहीं ब-
नाया भला मुझे क्या ज़रूरत थी कि मैं घट्कोपी मत
का प्रतिपादन और शैवादिमतों का खण्डन करता
न मैं रिश्वतखोर हूं कि होम आदि नीचों से कुछ धन
ले के किसी आधुनिक पुस्तक पर अपनी मुहर कर देता
देवीभागवत् के बनाने वाले ने जो अकारण मुझ पर
दोष लगाये हैं वह अवश्य ही आप लोगों ने सुने हैंगे

(दै० भा० स्कन्द ६ श्र० २८, २९, व ३०) देखिये तो मुझे विष्णु ने कैसा धीखा दिया कि सेरे कपड़े लज्जे और बीन आदि ले के भाग गये और मैं तलाव में स्नान करता ही रह गया जब मैं तलाव में से निकला तब ज्वी हो गया फिर राजा तालध्वज से मेरा विवाह हुआ देखिये तो क्या लाल बुक्कङ्गड़ी कथा है ? देवी भागवत् वाले को मेरी इतनी ही निन्दा करने से सन्तोष नहीं हुआ बल्कि और भी अपूर्व कथा लिख डाली, उस में तो भुजं वन्दर ही बना दिया है, उस में भी राजा सञ्जय का कन्या से मेरा विवाह करा दिया है औचिये तो सही कि मैं देवर्षि हो के मानुषी से विवाह क्यों करता ।

देववृन्द ! आप लोगों ने यह न सुना होगा कि इनारे सभापति देवराज भी एक बार बैल बने थे (दै० भा० स्क० ७ श्र० ९) राजा ककुत्स्थ जब देवतों की प्रार्थना को सुन के दैत्यों से लड़ने को चले तब उन्होंने कहा कि यदि इन्द्र हमारे बाहन बने तो हम दैत्यों से लड़ें भला, कहिये तो कितनी गाली है कि जिन्हें महाराज का विष्णु आदि सब ही राजा मानते हैं उन को ही बैल लिख दिया और मुझे तो पुराणवालों ने डाक का थैला और लड़ाई कराने का औजार व चुंग-लस्त्र नियत कर दिया से इस प्रारण में प्रस्ताव करता हूँ कि पुराणों को मनसूख कर दिया जाय ।

इस प्रस्ताव को महर्षि पराशरने अनुमोदन करते

समय कहा कि वेशक पुराणों को मन्मूखकर देना चाहिये क्योंकि इन पुराणों में हजारों बातें असम्भव लिखी हैं मेरे परिवार को और मुझे जैसे वाहियात दीष पुराणावालों ने लगाये हैं उन को मैं किर वर्णन करूँगा किन्तु अब एक ऐसी गाथा का वर्णन करता हूँ जिस को सुन के आप सब लोगकई दिन तक हँसते रहेंगे। देवी भागवत मममस्कन्ध ९ अथाय में लिखा है कि राजा यौवनाश्वके १०० स्त्री धीं परन्तु पुत्र द्विषी के नहीं या इस से राजा को अत्यन्त चिन्ता रहती थी, इस ही चिन्ता से व्याकुल हो के राजा यौवनाश्व बन को चले गये और वहाँ अनेक महर्षियों से कहा कि मेरे दम्पति नहीं है अतएव आप लोग ऐसीं यत दीजिये जिस से मेरे पुत्र हो, ऋषियों ने सन्तान प्राप्ति के दास्ते यज्ञ आरम्भ किया, ऋषियों ने जो मन्त्रों से अभिसन्त्रित कर के जल से पूर्णघट स्थापन किया या वह इस अभिप्राय से था कि जो नारी इस भूल को यान करे उस के अवश्य ही पुत्र हो, एक दिन रात्रि में राजा यौवनाश्व को बहुत ध्यास लगी और उन्होंने उस ही यज्ञकलश के जल को भूल से पी लिया प्रातःकाल जब यज्ञकर्ता ब्राह्मणों ने कलश को खाली देखा तो राजा से पूँछा कि वह जल कहां गया तब राजा ने कहा कि वह ज... मैं ने पोलिया इस बात को सुन के सब ने कहा कि तुम्हारे अवश्य पुत्र होगा उस जल के प्रताप से राजा के गर्भ रहा, जब १० महीने

पूरे हुए तब राजा यौवनाश्व के पेट को चीर के बालक निकाला गया, तब राजा के मन्त्री ने कहा “कन्धाता,” यह बालक किस का दूध पीयेगा, तब ही देवराज इन्ड ने आके कहा कि “मान्धाता” मेरा दूध पियेगा इस ही कारण उसका नाम मान्धाता रक्खा गया, देववृन्द ! कहिये यह कथा क्या इस पहेली को चरितार्थ नहीं करती है कि ।

मास कुंबारी बहू पेट से ननद पंजीरी खाय ।

देखन बाली लड़का जन्मे बांझिन दूध पिलाय ॥

क्या यह जाफर जट्ठी का किस्सा नहीं है भला विचारिये तो कि जिस गर्भाशय को मनुष्यों के पेट में देश्वर ने ही नहीं रचा उस को मन्त्र के पानी ने क्यों कर बना दिया ? यदि अभिमन्त्रित पानी में यह शक्ति थी तो राजा के स्तनों में दूध क्यों नहीं उत्पन्न करदिया वास्तव में इन लाल बुझकड़ी कथाओं ने देव भाषा को और वेदों को छढ़ा ही बदनाम कर रखा है ॥

देववृन्द ! इन पुराणों ने मेरे दादा वशिष्ठ से ही हमारे कुल को कन्धाङ्कित करना आरम्भ किया है लिखा है कि वशिष्ठ विश्वामित्र से लड़ने को बगुला बन गये और लिखा है कि उन्होंने ऐसी ईर्षा करी कि अपने मौपुन्नों को भरवा के तब विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि कहा फिर मेरा माता के गर्भ में बेद पाठ करना लिखा है क्या यह सम्भव है कि कोई मनुष्य गर्भ में सुख खोल सके ? यदि गर्भ में मुंह खुल जाय तो माता के गर्भ के

मल वालक के मुख में भर जायं, ईश्वर ने अर्भस्य वालक की पुष्टि के द्वारा स्ते यही नियम कर दिया है कि वालक का मुख बन्द रहे और नाभी की नाल के द्वारा जाता के भक्षण किये अन्नादि का रस वालक के उदर में जाय, अस्तु अब एक और अद्भुत बात सुनिये कि मैं परम धर्मज्ञ और वेदज्ञ होके भी अविवाहित मत्स्यगन्धा पर मोहित हो गया (देवी भागवत द्वितीय स्कन्ध द्वितीय अध्याय) और अपनी कामवृत्ति को दिन ही में चरितार्थ करने को मैंने कुहिरा उत्पन्न किया आप सब जानते हैं कि कुहिरे का नाम वेदों में भी लिखा है (नौहारेण प्रावृत्ता उक्थशाश्वरत्ति) इस के अतिरिक्त कुहिरा केवल उस वाष्प का नाम है जो सूर्य की किरणों के द्वारा पृथिवी से आकाश को जाती है और जब से सूर्य तथा पृथिवी और जल बने हैं तब से ही कुहिरा भी बना है भला मैं उस को क्यों कर बनाता फिर मेरे उन्न से भी पूर्व की अनेक कथाओं में भी कुहिरे का नाम आता है जिस मत्स्यगन्धा से मेरे व्यभिचार की कथा लिखी है अब उसके जन्म का अद्भुत हाल सुनिये, जिस को सुन के आप लोगों की भी बुढ़ि चकरा जायगी देवी भागवत के प्रथम स्कन्ध की प्रथम अध्याय में ही यह अमरभव कथा लिखी है कि राजा उपरिचर की गिरिका नाम्नी भार्या जिस दिन ऋतुस्नाता थी उस दिन उप-

रिचर के पिता ने उन्हें शिकार खेलने के वास्ते बन की जाने की आज्ञा दी, राजा उपरिचर पिता की आज्ञा को परम धर्म समझ के बन को गये परन्तु उन को अपनी ऋतुस्नाता भारी का स्मरण रहा इस कारण बन में उन का वीर्य स्वल्पित हुआ, राजा ने उस वीर्य को बटपत्र के दौने में रख के अपने एक बाज से कहा कि इस वीर्य को भेरी स्त्री के पास लेजावो इस से अवश्य पुत्र उत्पन्न होगा, उपरिचर के बाज ने जब उस वीर्य युक्त दौने को सेके आकाश मार्ग से गमन किया तब और बाजों ने सनझा कि यह मांस लिये जाता है तब और बाज उस से छीनने को आये इस कारण बाजों में खूब यहु हुआ वह दोना यमुना जी में गिरगया, उस दौने के वीर्य को एक मचरी (आद्रिका जो श्राप से मचरी हो गई थी) खा गई उस को एक मछुआ ने पकड़ के चीरा तो उस के पेट से एक पुत्र और एक कन्या उत्पन्न हुए, मछुआ उन दोनों बालकों को राजा उपरिचर के पास ले गया, राजा उपरिचर ने लड़के को अपने हूप का देख के ले लिया और कन्या को उम ही मछुए को दे दिया, वही मचरी के पेट का लड़का राजमत्स्य हुआ और कन्या व्याम की माता भत्यवती हुई, कहिये आप लोगों ने कभी ऐसी लाल बञ्ज़कड़ी कदा तुनी धौ क्या अशिवनीकुमार और धन्वन्तरि का यह कहना मिथ्या है कि बाज के अनेक प्रत्यक्ष माता के जै

बनते हैं, यदि मान भी लिया जाय कि राजा उपरिच-
रका वीर्य अमोघ था तो उसमें रज किस का और क्यों
कर मिला ? यदि, कहा जाय कि मद्धरी का रज भिलगया
होगा तौ भी अयुक्त है क्योंकि जिनके अरणे उत्पन्न होते
हैं उन के गर्भाशय में उस प्रकार का रज नहीं होता जैसे
जरायुज स्त्रियों के होता है । इस के अतिरिक्त अगड़न
स्त्रियों का गर्भाशय भी भिन्न रीति का होता है वह म-
नुष्य के वा गधे के वीर्य को धारणा नहीं करसकता है,
चिकित्सा शास्त्र में जो शरीर को रचना का वर्णन लिखा
है उस के देखने ने स्पष्ट जान पड़ता है कि मुख के मारे
से गर्भ में गया वीर्य स्त्री के उस स्थान में नहीं पहुंच
सकता है जहां पहुंचने से गर्भाधान होता है ।

खैर हमारी तो हुर्दशा की ही थी परन्तु व्यास की
भी वह दुदंशा की है जिस को सुन के भट्टजन अशान्त
हो जाते हैं, व्यास को दासी पुत्र लिख के फिर लिखा है
कि उन्होंने १०० वर्ष शिव की आराधना करके पुत्र होने
का वर पाया, परन्तु व्यास के घर खी तो थी ही नहीं
जो पुत्र होता एक दिन प्रातःकाल व्यास जी अग्निहोत्र
करने के बास्ते अग्नि उत्पन्न करने को अरणी समय रहे थे
उस ही समय घृताची अप्सरा उधर आ निकली, उते देख
कर व्यास जी को भासातुर हुए परन्तु मन में व्यभिचार दर्श
से डरे और मन में कुछ चिन्ता करने लगे, व्यास सुनि को
चिन्तातुर देख के घृताची भी घबड़ाई और भय से शुकी

गुरु विरचनन्द ८०
 मन्दर्भ चुम्पत्तकाल्य
 पु. प्रग्निहाण नमांक .. २४९९
 द्वयानन्द महिला मता अवलोकन, बुद्धिमत्त
 २४ स्वर्ग में महासभा ॥

(शुग्गी, सोती) बन के भागी व्यास जी शुकी को देख-
 कर अत्यन्त विस्मित हुये और अप्सरा का ध्यान करने
 लगे तब उनका वीर्य अरणी पर पतित हुआ और उस
 से ही शुकदेव (लकड़ी) से उत्पन्न होगये, देवबृन्द ! वि-
 दार (देवी भागवत प्रथमशताब्द्य अध्याय १४) कर देखिये
 कि इस महालाल बुझकड़ी कथा में कैसो गप्प मारी है
 कि लकड़ी से ही पुत्र उत्पन्न होगया, एक और भी सुझे
 आश्वर्य है कि जिस श्रीमद्भागवत को पौराणिक लोग पु-
 राणों का शिरोनशि मानते हैं उम में शुकदेव का विवा-
 हादि कुछ नहीं लिखा परन्तु हजारों ब्राह्मण अपने को
 वशिष्ठ गोत्री बतलाते हैं जब कि शुकदेव का वंश ही नहीं
 चला और व्यास के भी दूसरी सन्तान नहीं थी तब जगत्
 में वशिष्ठ का गोत्र कहां से आया ! क्या विना भाता
 पिता के भी पुराण बाले किसी की उत्पत्ति कलियुग में
 मानने लगे हैं परन्तु देवी भागवत में शुकदेव का विवाह
 पीवरी स्त्री के साथ लिखा है और उस से कृष्ण, गौरप्रभ
 भूरि तथा देवश्रुत नामक ४ पुत्रों की उत्पत्ति लिखी है
 हम नहीं जानते कि पुराणों में परस्पर क्यों विरोध है ?
 पुराण बालों ने हमारे वंश पर एक तो कृष्ण की है कि
 शुकदेव को कोई दोष नहीं लगाया, परन्तु „जब फैसे दादा
 तो किस गिनती में किर पोते रहे“ इस कहावत के अ-
 नुसार कुल भर को ही हमारे कलाङ्कित बना दिया है ।

सभ्य महाशयो ! मैंने आप लोगों को बहुत देर तक
 कष्ट दिया, परन्तु अब मैं केवल एक बात कहकै अपने

आत्माने को समाप्त करने गए आजकल के सन्यासी अपनी शुरु परम्परा में कहते हैं ।

नारायणं पद्मभवं चशिष्टम्, शक्तिं च तत्पुत्रपराशरंच,
व्यासं शुकङ्कौडपादं महाबतं, गोविन्दयोगीन्द्रमथास्यशिष्यम्
श्रीशङ्कराचार्यमथास्यपद्म, पादं च हस्तामलकं चशिष्य-
न्तन्तोटकं वार्त्तिककारमन्या, नस्मद्गुहन्सन्ततमानतोस्मि

कि शुकदेव के शिष्य गौडपादाचार्य, गौडपाद के शिष्य गोविन्दाचार्य गोविन्दाचार्य के शिष्य श्री शङ्क-
राचार्य हुए परन्तु इन सब के समय को मिलाने से यह
बात सत्य नहीं जालूम होती क्योंकि शुकदेव का स्वर्गवा-
स पारदृष्टों के जन्म से भी ५० सौ वर्ष पूर्व ही हो चुका
था और गोविन्दाचार्य तथा शङ्कराचार्य का जन्म बुद्ध-
देव के समय से सैकड़ों वर्ष पश्चात् हुआ था तब गौडपा-
दाचार्य का शुकदेव के समय में होना क्योंकि सिंह ही
सका है ? गौडपादाचार्य की कलियुग में भी कई सहस्र
वर्ष की अवस्था का होना वेदों से तो विरुद्ध ही है
किन्तु कलियुग के राज्य में पुराणों से भी नियिद्ध है ।

महर्षि पराशर के स्पीच को बढ़ता हुआ देख कर
श्रीमान् सभापति खड़े होके कहने लगे कि महर्षे ! परा-
शर ! आप को यह अधिकार नहीं है कि आप सन्या-
सियों के विषय में भी कुछ कहें क्योंकि इस विषय में
दक्षताव्रेय तथा शंकराचार्य स्वयम् वर्णन करने को उप-

स्थित हैं। मेरी समसति में अब पञ्चदेवों में से किसीको अपनी समसति प्रकाशित करनी चाहिये।

सभापति की बात को सुनके स्वयम् भगवान् विष्णु हंसते हंसते खड़े हुए और इस प्रकार से कहने लगे, स-भ्यवृन्द ! इस नहती सभा में जो कुछ मैं कहूँगा उसे आप लोग दिक् प्रदर्शन वा नमूना मात्र समझियेगा क्योंकि संसार के कृतज्ञ लोगों ने मुझे एक काठ का पुतला स-मक्क रखा है और मेरे नाम से स्वयम् विषय भोग करते लज्जित नहीं होते, भला यह कौन इन्साफ की बात है कि जिस को उपास्य देव वा देवी समझे उसको ही रास में नचावें, फिर मेरे नाम से मन्दिरों में वेश्याओं को नचावें और व्यभिचार करें, अपनी अपनी हठ को पूरी करने के बास्ते विषयी लोगोंने मुझे बदनाम कर रखा है, कोई कहता है कि विष्णु गोलोक में रहते हैं और गोलोक में सिवाय विष्णु के सर्वपूर्ण स्त्रियां रहती हैं, कोई कहता है कि विष्णु दैत्यों को मारने के बास्ते स-दैद अवतार लिया करते हैं जिन मनुष्यों को वह मेरा अवतार बतलाते हैं उन महात्माओं के जीवनचरित्रोंको सृष्टिकर्ता विरहु बातों से भर देते हैं, खैर अवतारों की कथाओं को मैं फिर कहूँगा, प्रथम अपनी ही दुर्दशाको मुनाता हूँ, सब ही लोग मुझे मधुसूदन और कैटभारि कहते हैं परन्तु मधुकैटभ के मारने के समय न मालूम मुझे किस २ का उपासक पुराणादालों ने बना दिया है।

गणेश पुराण के १७ और १८ अध्याय में लिखा है कि जब मैं सधु और कैटभ नामक दैत्यों से लड़ता लड़ता थक गया और वह न सरे तब मैंने गन्धर्व का रूप धारण किया मैंने जो बन में जाके बीन बजाई और गाया उस से शिव सहाराज बड़े प्रसन्न हुए और अपने दूतके द्वारा मुझे अपने पास बुलाया और मेरे गाने को सुन के बड़े प्रसन्न होके बर देने को तैयार हुए मुझ से तब सधुकैटभ की कथा को सुनके शिव सहाराज बोले कि तुमने गणेश की पूजा नहीं की थी इस से ही तुम्हारा विजय नहीं हुआ अब मैं तुम को गणेश का मन्त्र बताता हूँ उस को जपने से गणेश तुम पर प्रसन्न होंगे और उस से ही तुम को विजय प्राप्त होगा, शिव ने यह भी कहा कि गणेश के १०००००००० मन्त्र हैं, मैं उन में से पठकर मन्त्र तुम को उपदेश करता हूँ, मैंने शिव से उस मन्त्र को ग्रहण करके १०० वर्ष तक जपा तब गणेश जी ने प्रत्यक्ष होके दर्शन दिये, देखिये तो यह गणेश जी और शिव जी कैसे धोखे बाज़ हैं कि जब मेरे गीत सुनने को शिव जी ने मुझे अपने पास बुलाया था उस समय गणेश जी वहीं भौजूद थे परन्तु वहां पर उन से वर न दिया गया फिर जो गणेश जी मेरे ऊपर मेहरानी करने को १०० वर्ष के बाद आये थे उन के रूप का तेज ३०००००००० सूर्यों के समान लिखा है भला विवारिये तो सही कि एक सूर्य के उत्ताप से तो जगत् भर उत्तस रहता है परन्तु तीन करोड़ सूर्य

के समान तेज वाले गणेश से मैं भी न जला और न मधु
कैटभ जले, गणेश पुराण में तो यह लिखा है और मा-
क्षरण्डेय पुराण तथा देवी भागवत में लिखा है कि देवी
की कृपा से मैंने मधुकैटभ को मारा, हाँ एक बात तो मैं
भूल ही गया जिन गणेश जी का मंत्र मुझे १०० वर्ष
तक जपना पड़ा था वा यां कहाह्ये कि जिनकी उपासना
से मुझे सिद्धि मिली थी, वह गणेश जी कौन है ! दे-
ववृन्द ! वह गणेश जी भी पार्वती के शरीर के भैल से
उत्पन्न हुए थे, लिखा है कि एक समय पार्वती जी महा-
देव से रुप होके दूसरे वन में चली गई थीं, उन्होंने वन
में जाके अपनी रक्षा के बास्ते अपने शरीर के भैल से
एक मनुष्याकार पुतला बनाया और उसे सजीव करके
द्वार पर बिठला दिया, जब महादेव अपने गणों
के सहित पार्वती को ढूँढ़ते हुये वहाँ आये और भी-
तर जाने लगे तब गणेश ने उन को रोका इस कारण
परस्पर घीर संग्राम हुआ उस संग्राम में महादेव ने ग-
णेश का सिर काट डाला इस बात को देख कर पार्वती
जी बड़ी चिन्तायुक्त हुई और शिव महाराज से कहने
लगीं कि इस को जिला दो अन्यथा मैं भी ग्राण त्याग
दूँगी इस हठको सुन के शिव महाराज ने अपने दूतोंको
द्वधर उधर भेज के गणेशके सिर को तलाश कराया पर-
न्तु गणेश के सिर को प्रथम ही देवता लोग उठाके ले
गये थे और चन्द्रलोक में रखा था अतएव महादेव के

दूस एक हाथी के बच्चे को और उस की माता को आचेल सोया हुआ देख के उस बच्चे के सिर को काट लाये शिव महाराज ने उस ही हाथी के बच्चे के सिर को गणेश के कब्ज्य पर रख दिया और उसे जिला दिया देखिये देववृन्द ! कैसी शत्रुक्रिया है कि दूसरे के सिर को धड़ पर रख के छू मंतर किया और फट से वह जी गया यदि कहा जाय कि शिव महाराज सर्वशक्तिमान् थे तो क्यों नहीं विना सिर के ही गणेश को जिलाया ? ।

ऐसी हास्यास्पद कथा कुछ गणेश के ही विषय में नहीं लिखी वरन् भुझे भी देवतों ने एक बार ऐसे छू मंत्र से जिलाया था, महाशय ! इस बात को मैं पारसाल की सब्जेक्ट कमीटी में बयान कर चुका हूँ अब एक बात और सुनिये, जिस गहड़ जी को मेरा वाहन बताते हैं उस से ही मेरा घोर युद्ध भी लिख दिया है यह कहा नी ऐसी अद्भुत रीति से लिखी है कि जिस को सुनते ही हँसी आती है, लिखा है कि कश्यप को स्त्री कदु (सर्पों की माता) और विनता गहड़ की माता में एक दिन सूर्य के घोड़े के विषय में विवाद हुआ कदु कहती थी कि सूर्य के रथ में जो घोड़े जुते हैं वह काले हैं और गहड़ की माता उन को सफेद बतलाती थी, सर्प अपनी माता को सच्ची चिठ्ठ करने के बास्ते सूर्य के घोड़े के शरीर में जा लिपटे इस से वह घोड़े काले नालूम होने लगे, जब विनता शपथ के अनुसार कदु की दासी हो ग-

ई तब दासी भाव के सब कार्य करने लगी, एक दिन गरुड़ ने अपनी माता से पूछा कि तुम इस के घर दासी का काम क्यों किया करती हो ? गरुड़ की माता ने प्रथम की सब कथा कह सुनाई, गरुड़ ने उस कथा को सुन के पूछा कि कोई ऐसा कार्य है जिस के करने से तुम्हारा दासीपन छूट जाय, गरुड़ की माता ने अपनी सौति न से पूढ़ के गरुड़ से कहा कि यदि तुम अमृत लाके सपों को पिलाओ तो मैं दासीपन में मुक्त हो जाऊं इस बात को सुन के गरुड़ जी अमृत लाने के बास्ते चले, मार्ग में अपने पिता के दर्शन की उन को अदूर हुई तब वह अपने पिता के पास गये और दण्डवत् प्रणाम करके उन से कहा कि पिता ! मुझे क्षुधा ने बहुत सताया है, आप मुझे बताइये कि मैं क्या खाऊं गरुड़ के पिता ने कहा कि एक द्वीप में शूद्र ही बसते हैं तुम उन सब को खाजाओ, परन्तु खबरदार किसी ब्राह्मण को भत खाना गरुड़ ने अपने पिता से पूछा कि मैं ब्राह्मण को क्योंकर पहिचानूंगा उस के पिता ने कहा कि जो भनुष्य तेरे पेट में न गले उसे ही तुम ब्राह्मण समझना गरुड़ उस द्वीप में गये और सम्पूर्ण द्वीपवासियों को चोंचमें भरके निगलने लगे उन में ही एक ब्राह्मण भी था वह गरुड़ के पेट में तो चला गया परन्तु पेट में जब न गला तब पेट में घोड़ासा उछलने लगा, तब गरुड़ ने उससे पूछा कि तू कौन है जो मेरे पेट में नहीं गलता है ? उसने पेट में से

ही उत्तर दिया कि ब्राह्मण गूँ गरुड़ ने उससे कहा कि तुम फौरन मेरे पेट से निकल आओ! ब्राह्मण ने कहा कि मैंने जिस कहारिन को अपनी भाईया बना के रखा था उस को भी आप निकाल दीजिये तब मैं निकलूँगा, गरुड़ ने तथास्तु कह के दोनों को पेट से निकलने की आज्ञा दी इस आज्ञा को पाते ही वह ब्राह्मण कहारिन के सहित पेट से निकल आया गरुड़ वहां से पेट भरके जब चले तब एक ऐसे बट वृक्ष पर बैठे कि जो कई योजन का था गरुड़ के बैठने से उस वृक्ष की शाखायें टूट पड़ीं और उस ही शाखा पर कई हजार बालखिल्या ऋषि तप करते थे यदि गरुड़ जी उस शाखा को छोड़ देते तो वह सब ऋषि दब के मर जाते, इस लिये गरुड़ जी उस शाखा को अपने पंखों में ढाका के उड़े और बहुत दिन तक उड़ते ही फिरते रहे फिर अपने पिता से पूछा कि इन को मैं कहां रखूँ, कश्यप ऋषि ने कहा कि इन को अमुक पर्वत पर जाके रख दो, खैर उन को रख के गरुड़ जी अमृत लेने को चले जब स्वर्ग में पहुँचे तब अमृतकुण्ड के रख-बालों से और गरुड़ से भयानक युद्ध हुआ, फिर उन के हार जाने पर समस्त इन्द्रादि देवता गरुड़ से लड़ने को आये जब वह भी हार गये तब मुझ को सब ने बुलाया और मैं भी गरुड़ से लड़ने लगा, जब लड़ते २ मैं भी यका तब गरुड़ ने प्रसन्न होके कहा कि हे विष्णु! मैं तुम से बड़ा प्रसन्न हुआ मुझ से ईंटितवर जांगो, मैं ने गरुड़ से यही

वर जांगा । कि तुम मेरे धाहन बनो (इत्यादि) देखिये !
देववृन्द कौसी असम्भव कथा है श्या हम लोग छल से किसी
को अपने वश में धरते हैं ? जब कि मुझे पुराण वाले
सर्वशक्तिमान् जानते हैं तो फिर ऐसे ऐसे ढकोसलों से मुझे
शक्तिहीन क्यों सिद्ध करते हैं ? मेरे अवतारों में से जिस
कृष्ण के पूर्णवतार जानते हैं उस के विषय में जो २ अस-
म्भव और अक्षील कथा लिखी हैं उन का आप लोगों के
सन्मुख वर्णन करना केवल समय का नष्ट करना मात्र है
तौ भी दो अपूर्व कथाओं को मैं अवश्य यहां वर्णन करूँगा
आप लोगों ने सुना होगा कि कृष्ण के बड़े भाई बलराम से
रेवती का विवाह हुआ था, यह रेवती महाराज रैवत
की कन्या थीं, इस कन्या को अत्यन्त दृपदी और गुण-
वती देख के उसके समान वर की जिज्ञासा करने को महा-
राजा रैवत अपनी कन्या के सहित ब्रह्मा के पास ब्रह्म-
लोक में गये, ब्रह्मा के पास उस समय एक और मामला
पेश था इस कारण राजा रैवत वहां बैठ गये और ब्रह्मा
से विनय करने को अवसर की प्रतीक्षा करने लगे, जब
अवसर मिला तब राजा ने ब्रह्मा जी से सुधोग्य वर की
जिज्ञासा की ब्रह्मा जी ने हंसके उत्तर दिया कि राजन् !
जितनी देर तुम यहां बैठे रहे उतनी देर में मृत्युलोक
में अनेक युग बीत गये इस कारण तुम्हारे दंश में अब
कोई भी नहीं रहा है, अब तुम शीघ्र चले जाओ और
इस कन्या का यदुवंशीय बलराम से विवाह कर दो ब्रह्मा

की आज्ञा ले राजा रेवत मृत्युलोक में आये और बल-
राम से रेवती का विवाह कर दिया, क्यों महाशय !
रेवती का शरीर क्या पार्श्व परमाणुओं का नहीं था ?
जो उस का मृत्यु ने न घेरा, यदि यही बात थी तो अब
तक क्यों न जीवित रही ? यदि यही कहिये कि ब्रह्मलोक
में चले जाने से मृत्यु न हुई तो विना शरीर त्याग किये
ब्रह्मलोक में जाना ही क्योंकर सम्भव है ? सत्य तो यह
है कि लाल बुझक्कड़ों ने दूसरी कथा मुच्कुन्द की भी ऐसी
ही रची है कि राजा मुच्कुन्द देवतों को दैत्यों से बचाने
के निमित्त स्वर्ग में गये परन्तु यहां उन का कुल क्षय हो
गया, यदि यह दोनों कथा सत्य होती तो महाराजा
दुष्यन्त जब इन्द्र को सहायता देने स्वर्ग में आये थे तब
मृत्युलोक में उन की खीं शकुन्तला और उन का पुत्र
भरत क्यों जीता रहा था, क्या उन के बास्ते मृत्यु का
दूसरा नियम था, और महाराजा रेवत तथा मुच्कुन्द के
बास्ते दूसरा नियम था ॥

देववन्द ! इन कथाओं से ही चिदु होता है कि मेरे
अवतारों के विषय में भा सब मिथ्या कथा लिखी हैं ।
अवतार लेने के जो कारण पुराणबालों ने लिख हैं वह
भी हास्यास्पद ही हैं, भला सोचिये तो कि जरा से बल
बाले क्षम को मारने के बास्ते यदि मुझे स्वयं अवतार
लेने की ज़रूरत होती तो जिस जगत् में कंस सर्वेषां
रोहों बलवान् भरे हैं उस को प्रस्तय करने के बास्ते तो

मुझ में शक्ति ही सिद्ध न होगी, फिर अवतारों का भी ठिकाना नहीं है कि कितने हुये क्योंकि गोकुलिये गोसाई सब अपने को विष्णु का अवतार ही समझते हैं, एक और भी आश्चर्य की बात है कि श्रीमद्भागवत में कृष्ण को अनेक रथलों में सर्वज्ञ लिखा है और यह भी लिखा है कि कृष्ण ने अपने गुरु सान्तपन के मरे हुए पुत्रों को खा दिया था परन्तु जब उनके पोते अनिस्तु को वाणा-सुर ने अपने घर में कैद कर लिया था तब उन को यह भी न मालूम हुआ कि मेरा पोता कहाँ चला गया, जब नारद ऋषि ने जा के उन को सब गुप्त हाल सुनाया तब उनको मालूम हुआ कि अनिस्तु को वाणासुर की कन्या ने चित्र रेखा के द्वारा मंगा लिया है। न मालूम उस समय कृष्ण की सर्वशक्तिमत्ता और सर्वज्ञता कहाँ को उड़ गई थी, हाँ एक बात और भी कहना मैं भूल गया कि, जब वालक अवस्था में यशोदा ने कृष्ण को मट्टी खाने के अपराध में बांधा था उस समय कृष्ण ने अपने मुख में तीनों लोक दिखा दिये थे, भला कहीं तो मुख था या दुनियां का नक्शा था परन्तु जब दुर्योधन ने कृष्ण को कैद करने का प्रबन्ध किया उस समय सब सिटीपटांग भूल गई, यदि कृष्ण वास्तव में मेरा अवतार वा सर्वज्ञ होते तो अपने प्यारे भानजे अभिमन्यु को यमराज के घर से क्यों न लौटा लाते? असल में न कृष्ण मेरे अवतार थे और न सर्वज्ञ थे।

जिन प्रह्लाद को विष्णु का परम भक्त लिखा है और
जिन को नृसिंह की कृपा से परम विज्ञान प्राप्त होना
एवम् भौह से रहित होना भागवतादि पुराणों में लिखा
है उन का बद्रिकाश्रम में रहने वाले उन नारायण के
साथ (देवी भागवत) घोर युद्ध लिखा है जिन को पुराण
वाले विष्णु का अवतार मानते हैं (भागवत स्कं० १ अ०—
तूद्येधर्मकलासर्गं नरनारायणावृषीभूत्वात्मशमोपेतमक-
रोदृदुश्वरन्तपः) कहिये तो वह प्रह्लाद की नारायण भक्ति
कहाँ को चली गई, फिर जिन नृसिंह जी की सब से अ-
धिक प्रशंसा और भक्ति लिखी है उन के ही विषय में
पुराणों के दादा गुरु आकाश भैरव तन्त्र में लिखा है कि
जब नृसिंह जी का क्रोध किसी प्रकार से शान्त न हुआ
तब देवतों ने शिव महाराज से जाके प्रार्थना की, शिव
जी भी देवतों को अभय दान देके उनके क्रोध का शान्त
करने का उपाय सोचने लगे जब कोई और उपाय न
सूझा तब शिव जी ने शरभशालब पक्षीराज का रूप
धारण किया और नृसिंह जी को पञ्चों में दबा के उड़
गये अनेक वर्षों तक शिवमहाराज नृसिंह को पञ्चों में
दबाये आकाश में फिरते रहे, जब नृसिंह जी थके और
घबड़ाये तब शिव की स्तुतिकी यही स्तुति दारुण सप्तक
नाम से प्रसिद्ध है, इन शरभ जी के रूप को आप लोग
सुनेंगे तो और भी चकित होंगे इन का रूप यों दर्शन
किया गया है ।

चन्द्राकांगित्रिदृष्टिः कुलिशवदनखशंचज्ञात्युग्निष्ठः ।

काली दुर्गा च पक्षी हृदयजठरगौ मैरबोवाडवामिः ॥

अहस्थौव्याधिभृत्यूशरभवरखगञ्जखडवानातिवेगः ।

संहर्त्तासर्वशब्दन् जयतिसशरभः शालवः पद्मिराजः ॥

अब कहिये क्या यह अवतारों के बहाने से मुझे
गाली देना नहीं है ? फिर वामन के नाम से मुझे धोखे
जाज़ और जालसाज़ बनाया है क्या मुझे पुराण वालों
ने पार्श्विय वा पक्षपाती समझ रखा है कि मैं इन्द्र के
वास्ते पहिले छोटा सा रूप बना के जिसां मांगने जाता
और फिर विकट रूप बनाता और विवारे निरपराध
घनि को छल के क्रेद कर देता, क्या मैं अन्यायी हूँ कि
निरपराध को दण्ड देता हूँ फिर पुराण वाले यह भी कहते
हैं कि वामन सदा बलि के द्वार पर पहरा दिया करते
हैं क्या यह सम्भव है कि ईश्वर किसी का पहरेदार हो
सकता है । खेर एक और भी बात मुझे याद आई है जब
कृष्ण महाराज से शात्रव लड़ने को द्वारिका में गया था तब
कृष्ण बलराम को द्वारिका की रक्षा के वास्ते घर पर छोड़ के
आप शात्रव से लड़ने को आये तब घोर घमसान मच गया
कृष्ण को छलने के वास्ते शात्रव ने माया से वसुदेव का सिर
बनाया और कृष्ण को दिखला के कहने लगा कि ले मैं तेरे
पिता का सिर काट लाया उस समय सिर को देख के कृष्ण
महाराज के होश हवास गुम हो गये और रण में भुख भोड़
के रोने लगे, बहुत देर के बाद जब ज्यान आया कि मैं

बलराम को रक्षा के बास्ते छोड़ आया था और बलराम
ऐसे साधारण वीर नहीं हैं जिन को शालव क्षण भर में
जीत लेता, इस से लिङ्गय होता है कि यह दानवी माया
है देखिये तो कृष्ण की सर्वज्ञता को कैसा साफ उड़ा दिया
है यह तो देवीभागवत की बात हुई अब भागवत् का
हाल जुनिये इस—में लिखा है कि जब रुक्मणी के गर्भ
में प्रद्युम्न की उत्पत्ति हुई तब ही शूतिका यह से प्रद्युम्न
को काँई उठा ले गया, श्रीकृष्ण पुत्र के विरह से अत्यन्त
दुर्ली हुए और कई दिन तक रीते फिरते रहे परन्तु वा-
लक का कुछ भी पता न लगा तब नारद ने आ के कृष्ण
को समझाया कि सम्बर दैत्य तुम्हारे पुत्र को उठा के
ले गया है तुम कुछ न त घबड़ाओ वह स्त्री के सहित
तुम ने आ के निलेगा, खैर अन्त में ऐसा ही हुआ कि
प्रद्युम्न सम्बर दैत्य को मार अपनी स्त्री रति के सहित
कई बष पश्चात् श्रीकृष्ण जी के पास आया। पुराण-
वालों से कोई पूछे कि जो श्रीकृष्ण अपने गुरुपुत्रों को
ताने के समय सर्वज्ञ बने थे और जरे हुये गुरुपुत्रों को
यमराज के पास लेने को गये थे वह इतना भी न जान
सके कि मेरे पुत्र को कौन ले गया और न उस को छुड़ा
के लाये, कहां तक कहूँ अवतारों के विषय में शूब ही
लीला रची है, इस के अतिरिक्त मुझे भी खूब ही कलঙ्क
लगाये हैं जप दिजय के विषय में जो कथा लिखी है
वह भी हंसी से भरी हुई है देवगण ! यह त्रया हंसी की

बात नहीं कि जो स्वयं मुक्तिदाता है उस के ही पार्षदों
को राज्य स बना दिया फिर—

“आप गलते पाखिया यजमान भी गाले”।

इस कहावत के अनुसार जय विजय के कारण मुझे
भी मद्दरी और कछुआ बनना पड़ा-फिर हर बार मैं
उन को मुक्ति देता रहा पर वह बराबर जन्म लेते ही
रहे, भ्रात्य ! मैं कहां तक कहूँ या तो आप लोग पु-
राणों को खारिज कीजिये नहीं तो मैं ईश्वरपन से इ-
स्तीफा देता हूँ, विष्णु भगवान् को और भी कुछ कहना
था परन्तु एक ही व्याख्यान में कई दिन व्यतीत हो
जाने के भय से उन का व्याख्यान रोक दिया गया ॥

विष्णु भगवान् के बैठते ही सूर्यनारायण खड़े हुए
और कहने लगे:-

देवदृष्ट ! मुझे आप लोग भलीभांति जानते हैं
कि मैं स्विकर्ता ईश्वर की उस महिमा के प्रकाशित
करनेवाला हूँ जिस से उस की अपूर्व कारीगरी और अ-
सीम विज्ञान का प्राणीमात्र को परिचय मिलता है,
सृष्टि के आरम्भ में ही घरमेश्वर ने मुझे इस अभिप्राय
से निर्माण किया था कि मेरे आकर्षण से अनेक लोक
अपनी सीमा पर स्थित रहें परन्तु पुराणवालों ने मेरी
उत्पत्ति अद्वित प्रकार से लिखी है । लिखा है कि कश्यप
की ली अदिति के गर्भ से मेरी उत्पत्ति हुई भला कहिये
तो कि यदि मैं किसी स्त्री के गर्भ से उत्पन्न होता तो मेरे

जन्म से पूर्व के मनुष्य अर्थात् मेरे माता पिता ही क्यों कर देखते, क्या वह लोग अन्धे थे ? इस ही प्रसङ्ग से मैं यह भी कहे देता हूँ कि पुराणावालों ने मेरे भिन्न वायुदेव को भी ऐसा ही दोष लगाया है, लिखा है कि जब वायु अपनी माता के गर्भ में थे तब इन्द्र उस को माता के गर्भ में घुस गये और वालक के ४३ टुकड़े कर डाले जब वायु की माता को चेत हुआ तब उस ने इन्द्र को आप दिया, क्या यह असम्भव और अश्वील बात नहीं है कि देवराज इन्द्र अपनी विमाता (Step mother) के गर्भ में चले गये ? खैर मेरे विषय में जो पुराणावालों ने लिखा है वह वित्कुल असत्य है, लिखा है कि दुर्वासा ऋषि से कुन्ती ने मन्त्र ले के मुझे मन्त्रबल से अपने पास बुलाया यह कन्या थी मैं ने उस से व्यभिचार की इच्छा प्रकट की जब वह सहमत न हुई तब मैं ने उसे बर दे के प्रसङ्ग किया, कहा कि तेरा कन्यापन नष्ट न होगा और तेरा पुत्र मेरे ही समान तेजस्वी होगा कुन्ती इस बात को सुन के राजी हुई और मैं जनाबिलजब्र के कसूर से बरी हुआ भगर (Rape case) कन्यात्व नष्ट का दोष तो मेरे कपर लग ही गया खैर ! कुन्ती के गर्भस्थापन कर मैं फिर आकाश में जा चमका और १० मास के पश्चात् कुन्ती के पुत्र उत्पन्न हुआ इस पुत्र की उत्पत्ति भी विलम्बण ही लिखी है कि कुन्ती के कान से वह लड़का पैदा हुआ बाहु जी धाह ! क्या ही कथा गढ़ी गई है (मैं ठीक

कहता हूँ कि यह कथा लाल बुझक्कड़ की इस कहानी के अनुसार है कि एक बार लाल बुझक्कड़ के याम में कोई सौदागर हाथी ले आया उस को देख के यामवासी चकित हुए और लाल बुझक्कड़ से पूछने लगे कि बता-लाओ यह क्या है ? लाल बुझक्कड़ ने उत्तर दिया कि “ लाल बुझक्कड़ बूझिया और न बूझे कोय । रात इ-कट्टी हो गई या दिल्ली वाला होय ” बस इस ही प्रकार से राधा पुत्र का कर्ण नाम सुन के ही कान से पैदा होने की कहानी गढ़ी गई है) भला कान से भी कहीं पुत्र उत्पन्न होते सुने हैं फिर तारीफ यह है कि लोहे का जिरह बखतर पहिने ही उस का जन्म होना लिखा है, क्या कोई वैद्य किसी विद्या से सिद्ध कर सकता है कि माता के पेट में लोहे का जिरह बखतर बन जाय, आप लोग खूब समझ सकते हैं कि राधेय कर्ण को क्षत्रिय बनाने के बास्ते जो यह कथा गढ़ी गई इस में मुझे और पाराडवों की माता कुन्ती को बड़ा भारी दोष लगाया है, फिर द्वाया को मेरी स्त्री लिखा है, नृसिंह पुराण के १८ अध्याय में मेरे वंश की अद्भुत कथा लिखी हैं, लिखा है कि त्वष्टा दी कन्या संज्ञा से मेरा विवाह हुआ, जब वह मेरे तेज को न सह मकी तब अपने पिता के पास गई उस के पिता ने यह कह के मेरे पास उसे भेजा कि मैं सूर्य के पास आके सूर्य के तेज को कम कर दूँगा तब फिर वह मेरे पास आई और रहने लगी उस के गर्भ से

मेरे तीन सन्तान हुईं, वैवस्वत मनु, यम और यमी नाम कि एक कन्या इस के पश्चात् संज्ञा मेरे तेज को न मह सकी तब आप तो घोड़ी बन के उत्तर कुरु देश को चली गई और अपमी द्वाया को मेरी स्त्री बना के घर छोड़ गई तब मुझे इतना भी ज्ञान न रहा कि यह मेरी अपल स्त्री नहीं है तब उस द्वाया से मेरे तीन सन्तान फिर हुईं, मनु शनैश्वर और तापती नाम की कन्या, द्वाया अपनी सन्तान से कम ग्रेन रखती थी इस कारण यम और यमी ने मुझ से कहा तब मैंने द्वाया को समझाया पर द्वाया ने क्रोध कर के यम को शाप दिया कि तू ग्रेतों काराजा हो और यमी को शाप दिया कि तू नदी हो जा, तब मैंने भी द्वाया की सन्तान को शाप दिया कि शनैश्वर तू क्रूर ग्रह हो जा, और तापती तू भी नदी हो जा, तब मैंने ध्यान कर के देखा तो मालूम हुआ कि संज्ञा घोड़ी का रूप धारण किये उत्तर कुरु देश में विचरती है तब मैं भी घोड़ा बन के भागा और उस से दो पुत्र उत्पन्न किये वही आप लोगों के डाक्टर अश्विनी कुमार हैं, भला कहिये तो मुझे कैसा घोड़ा बनाया है, कोई पुराण बनाने वाले पोष से पूछे कि जब मैं घोड़ा बन के कई वर्ष तक उत्तर कुरु देश में रहा था तब जगत् में प्रलय कौन करता था, देववृन्द मैं आपलोगों से प्रार्थना करता हूं कि इन देवकुलकुरुक्षारी पुराण पुस्तकों को

इतिहारों की लिष्ट (सूचीपन्न) से अवश्य काट दीजिये
 सूर्य नारायण के वचन की तार्दद महर्षि अगस्त
 ने की और कहा कि पुराणों का नाम आज से पंच (दि-
 व्यगी के अखबार) रखा जाय यद्योंकि इन में ऐसी ही
 हसीं की बातें लिखी हैं, मेरे विषय में लिखा है कि
 अगस्त का जन्म घड़े से हुआ और फिर लिखा है कि मैं
 समुद्र को पी गया, भला जो खुद घड़े से पैदा हो वह
 समुद्र को क्यों कर पी सका है ? यथा घड़े में समुद्र समा
 सका है ? अब मेरे चरित्रों को सुनिये कि दक्षिण पथ
 में आतापि और बातापि नाम के दो दैत्य रहते थे वह
 मदैव छल से ब्राह्मणों को निमंत्रित करके बुलाते
 थे और उन दैत्यों में से एक बदरा बन जाता
 था और दूसरा उसे मार के ब्राह्मण को खिला
 देता था एक दिन मेरा भी उन्होंने ने निमंत्रण कि-
 या पर यहां तो ठहरे गुरु घण्टाल उसे खा के पचा गये
 फिर वह भी मारा गया इस के अनन्तर मैंने समुद्र को
 पिया और मूत्र के मार्ग से निकाल दिया गोया व मेरे
 इन्द्रियजुलाब था फिर विन्ध्याचल पर्वत सूर्य को रो-
 कने के बास्ते ऊंचा हो जाता था तब देवतों ने मुक्ति से
 ग्रार्थना की मैं पर्वत के पास गया वह प्रणाम करने को
 पृथिवी में गिरा मैंने उस के सिर पर छाथ रख के फहा
 कि जब तक मैं तीर्थ यात्रा कर के न लौटूं तब तक सुम
 ऐसे ही पढ़े रहो बस मैं तो आके तारा बन गया और

विन्ध्याघस अब तक बैसे ही पढ़ा है इस कथा में ग्रन्थम्
तो मुझे धीखेबाज सिद्ध किया फिर सहिष्णुमविलुप्तु अड़
का चैतन्य के समान ग्रणात्म करना और मेरे वचन को
मानना आदि असम्भव बातें सिद्ध की हैं क्या इस भृष्टर्षि
होके भी मांस भक्षण करते ? समुद्र का क्षार छोना पुराणों
से जो ग्राहीन पुस्तक हैं उन में बराबर लिखा हुआ है
परन्तु उस को भी मेरा मूत्र लिख दिया इन धारणों से
इस लोगों को बड़े दोष लगते हैं इस कारण इन को ज़-
रुर ही मन्त्रखंड कर देना चाहिये ।

इस के अनन्तर सांख्यशास्त्र के प्रणेता भृष्टर्षि क-
पिस खड़े हुए और कहने लगे कि मैंने जो सांख्यशास्त्र
बनाया है उस को विना विवारे और पढ़े ही भागवत
में मेरे मत को प्रशाशित किया है इस कारण मैं भागवत
बनाने वाले पर भद्राखलत बेजा का जुर्म कायम कर के
नालिश करने वाला था परन्तु अब आप लोगों ने पंचा-
यत करके भागवत को रट्टी करने का प्रस्ताव किया है
इस कारण मैं आप लोगों को धन्यवाद देता हूँ पुराण
वालों ने मुझे भी चोरों का रक्षण लिख दिया है उन्होंने
लिखा है कि जहाँ मैं तपश्चर्या करता था वहाँ राजा
शृङ्ग राजा सगर के अश्वमेधार्थ घोड़े घोड़े को चुरा के
बांध गया मैं समाधिस्थ था इस कारण मुझे कुछ स्वर
न पहड़ी जब राजा सगर के ६०००० पुत्र घोड़े को सब ज-
यह हुँड़ के हार गये तब उन्होंने पूर्णवी के नीचे हूँड़ने

के अभिप्राय से पृथिवी को खोदना आरम्भ किया उन्होंने के खोदने से सात समुद्र बन गये (और जब गंगा जी आई तब उन में यानी भरा) पृथिवी को खोदते खोदते उन को मेरा आश्रम मिल गया तब उन्होंने नुक्के पीड़ा ही उस पीड़ा से मेरी समाधि खुल गई ज्योंही मैंने उन को नजर रुठा के देखा, त्योंही वह भव भस्म हो गये भला कहिये क्या मैं ऐसा हत्यारा हूँ कि ६०००० मनुष्यों को सार डालता हमलोग ऋषि क्या हुए भलकुलमौत हो गये फिर राजा प्रियब्रत के रथ की कथा इस से भी विलम्बण लिखी है अर्थात् सूर्य की स्पष्टी से जगत् में वरावर चान्दना रखने के वारते जो सात दिन स्वयम् रथ पर ढढ़ के घूमे थे उन के प्रकाश से सात दिन तक जगत् भर में चान्दना रहा था और उन के रथ के एक ही पहिये की लीक से सात समुद्र बन गये, इन ही राजा प्रियब्रत को ११ अरब वर्ष तक राज्य करते लिखा है सभ्यगण अब कहाहिये किस को सच्चा माना जाय अर्थात् राजा सगर के पुत्रों के खोदने से समुद्र बने था राजा प्रियब्रत के पहिये से समुद्र बने हम तो इन दोनों ही कथाओं को मिथ्या समझते हैं क्योंकि वेदों में लिखा है कि सृष्टि के आरम्भ में ही ईश्वर ने समुद्र को बनाया ।

महर्षि कपिल के व्याख्यान का अनुसोदन करने की महर्षि वशिष्ठ दण्डायमान हुए और यो कहना आरम्भ विया। सभ्यवृन्द! और सभापते पुराणोंके विषय में मैं क्या

कहूँ वह तो असमव और प्रभाण शून्य कहानियोंका भण्डार है महर्षि विश्वामित्र और मेरे विरोध के कारण में लिखा है कि एक बार विश्वामित्र जी (जब राजा थे) वन में शिकार खेलनेको आये मैंने उनको धर्मच्छ राजा समझके अपने आश्रम पर निर्मन्त्रित किया उन्होंने मेरे आश्रम पर खान पान की जब कुछ भी सामग्री न देखी तब बड़ा आश्रय करने लगे मैंने उन का अभिमान भङ्ग करने को उन की महत्वी सेना और अमात्यवर्ग के सामने ही सुरभी गौ से कहा कि तुम सब का यथायोग्य सन्नात करो मेरे वचन को सुन के सुरभी ने हुंकार छोड़ी उसके हुंकारते ही सहस्रों दास और दासी उत्पन्न हो गये फिर सुरभी की हुंकार से ही सब प्रकार के भक्ष्य भोज्य और चोष्य तथा लेहा पदार्थ उत्पन्न हो गये और दास दासियों ने सब के पास पहुंचा दिये, इस अद्भुत वात को देख के गाधिसुअन विश्वामित्र बड़े चकित होके मुझ से कहने लगे कि हे महर्षे! यह गौ तो हमारे योग्य है तुम भिक्षुक इसे लेके क्या धरोगे! मैंने कहा, राजन्, यह हमारी यज्ञ धेनु है इस को लेने की आप इच्छा न कीजिये, मेरे बहुत समझाने पर भी विश्वामित्र न माने और अपना ज्ञान बल दिखाने लगे, तब मैंने कहा कि तुम जवर्दस्त हो यदि शक्ति रखते हो तो मेरी यज्ञ धेनु को ले जाओ, विश्वामित्र ने अपने सैनिकों को आज्ञादी कि विशिष्ट की धेनु को खोल लो जब विभिन्न के सेवक

मेरी गौ को खोल के ले चले तब धेनु ने मुझ से कातर स्वर के साथ कहा कि महर्षि मेरा क्या अपराध है जो आप मुझे परित्याग करते हैं, मैंने कहा सुरभे! मैं तुझे परित्याग नहीं करता हूँ बरन राजा विश्वामित्र जवर्दस्ती तुझे छीन के लिये जाता है, यदि तू अपनी रक्षा कर सकती हो तो कर मेरे बचन को सुन के धेनु ने हुंकार किया और उसके क्रोध करते ही उस के खुरों से खरासानी राक्षस तथा और २ प्रकार के सहस्रों राक्षस उत्पन्न होगये और विश्वामित्र की सेना से युद्ध करने लगे उन राक्षसों ने क्षण मात्र में विश्वामित्र की सेना को विघ्वस कर दिया, जब विश्वामित्र की सब सेना मारी गई और विश्वमित्र एकले खड़े रह गये तब उन को क्षात्र बल पर अविश्वास और घृणा उत्पन्न हुई और वह उसही समय राजव छोड़ तप करने वन को चले गये, आप लोग विचारिये कि वह गौ थी वा ब्रह्मर थी भी दादी थी जिस के हुंकारते ही सहस्रों दैत्य पैदा हो गये, यदि यही बात है तो इन्होंने क्यों नहीं अपने घर में एक वैसी गौ पाली जिस से कोई भी दैत्य दानव स्वर्ग पर ढाई न कर सकते, खैर एक और अहुन दाया सुनिये मेरे यजमानों के साथ मेरी लड़ाई का कैसा वयान पुराणों में लिखा (द१० भा० स्वा० ६ अ० १५) राजा एक्षवाकु के १२ वें पुत्र राजा निमि ने एक बार मुझे यज्ञ परमे को ब्रूलाया, राजा निमि का वह यज्ञ ५०३० वर्ष में पूर्ण होने वाला था

परन्तु इस यज्ञ से पहिले मुझे देवराज इन्द्र ने यज्ञ करने को निमंत्रित किया इस कारण मैंने राजा निमि से कहा कि प्रथम मैं इन्द्र का यज्ञ कराय आज्ञ पश्चात् तुम्हारा यज्ञ कराऊंगा अभी तुम यज्ञ मत करो, राजा निमि ने कहा कि मैं सब ऋषियों को बुला चुका हूँ और सब सामयी भी इकट्ठी कर चुका हूँ अब यज्ञ को नहीं रोक सकता हूँ आप हमारे वंशके पुरोहित हैं इस कारण हमें छोड़ के धन के लोभ से इन्द्र के यहां तुम को जाना उचित नहीं है परन्तु मैंने राजा निमि का कहना न माना और मैं इन्द्र के यहां यज्ञ कराने चला गया तब राजा निमि ने महर्षि गौतम को पुरोहित बनाके यज्ञ करलिया जब मैं इन्द्र की यज्ञ को समाप्त करके ५००० वर्ष के एक्षात् राजा निमि के घर लौट के गया तब देखा कि राजा शयन करते हैं राजा के सेवकों ने राजा को न उठाया तब मुझे ऐसा क्रोध आया कि मैंने राजा को शाप दिया कि तेरा शरीर नष्ट होजाय जब मैंने शाप दिया तब राजा के सेवकों ने राजा को जगाया वह जागके मेरे पास आया और कहने लगा कि महर्षि ! तुम ने अकारण मुझे शाप दिया और प्रथम लोभवश मुझ यजमान के यज्ञ को छोड़ के इन्द्र के घर चले गये थे यदि जागता होता और तुम्हारे पास न आता तब अवश्य अपराधी होता फरल्तु तुम ने मुझ निद्राग्रस्त को शाप दिया इस कारण तुम्हारा अविवेद पूर्ण और क्रोधी शरीर भी नष्ट

होगाय, राजा के शाप को सुनकर मैं ब्रह्मा के पास गया और
उनसे सब ब्रह्मान्त सुनाया ब्रह्मा ने कहा तुम्हारा दूसरा
देव भिन्नावरण के यहाँ होगा और तुम्हारा विज्ञान विनष्ट
न होगा खैर मेरा दूसरा जन्म हुआ और फिर घड़े से
मेरी उत्पत्ति हुई, अब राजा निमि का हाल सुनिये उम
का भी शरीर नष्ट हुआ परन्तु ब्रह्मा के बर से उस का
वास समस्त मनुष्यों के नेत्रों पर होगया, देखिये तो क्या
दिल्ली की कथा है कि राजा का निवास सब मनुष्यों
के नेत्रों पर होगया क्यों उस से पूर्व मनुष्यों का पलक
(निमेष) नहीं लगती थीं ? यदि यही बात है तो म-
हर्षि गौतम ने जो जीव के साधारण लक्षण लिखे हैं वह
क्या मिथ्या है ? महर्षि वशिष्ठ जी की बात को सुन के
मध्यापति जी ने अपने आक्षन से उठ के कहा कि अभी
तक किसी वस्तु के अधिष्ठात्र देवता ने अपनी सम्मति
प्रकाशित नहीं की है जिस से उस गरीह की राय भी
जाहिर हो, लिहाजा अब किसी गरीह के देवता को अ-
पनी सम्मति प्रकाशित करनी चाहिये श्रीमान् मध्यापति
जी की आङ्गा को सुन के सब नदियों के अधिपति श्री-
मान् समुद्रदेव खड़े हुए और कहने लगे कि—

सभासद्वन्द्व ! पुराण बालों ने जो मेरी दुर्दशा की
है वह अकथनीय है, आप लोगों ने मेरे स्थने की कहानी
को अवश्य सुना होगा ? देखिये तो कैसा बाहियात फ-
गड़ा मचाया है कि मेरे स्थने के बास्ते मेरु पर्वत को

उठा के देवतों ने मेरे बीच में छाल दिया फिर सर्पराज बासुकी को नेती (रस्सी) बना के घर्षाटे के साथ घुमाया उस घुमाने में भी विष्णु ने चालाकी की कि दैत्यों को सर्पराज के सुख की ओर खड़ा किया और देवतों को पूछ की ओर खड़ा किया जिससे सर्प का विष दैत्यों को ही चढ़े और देवता उससे बचे रहे खैर यह भी चालांकी चमत्कारिणी और हितकारिणी न हुई और न सर्प ने काटा तब जो २ चीज अच्छी २ निकलीं वह देवतों को मिलती गईं और दुरी २ चीज़ विचारे दैत्यों को दीं, उच्चश्रवा घोड़ा तो खुद देवराज ने हथियालिया, लक्ष्मी विष्णु को पसन्द हुई और भरे विचारे भोलानाथ कि विष उन को पीना पड़ा फिर जब मदिरा निकली तब तो वह दिल्लगी हुई कि भाँड़ों को भी मात कर दिया, दैत्यों को छलने के बास्ते स्वयम् विष्णु भगवान् को भोहनी रूप धारण करना पड़ा, उस रूप को देख के हमारे भोलानाथ जी ऐसे बहके हि विष्णु को भी छकड़ी भूल गई, उन को पिंगड़ कुड़ाना कठिन होगया खैर विष्णु ने उस ही भोहनी रूप से दैत्यों को छलके देवतों को अमृत पिलाया भला सोचिये तो कि खारी पानी में अमृत कहां से आया सो भी अगस्त ऋषि के मूत्र में, देव वृन्द! क्या पुराणा वालों ने आप लोगों को यह गाली नहीं दी है कि अगस्त ऋषि के पेशाब से मेरी उत्पत्ति लिखी और उस से उत्पन्न हुये अमृत को आप लोगों को पान कराया; फिर यह भी

विचारने की बात है कि मुझ में क्या किसी ने गुड़ वा
महुआ घोल रक्खे थे जो मझ में से शराब निकल आई ?
इस के अतिरिक्त जिन धन्वन्तरि के पिता दीर्घतमा थे
और जोकाशी के राजकुल में पैदा हुए थे उन धन्वन्तरि
की भी उत्पत्ति मेरे जल में से ही छुई बतलाते हैं क्या ?
धन्वन्तरि कछुए या महरी थे जो पानी से उत्पन्न होते ?
फिर सुश्रुत में धन्वन्तरि ने स्वयम् कहा है कि—

“ श्रहंहि धन्वन्तरिरादिदेवोजराहुज्ञामृत्युहरोमराणाम् ।
शत्याङ्गमङ्गैरपरैरपेतम् प्राप्तोस्मिगाम्भूयद्युपदेष्टुम् ” ॥

नहीं मालूम धन्वन्तरि ने यह शेरी क्यों बघारी
है ? यदि मेरे मधने से धन्वन्तरि की उत्पत्ति होती तो
वह अपने मुँह से आदि देव क्यों बनते ? क्या अपने मुँह
से मिठू बनना सभ्यता से बाहर नहीं है ॥

महाशय ! जिन नदियोंका मुर्मे पति लिखा है उन
की कथा सुनिये, देव भाग में लिखा है कि एक दिन ब्रह्मा
के दर्वार में गङ्गा जा खड़ी थी इन्ह भी दर्वार में हाजिरी
देने को उस हो समय पहुंच गये इन के अलावा और २
देवता भी दर्वार में हाजिर थे, इत्पाकिया बायु से
गङ्गा के शरीर का वस्त्र उड़गया इससे सब देवतों ने नीची
नजर करली परन्तु देवराज तिर्णी बांधकर देखते रहे और
गङ्गा जी भी मुसकराई, इस धृष्टा (वेंद्रदर्वी) को देव
कर ब्रह्मा ने दोनों को शाप दिया कि तुम मनुष्योंने

मैं जन्म लो इस ही कथा की भूल भुलैया में पुराणवालों ने एक और भी कथा जोड़ दी है, जब गङ्गा जी शाप पाके ब्रह्मा के दर्वार से लौटी आती थीं तब उन्होंने देखा कि आठों वसु रास्ते में बैठे रो रहे हैं, वह सब गङ्गा जी को देखकर और भी रोये तब गङ्गा जी ने उन से पूछा कि तुम लोग क्यों रोते हो ? उन्होंने उत्तर दिया कि हम सब को वशिष्ठ ऋषि ने मनुष्य योनि में जन्म लेने को शाप दिया है शाप का कारण पूढ़ने पर वसुओं ने कहा कि हम सभी अपनी स्त्रियाँ को माय ले के बनविहार (सर) करते २ वशिष्ठ जी के आश्रम पर पहुंचे वशिष्ठ जी ने अपनी यज्ञ धेनु से अतिभिसत्कार कर के सब पश्चार्य लेके हम लोगों का सत्कार किया तब गौ की इस आरुर्ध शक्ति को देख कर हम में से एक वसु की मौती ने अपने पति से कहा कि इस गौ को ले लेना चाहिये खी के अनुचित हठ से उस वसु ने गौ को चुरा लिया परन्तु वह दिव्य गौ थी इस कारण बोल उठी कि इस से वशिष्ठ महाराज क्रुदु हुये और हम लोगों से बोले कि तुम मनुष्यों के समाज बुद्धि रखते हो इस कारण तुम सब मनुष्य योनि में जन्म लो महर्षि के इस शाप को सुन कर हम लोगों ने बड़ी विनय की उम से वशिष्ठ जी का जब क्रोधशान्त हुआ तब उन्होंने कहा कि जिस ने गौ चुराई है वह अधिक दिन तक मनुष्य रहेगा और अन्य वसु जन्म लेते हो शाप से मुक्त हो जायेंगे हे गगे

इस ही दुःख से हम लोग रो रहे हैं, गङ्गा जी ने यह सुन के उन्हें संतोष दिया और अपने दुःखों को सुनाया तब यह सलाह ठहरी कि बसु गङ्गा के गर्भ में जन्म लें और यही किया गया और देवराज इन्द्र राजा शान्तन घने और गङ्गा उन की पत्रि हुईं जब वह अपनी प्रतिज्ञानुसार सात पुत्रों को भार चुक्कीं तब वही आठवां पुत्र भीष्म उत्पन्न हुये और पिता के वर से स्वाधीन मरण होगये। यह तो गङ्गा जी की कथा हुई, यमुना और तापती का हाल आप लोग सुन ही चुके हैं इन के अतिरिक्त और भी कई एक ऐसी नदी हैं जिन को पौराणिक लाल बुफ़क़ड़ों ने पहिले जन्म की मानुषी लिखी हैं और वह परस्पर के शापों से नदी हो गई हैं परन्तु यह किसी पुराण में नहीं लिखा कि लगड़न की टेस्स नदी पहिले जन्म में कौन थी हां एक बात तो मैं कहना भूल गया कि एक नदी राजा की राल से बनी है और वह राजा जिसको परन्धर्मा भा महाराज हरिष्चन्द्र का पिता लिखा है वह अभी तक आधे स्वर्ग में टंगा है और उस के मुख से राल गिर रही है बस वही राल नदी होके बहतो है इस नदी का नाम कर्मनाशा इस कारण है कि उस में स्वान करने से व उस का जल स्पर्श करने से ही मनुष्य के पूर्वलत सब सुकर्म नष्ट हो जाते हैं क्या मैं आप लोगों से यह प्रश्न कर सकता हूँ कि उस नदी के आस पास निवास करने वाले पाप पुंज नहीं बन यहे

गे ? क्या उन लोंगों के बास्ते ईश्वर दयालु और आश्चारी नहीं रहा है ? फिर आश्चर्य यह है कि उस ही नदी के किनारे पर बसी हुई गया पुरी में पितरों का आदु करने से स्वर्ग का फाटक खुल जाता है उपर भी तुरा यह है कि जिन पितरों का गया में आदु हो जाता है उन को मुक्ति हो जाती है पर फिर भी उन का वार्षिक आदु होता रहता है । देववृन्द ! मैं प्रकरण दिश्वद्व आदु के विषय को कहने लगा था अब मैं केवल यही कहके अपने व्याख्यान को समाप्त करूँगा कि श्री पौराणिक गोपराज ने अपने मन घड़त भूगोल में लिख दिया है कि शराब का धीव का और कख के रस का भी समुद्र है यदि यह बात सत्य होती तो सब लोग भजे से धीव के समुद्र से घड़े वयों न भरलेते और सद्य प्रिय श्येज उम सुदार्द शराब का व्यापार वयों न करते । इस के अतिरिक्त यदि शराब का समुद्र होता तो मुझे सध के शराब वयों निकाली जाती ? सभ्यवृन्द ! मैं तो यही चाहता हूँ कि जो पुस्तक मुगालते से भरे हुये हैं उनको मान्य पुस्तकों की सूची में से अवश्य काट देना चाहिये ।

समुद्र का व्याख्यान हो जाने के अनन्तर भगवती भूमि उठीं और यों कहने लगीं देववृन्द ! आप लोग ज्ञानते हैं कि जिन परमाणुओं से मेरा संगठन हुआ है वह परमाणु नित्य हैं और उन का संयोग ईश्वर ने स्थिति के

आरम्भ में किया है, परन्तु पुराण वालों ने भेरी पवित्रता को घटाने के निमित्त लिख दिया है कि मधु और कैटभ की चर्वी से पृथकी बनी है भना विचारिये तो कि यदि मधु कैटभ से पहिले मैं न होती तो जिस जल पर विष्णु सोधे थे वह किम के आधार पर ठहरता ? फिर मेरे आधार के विषय में वह बहार की है कि जिस से आप लोग अवश्य हँसेगे, मेरा आधार शेष नाग को लिखा है भना यह कथा दिल्लगी की आत है कि एक वह मर्प जो कद्रु के गर्भ से उत्पन्न हु प्रा वह मुझे क्यों कर धारण करता और उस के जन्म से पूर्व मैं जाहे पर रखी थी फिर उस का भी एक आधार लिख दिया है परन्तु हज़रतों को यह न मालून हुआ कि हम सब लोग परम्पर के आज्ञावा से ठहरे हुए हैं, फिर यह भी पुराण वालों को मालून नहीं है कि जड़ पर्वतों के सन्नान क्यों कर होती, पर्वतों का विवाह पर्वतों की सन्नति और पर्वतों का निमन्त्रणों में जाना न मालून किस विज्ञान से सिद्ध करते हैं ? पौराणिक महात्माओं ने लाख लाख योग्यन का एक एक वृक्ष लिख दिया है और द्वीपों का जो विस्तार लिखा है उस को पढ़ते ही हँसी आती है सभ्य महाशय ! आज इतना ममय नहीं है कि मैं अपनी पूरी सम्मति वा द्वीपादिकों की पूरी कथाको प्रजाशित करूँ किन्तु इतना अवश्य कहती हूँ कि पुराणों ने मेरे विषय में सं-

कहो असमव बाते लिखी है इस कारण पुराणों को
अवश्य खारिज़ कर देना चाहिये ।

भगवती भूमि की घक्कता को सुन के श्रीमान् सभापति
की ने सिहासन से उठ कर कहा कि सभ्यवृन्द ! आप
लोगों ने इस महती सभा में जितने व्याख्यान सुने मेरी
सम्मति में उन सब का सारांश यही है कि पुराणों के
बनाने वालों ने आप लोगों पर सहस्रों मिथ्या दोष ल-
गाये हैं अतएव आप लोगों की सम्मति है कि उन सब
पुराणों को रट्टी खाने में फेंक दिया जाय, यह भी मिठु
हो गया है कि भगवान् विष्णु और शिव महाराज भी
आप लोगों से सहमत हैं यद्यपि ब्रह्मा जी ने अभी
तक अपनी सम्मति प्रकाशित नहीं की है तौ भी वह
आप लोगों से ज़रूर इच्छाक राय होंगे क्योंकि उन को
भी पुराणों वालों ने पृथ्वीगमन का महाकलङ्क लाया
है इस के सिवाय भागवत के कर्ता ने उन को अज्ञानी
और धोर भी लिखा है शुतराम् उन की राय आप लोगों
से मिलती है मगर अभी तक बहुत से देवता और दे-
वियां ने अपनी सम्मति प्रकाशित नहीं की है और उन
की राय इत्यारे में निहायत ज़रूरी है, आप लाग यह
भी रुपाल कर लीजिये कि अब बहुत ही अतिकाल हो
गया है यदि अब किसी देवता का व्याख्यान होगा तो
सन्ध्योपासन का समय भी व्यतीत हो जायगा इस का-

रण मेरी सम्मति में आज सभा का विसर्जन करना उत्तम जान पड़ता है और फिर दूसरे दिन सभा करके इस विषय पर विचार किया जाय ।

सभापति की सम्मति को सुन के स्वामी शङ्कराचार्य ने तथा राजाराम मोहन राय आदि अद्वैतवादी धर्माचार्यों ने नाक भौंह मिकोड़ के बहा कि सन्ध्योपासन के बास्ते सभा के कार्य को रोकना उचित नहीं है क्योंकि जिन लोगों को आत्मा का साक्षात्कार हुआ है उन परिपक्व ज्ञान वाले देवताओं को बहिरङ्ग साधन स्वरूपतुपासना की आवश्यकता नहीं है इन के प्रस्ताव को यूरोप के अनेक लोगों के साथ श्रीमतो मैडमब्लेवेटस्की ने अनुमोदन किया परन्तु श्रीरामानुजाचार्य तथा परमपदारुद्ध महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के शिष्य ने इस प्रस्ताव का बड़े बल से विरोध किया और महर्मद साहिब ने यूरोपीय लोगों को अपनी तेग दिखाके धर्मकाया कि इस्तगफुरुल्ला आप लोग कैसे बन्दे खुदा हैं जो खुदा की बादत में खलल डालना चाहते हैं „ मुहर्मद साहिब की धर्मकी को सुन के मौलानाहम स्वर्णे हो के कहने लगे कि हम लोग आजाए हैं किसी के दंडे नहीं हैं हमारा तो यही क्रौल है कि “नुकते के हेर फेर में हम से जुदा हुआ । नुकता जो फेर दे दिया आप ही खुदा हुआ „ इन सब की बहस को सुन के बाबू केशवचन्द्रसेन बड़े जीष के साथ उठे और यों कहने लगे कि “माश्रयगोन । आ-

पमाराएँ हूँडा छूँडी आर भाराभारी केनो काच्चेन, स-
क्षय दीलेर अभी भीमान्शा कोरे दीच्छी आपनारा गाढ
बोलुन खोदा बोलुन वा इश्शोरहै बोलुन किन्तु यादटी
उपास्स अवश्शरहै मानिते एषे और उपासनारकेनोहै
शमय निर्दुर्विषये होतेपारे ना शुतराम् विषये क्लोलहृ-
कोरा आनावश्शक ।

इन सब की बातों को सुन के सभापति मुस्करा के
बोले कि देववृन्द ! सभा को विसर्जित करने में धर्मर्ष-
चारणी की अनेक सम्भति जान पड़ती हैं इस कारण
इस विषय में समस्त सभासदों की सम्भति का लेना आ-
वश्यक है अतएव मैं सब की सम्भति को जानके को
इच्छा से सब से कहता हूँ कि जो लोग इस समय सभा
का विसर्जन चाहते हैं वह अपने हाथ उठावें, सभापति
की दाढ़ी को सुन के इतने देवताओं ने हाथ उठाये कि
न हाथ उठानेवालों की संख्या अत्यन्त खल्प रह गई
इस कारण सभा को विसर्जन हो गया ।

पाठकवृन्द को निराश न होना चाहियेक्ष्योंकि शेष
इत्तान्त यथावकाश हमारे संबाददाता फिर भेजने की
तिज्ञा कर चुके हैं और हम भी डिवाइन ऐल सर्विस
में प्रतीक्षा में अपनी लेखनी को थोड़े दिन के बाते
रेग्राम देते हैं ॥

खर्ग में महासभा का प्रथम प्रोसीडिंग्स (अधिक्रेशन)

॥ समाप्त ॥

आ पुस्तकालय
सिलनेका पता—बाबूराम शर्मा इटावा ।

ओइम्

त. २४

२३८५

स्वर्गमें महासभा ।

श्रीमान् पं० रुद्रदत्त शर्मा रचित

तथा—

बाबूराम शर्मा इटावा द्वारा

प्रकाशित ।

Printer B. D. S. Brahma Press Etawah.

द्वितीयवार

२०००

संवत् १९७४

मल्य

(००)

प्रकाशनको अतिरिक्त किसीको हपानेका
अधिकार नहीं ।

प्रीति कमाल २८९९
श्रीमान् प्रियं यत्वा

॥ संजीवन बूटी ॥

यह बूटी मूर्खितोंकी मूर्धा दूरकर श्रीलहमण्यती,
शूरबीर, रणधीर, बगाती है इसके सेवनसे चिरप्रतापी,
तेजस्वी, वर्षस्वी, पश्चस्वी, ऋषि, मुनि, योगी, संन्या-
सी, नहावीर, योधा, बलधारी, जगतगुरु, परिब्रह्म
सथा समाट जगत् प्रसिद्ध अमर नाम करगये हैं । के-
वल इसीके बल वालव्रस्तचारी भीप्रपितामह सहा-
मृत्युञ्जय कर शरशथ्यापर लुखासीन हो धर्मपदेश
करते रहे । यह बूटी सत्यार्थप्रकाशके प्रकाशमें तृतीय
खण्ड पर जगमगा रही है । यह अमरबूटी घर बैठे ।
निष्ठावर मात्र करनेसे निलेगी ।

प्रसिद्धं पं० रुद्रदत्तं शर्मा कृतं ॥

आर्यमत भातं रुद्र नाटक १ भाग अनेक जटोंका हत्तान्त ।

स्वर्गमें उवजोक्ट कमेटी ॥

इस पुस्तकमें बड़े ही अद्भुत ढंगसे पुराणोंका स-
रुद्धन है अतिरोचक है पुस्तक विना समाप्त किये भन-
नहीं सानता है इसे नहीं पढ़ोगे तो बहुत पछता-
श्रोगे मूर्श्य -) ॥

पुराणपरीक्षा—यह पुस्तक भी पं० रुद्रदत्त जी लि-
खित है इसकी भी प्रशंशा हव क्या करें—आप स्वयं
यह सुन लीजिये—बाहरी पुस्तक ! पुराणोंके खूब ही
चर्चे उड़ाये छक्के पक्के छुड़ाये पुराण जाली बनावटी
उड़ाए दिये मूर्श्य ॥

॥ भिलनेका पता-बाबूराम शर्मा इटावा ॥

३४५२

॥ औरैम् ॥ (वं पुः

ख्यालीं सहास्यभा ।

—१०६५७५८५९५०५१—

कालचक्रके पहिये को घुमाते हुए सूर्यनारायण
झोंहो उत्तरायण मुये त्योंही देवलोकमें घोर धब-
राहट मच गई। इस घबराहटके कारणोंको यदि लिखा
जाय तो एक करोड़ श्लोकों का महा महा महाभारत
बन जाय तौ भी पाठकोंके सन्तोषार्थ संक्षेपसे दो
घार कारणोंका वर्णन करना आवश्यक जान पड़ता है।

इस घबराहट का खास कारण तो यह था कि
मिस्टर टक्करने फ़क्कर अनके जबसे मुक्तिसेना बनाई और
वारक्राई (War cry) लगाचार पत्र निकाला तबसे दे-
वता लोगों को हर समय यही सन्देह और भय बना
रहता है कि न मालूम किस समय टक्करासुर के सैनिक
ख्यालीं सीढ़ी लगा के चढ़ आवें और हम लोगों को
भारके ख्यालीं निकाल दें। गत २० दिसम्बर सन् १९६६
को की मैशन के देवता ने ख्यालीं में जा के देवताओं से
प्रार्थना की कि महाराज मुझे कृष्णोंने भार के भगा-
दिया, मर्त्यलोकसे मेरी उपासना को ईसाई उठाना
चाहते हैं आप सब कौमपरवर हैं लिहाजा मेरी रक्षा
करना आप लोगोंका फर्ज है, फ़ूमैशन चर्चके देवताकी

प्रार्थना को सुन के देवराज इन्द्र यो ध्याम आया कि सब्जेक्ट कमेटीमें जो पब्लिक सीटिङ्ग वा महासभा करनेका प्रस्ताव हुआ था उसको अब करना चाहिये । देवराज इन्द्र इस विचारमें बैठे ही थे कि इतनेमें असंख्य पितरोंने देवदर्बारको घेर लिया और चिन्ह के दुहाई देनेलगे । इनकी चिन्हाहट को सुन के महाराज इन्द्र भी घबराये और अपने द्वारपालसे बोले कि इन सबको खानोश करके दर्वार में हाजिर करो हुक्म पाते ही द्वारपाल सब को बुला लाया ।

उन सब ने हाथ जोड़के विनय करी कि महाराज हम लोग बड़े कष्ट में हैं । हम में से अधिक लोग अरब इङ्गलिस्तान के रहने वाले हैं हम लोगोंने जितने सुकर्म किये थे उनमें से किसी का भी हमको फल नहीं मिला और न हमारे पुत्र हमारा आदू ही करते हैं जो हमको यहां खानेको मिले लिहाजा हम सब भूखों से जाते हैं अगर हमको पहिले से यह अन्धेर मालूम होता तो हम कभी सुकर्म नहीं करते ।

इन लोगों की बात की आर्यावर्तीय पितरोंनेभी ताईदकी और कहा कि वेशक यह लोग सत्य कहते हैं अगर हम लोग जानते कि सुकर्म और कुकर्म करनेवालों को खर्गमें एक ही स्थान मिलता है तो हम लोग क्यों सुकर्म करते । देखिये ! जिस नहिंषासुरने बड़े २ महृचियों को सताया आप सब लोगोंद्वारा युद्ध में धताया वही आज सुक्लपदवी पाले आनन्द भोग रहा है इसके

‘अतिरिक्त रावण और बाणादि अनेक अन्यांशी राज्यसभी
मुक्त हो चैन उड़ा रहे हैं तब अन्य लोगोंका सुकर्म करना
भल भारना नहीं तो क्या है? महाराज! आप इस लेख
धींयोंको मिटाइये नहीं तो जगत्‌में अनधेर हो जायगा।

इन लोगोंकी अर्ज पूरी नहीं हुई थी कि इतनेमें
देवतोंके एक दलने आकर इन्द्र महाराज से प्रार्थना
की कि हे देवराज! आज कल हम लोग भूखे मर रहे हैं
कहीं पर यज्ञ नहीं होता जो हम को भाग मिले, यज्ञ
के विना उत्तम धुआं नहीं होता, धुआं ही नहीं तो बा-
दर काहेके बनें, बस बादरोंके अभाव से वर्षा का अ-
भाव हो रहा है, अवर्षण से संसार की यह दशा है कि
शाकस्बरी देवी (जार्करडेय पुराणमें लिखा है कि शा-
कस्बरी देवी ने १२ वर्ष तक देवताओंको शाक खिला
के जिलाया था) की तर्कारी भी सूख गई, जो हमारे
भक्त पहिले वर्षों और पेड़ोंका भोग लगाया करते थे
अब उन को बाजरे की रोटी भी नहीं मिलती है।

इन लोगों की तार्दद करते हुए काशीपति विश्व-
नाथ बोल उठे, महाराज! वेशक आज कल देवतों को
बढ़ा कष्ट है मेरी ही दशा देखिये न! मैं जो एक बारं
भङ्ग की तरफ़ में यवनके छर से ज्ञानवापी हुएमें जा-
गिरा था तो काशीके पश्चोंने मेरी एवजमें एक अन्य का-
यम मुक्ताम (Officiating) विश्वनाथ बना लिया मगर
आश्वर्य यह है कि अब तक भी कोई मेरा भक्त सुझे
कुए से नहीं निकालता है, हालांकि मेरा मगज् चावल

और सहे पासीकी बदबू से उड़ा जाता है और मैं कुप्रमें पछाड़ भोग रहा पूर्ण और मेहा पायन पुक्काम मुस्लिम (Permanent) विश्वनाथ घनके गुलदर्दे उड़ा रहा है, हे देवराज ! यदि आप हम लोगोंके कष्ट को दूर न करेंगे तो हम सब मिलके बलिको देवराज बना लेंगे ॥

इन सबकी बातों को सुनके देवराज इन्द्रने मुस्करा के कहा हाँ भाई अब तो तुम्हारी नजर बढ़ गई है अब आपलोग अमेरिका की ओर क्यों न देखेंगे । अभी याद रखिये कि अब वहाँ बलिका बल नहीं है अब तो पातालमें रिपब्लिकन गवर्नमेंट (प्रजातंत्र) हो गई है अगर खण्डमें भी वही साम्यवाद आपलोग चलावेंगे तो हम भी मत्यंलोक के मनुष्योंकी महाकांग्रेस कराके आप लोगोंकी भक्ति को बेस्त नाबूद कर देंगे । स्मरण रखिये कि जैसी उच्चति हम आप लोगोंकी करसक्ते हैं वैसी उच्चति विदेशीय राजा बलि नहीं कर सकता है मैं अभी सब संसार के देवतों की महासभा करके आप लोगोंके दुःख दूर करनेके उपायों को बढ़े यक्षसे कहूँगा

इतना फहके महाराजा इन्द्र ने समस्त दिग्पाल और सूर्य चन्द्रमा आदि प्रधान २ देवतों को सम्मति करने के बास्ते खुशाया वह लोग पलक नारते देवराज की अमरावती इन्द्रपुरी में आ विराजे ॥

प्रथम सबकी सम्मतिसे एक मैनेज़िंग कमेटी कायम की गई घूंकि इस कमेटीका खास काम नोटिस देना व सभाके बास्ते त्यानादि का प्रबन्ध करना था एवं

कारण श्री सूर्य नारायण इसके सभापति, चन्द्रमा उप-
सभापति और अग्निदेव सेकेटरी नियत किये गये, प्रथम
नेनेजिझु कमेटी के सेम्बरोंकी राय हुई कि श्री विष्णु
विनाशक लम्बोदर से विज्ञापन लिखाके वितीर्ण किये
जायं परन्तु श्री शुक्रचार्यने यहार ठिं अब वहं जमाना
नहीं है जब कि हाथ से लिख लिएकर परदेश दिशावरों
को चिट्ठी भेजी जाती थीं अब तो एन्डलाइटेएट (रोशनी
का) जमाना है इस लिये किसी ग्रेस में दो चार अरब
नोटिस छपाके बांट देने चाहिये, आजकल फी मेल एजू-
केशन (छोटी शिक्षा) तरफ़ी पर है लिहाजा सरखती
देवी पलमात्र में नोटिस कम्पोज करके छपा खक्ती हैं
इन सब की बातों को सुन के भुवन भास्कर भगवान्
बोले कि नोटिस बांटने व छपानेको कोई ज़रूरत नहीं
है क्योंकि प्लॉटेलीजेन्स डिपार्टमेंट (समाचार विभाग)
ने इतनी उच्चति करली है कि पलम भारते तारे संसार
में सभा के समाचार पहुंच जायेगे, मैं हेलोग्राफ (सूर्य
की किरणोंके द्वारा जो समाचार भेजे जाते हैं) के द्वारा
मेरे सिन्न शीतरशिस (चन्द्रमा) नाइट सिगनेल्सके द्वारा
और अग्निदेव जी महाराज तडिंडग्राम (तार) के द्वारा
पलम भारते सर्वत्र समाचार पहुंचा देंगे प्राप लोग वि-
ज्ञापनबांटनेकी चिन्ताको छोड़के दूसरेप्रबन्ध कीजिये ॥
नेनेजिझु कमेटीकी सम्मति से अमरावती के टौन
हाल में वसन्तपंचमी को सभा का होना स्थिर
हुआ, सभा में अधिक भीड़ होने की सम्भावना थी इस

‘कारण इन्सपेक्टर जनरल आफ डिवाइन् (हास्पिटेलस सिविल एंड मिलेटरी) (अश्विनी शुभारंगों को) बुला के आज्ञा दी गई कि आप अपनी डिसपेन्सरीके सहित सभा मरम्भ के दाहनी और हर समय हाजिर रहिये क्योंकि आजकल बोबोनिकलेग (नहासभा) का अधिक भय है, इसके अतिरिक्त डिवाइन मेल सर्विस के सुपरिशटेटरेट बायु देव को आज्ञा भिली कि तुम हर समय यहां आजिर रहो और जित सभासद्वकाकहींसे कोई पत्र आवे फौरन उसे उसके पास पहुंचा दो।

इन प्रबन्धोंके करनेके पश्चात् जैनेजिङ्ग कलेटीने विदेशी देवताओं के बास्ते टौनहाल के हाते में एक होटल तथाय काराया और योरोपियन देवतोंके बास्ते भोजन पकानेके निमित्त आत्मन्निनी देवीदो उचिक्षणघायडालनी के सहित सम्पूर्ण सामग्री देके नियत कर दिया, बंगदेशीय देवतोंके बास्ते सत्स्यप्रिया दगलासुखी नियुक्त की गई, यवनदेशी और अफ्रीकाले देवतोंके खान पानका प्रबन्ध धारने को घजलगिरिनिभा दाली जो नियतकी गई, ऐरेणी दीन, जापान और चलाया आदि द्वीपोंके देवतोंके खान पान का प्रबन्ध करनेवो सामेश्वरी और पद्मा देवीको (यह दोनों देवी बौद्ध चम्पदायमें सानी जाती हैं) आदेश भिला, जैनेजिङ्ग एमेटी ने इस प्रकारसे सबके खान पानका प्रबन्धकरके टौनहालके द्वार पर (welcome to Holy Gods) उन्दर आज्ञारंगमें लिखके लगवा दिया और द्वारपालोंको आज्ञा-

दैदो कि जो कोई सभामें विघ्न डालनेके अभिप्राय से कुछ काम करे उसको जहन्नुम रसीद करो और जो सीधे स्वभावसे सभामें जाना चाहे उसे हरिंज मत रोको ।

प्रबन्ध करतेही करते ब्रह्मन्तपञ्चमीका दिन आगया उस रोज प्रातःकालही से सभामण्डप में देवतोंका आना आरम्भ हुआ सबलोग अपने २ डलाकमें जा बैठे, ए० डलाकमें ओरिजिनेल (असली) देवतों के बास्ते कुर्सियोंकी कतार लगी हुई थी और उसही के बीच में सभापतिके बास्ते एक रत्नजटित सिंहासन बिछा हुआ था इनके दाहिनी और बी० डलाक था इसमें महर्षि मरणल तथा वेदोंके मानने वाले मुक्त जीवों के बास्ते कुर्सियां बिछी हुई थीं, बाईं और सी० डलाकमें योरोप तथा आरब आदि देशोंके देवता तथा पैगम्बरलोग विद्यमान थे और डी० डलाकमें मोड़ने (नये जमाने के) ऋषि तथा धर्माचार्य लोग विराजमान थे ।

देवियोंको आसन देनेके समय प्रबन्धकर्ताओं में बैमनस्य हो गया क्योंकि कई एककी सम्मति थी कि देवियोंको देवतोंके बीचमें आसन न मिलना चाहिये क्योंकि सनातनधर्म वाले देवियोंको सभामें बिठलाना पाप समझते हैं । दूसरे कहते थे कि जिस दुर्गा देवीने महिषासुरको और शुभ्म निशुभ्म आदि दैत्योंको युद्धमें मारा वह अब किससे पड़दा करेगी ? खैर अन्तमें यह स्थिर हुआ कि ए० डलाकके पासही एक फीसेल कवर्टर बना

या जाय और सब देवी उसहो में बैठके सभाको देखें
और आवश्यकतानुसार सम्मति भी दें ।

इसके अनन्तर प्रवन्धकसाङ्गोंने जो छी० डलाल की
और देखा तो वहां पूर्णी अशान्ति पार्श्व कुछ लोग आगे
बैठनेके बास्ते आपसमें फगड़ा कर रहे थे इस कोला-
हलको सुनकर मैनेजिङ् कमेटीके सभापतिने सब को
यथा स्थान बिठलाके शान्ति की जब सब लोग यथा
स्थान बैठगये और सभानें शान्ति स्थापित हो गई, तब
रिसेप्शन कमेटी वा अभ्यर्थना सभाके सभापति कुमार
जयन्तने इस प्रकारसे अपना व्याख्यान आरम्भ किया ।

व्याख्यान ।

देव, देवी, ऋषि, मुक्त और धर्माचार्यवन्द !

मैं आप लोगोंको धन्यवाद देने योग्य नहीं हूं क्यों
कि कलियुगी रामायणमें मुझे कौवा लिख दिया है भला
सोचिये तो सही कि मैं अपने देवस्वरूपको तथागकर
काक क्यों बनता ? प्रथम तो योगीके विना किसीको
यह शक्तिही देखरने नहीं दी कि अपने शरीर को
विना मृत्युके छोड़के दूसरा शरीरधारणकरे यदि मुझे
योगीही माना जाय तो क्या योगी इतनाभी नहीं
समझ सक्ता, कि श्रीरामचन्द्रजीकी धर्मपत्नी सती साध्वी
पतिव्रता सीताजी परपुरुषसे प्रीति नहीं कर सकती हैं
मैं भख मारने क्यों जाऊं, फिर उस ही रामायणमें यह
भी लिखा है कि महाराज रामचन्द्रजीने मेरी एक आंख
फोड़ासी परन्तु देखिये मेरे दोनों नेत्र कमलसे खिले

तुये हैं, यदि दातिये दिक्षीवेहपदी आंख फोष्टुदी थी और इसहीपारज्ञ श्रवत्सभी सब कौवे कागे होते हैं तो यह महाश्रान्याय है दि अपराध कर्त्ता में आंख फोष्टीजाय कौवों की, इसके अतिरिक्त श्रीरामघट्ठजी के और मेरे जन्म से भी पूर्व पात्रभृत्युषका होना परायोंमें लिखा है परन्तु उसके भी दो नेत्र महीं लिखे अस्तु—में अपनी अधिक सफार्ह देना नहीं चाहता हूँ योंकि मत्यलोकके मनुष्यों ने कुछ मुझेही दोष नहीं लगाया है वरन् भगवान् विष्णु को भी दोषोंका भण्डार बनादिया है, देवतोंको दुश्चा को दूर करनेके बास्ते जो आप लोग लाखों कोशसे यहां आये और अमरावती के टैनहाल को सुशोभित किया इस कारण में आप लोगोंको अरबों घन्यवाद देता हूँ ।

देववन्द ! पुरायोंको माननेवालोंने स्वर्गको यिथेटर, हमलोगोंको नगाहृची और देवाङ्गनाओंको नटनी समझ रखा है दयोंदि अर्थने देशके छोटे २ श्रामन्दोत्सव में लिखदिया है कि “देवादुन्दुभयो नेदुर्बन्तुम्बाप्सरोगणा (अथवा) आवादयन्तः पटहान् पुष्पवृष्टि मुचोदिवि,, इन के अलावा दीन इसलामियां वालोंके रुपालसे तो बहिष्ठ भी दूरोंका बाज़ार है । इन सब लक्षणों २ को दूर करने के बास्ते जो आप लोग आज इस टैनहाल में इकट्ठे हुए हैं आपके इस परिश्रमके बास्ते मैं आप लोगोंको रिसेप्शन कमेटीकी ओरसे घन्यवाद देता हूँ ॥

इस स्पीचके समाप्त होते ही महाराज कुवेर ने प्रक्षाप किया कि आज दो जनरज समेटी में भगवान्

विष्णु सभापति बनाये जायं यद्यपि इसदो अनुसोदन
अनेक लोगोंने किया परन्तु विष्णुभगवान्‌ने यह दह
के इसे अनङ्गीकार किया कि हम तो आज कल किसी
कामके ही नहीं रहे हैं, जबसे शङ्खराचार्यने वेदोंकी
जड़ फाटनेको सेल्प गदर्नमेस्ट चलाया, तबसे होटे २
वालक भी खुदखुदा बनगये, सृष्टि दरने और वेद बनाने
के उमय हम एकही खतल्च थे पर वृष्टिका और वेदों
का नाश करनेको करोड़ों ब्रह्म बनगये हैं, आब तो हम
केवल क्षियोंकी कसम खानेको ही रह गये हैं और
देखिये जो हमारे भक्त बननेका दम भरते हैं वही हमको
गाली देते हैं, महावराहो गोविन्दः (विष्णु
सहस्र नाम) अर्थात् विष्णु बड़ा वराह है कहिये किसे
ग्रन्त है जो आप का सभापति बनके गाली लाय ।

विष्णु भगवान्की बातदो बुनके भोलानाथ शङ्खर
जी हंसते २ खड़ेसुये और मुश्कराके कहने लगे कि गाली
से दयों घबड़ते हो ? १६१०८ पटरानी और मनोहारिणी-
बुज बनिताओंका रसास्वादनभी तो आप को ही क-
राया गया, क्या २ कड़ुये २ थू और भीटे भीठे गप दी
कहावतको चरितार्थ करना चाहते हैं ! रास करते वक्त
तो छः महीनेकी रात फर दी और कुछभी न खर्माये पर
आब जरादेर तक्कको सभापति बनते आपकी नानी मरती
है, क्या गोपियोंका यह गीत अच्छा लगता था कि-

एण्डणार्पितन्ते यदान्बुजश् ।

कृष्णकुचेषुनश्चाक्षुच्छयश् ॥

और प्रेमातुर भक्तोंके सुखसे महावराह शब्दको
सुन के कान कटे पड़ते हैं । कैलाशवासी शश्मि को बात
की सुनके सरस्वती देवीके पिता श्री ब्रह्माजी खड़ेहो
के बोले, चूंकि विष्णु के दोषों पर इस सभामें विचार
किया जायगा लिहाजा विष्णुको सभापति बनाना मु-
नासिव नहीं है मेरी राय नाकिस में आजको सभा में
भी देवराज इन्द्रही सभापतिके आसन को ग्रहण करें ।

अनेक बादानुवाद तथा अनुमोदन प्रमोदन होनेके
पश्चात् देवराज इन्द्रने सभापतिका आसन ग्रहण किया
जिस समय इन्द्र व्याख्यान देनेको खड़े हुए उस समय
चियर्स और करतालिकी ध्वनि से टौमहाल गूंज उठा ।

सभापतिका व्याख्यान ।

देववृन्द ! आप लोगोंने जो मुझे इस महती देव
सभाका प्रधान बनाया यह आप लोगोंने भेरे आफि-
शियल रैंकका भान्य बढ़ाके अपनी नियमवर्त्तिता का
अपूर्व परिचय दिया है, इस महती सभाके सहायितेशन
का उद्देश्य यह है कि सर्वतोक के निवासियोंने जो
देवता लोगों पर सहस्रों दोष लगाये हैं और धोखा घड़ी
लगा रखी है इससे हम लोगोंका ही अपमान नहीं
होता है वरन् परस कृपालु परमेश्वरका भी पूरा अप-
मान होता है भेरे तो पूरे परिवारको ही पुराया बनाने
वालोंने चोर और व्यभिचारी लिख दिया है । नुसिंह-
पुरायके २८ अध्यायमें भेरे पुन्न जयन्तकुमार द्वारा लिखा

है कि राजा शान्तमुने एक वृन्दावन बसाये जो अत्यन्त मनोहर बाग बनाया था उसके फूलोंको मेरा पुत्र चुरा लाता था, एक दिन मालीने मेरे पुत्रको फूल चुराते देखा और नृसिंहकी स्वप्न प्राप्तिआज्ञासे हीबरोंपर नृसिंहका निष्पाल्य छिड़क दिया उसके लांघनेसे जयन्तकुमार ऐसा शक्तिहीन होगया कि वह रथ पर न चढ़ सका तब सारथीके उपदेश से वृन्दावनमें १२ वर्ष रहा और ब्राह्मणोंका उच्छिष्टबटोरता रहा तब उसके शरीर में शक्ति आई । भला इस कथाके बमानेवालोंसे कोई पूछे कि जब यवनोंने भारत पर आक्रमण किया और देवनन्दिरोंको तोड़ा खास नृसिंहकी अनेक मूर्त्तियोंको तोड़ के फेंक दिया तब व्या नृसिंहका निष्पाल्य नहीं रहा था? जो भारतकी सीमा पर छिड़क देते और उसको नांघने से सब यवन शक्तिहीन हो पाते, इसके अतिरिक्त उसही नृसिंहपुराणके ४३ अध्याय में मुझे द्यमिचारी लिखा है, जब हिरण्यकश्यप तपश्चर्या करने गया था (तब इन्द्र उस की गर्भवती दीको उठाके लेगया और उससे द्यमिचार करना चाहा तब नारदने इन्द्रको समझाया और कहा कि यह गर्भवती है उसके उदर में परम भागवत है) क्या मैं ऐसा अज्ञानी था कि इतना भी न समझता था कि यह गर्भवती है, खैर यह तो कुछ बड़ी निन्दा ही नहीं है मुझसे बढ़के विष्णु को लूल बनाया है एक जगह तो लिखा है कि सब देवतोंके कहने से भूग्र ऋषिने विष्णुके वज्ज्वल में लात मारी परन्तु-

विष्णु भगवान्‌की ऐसी शान्ति बड़ी कि भृगुके पदको दाखने लगे और कहने लगे आपके कमल सम कीमल पदोंके मेरे कठोर वक्तव्यलकी बड़ी चोट लगी होगी दूसरी जगह (भविष्यपुराणाप्त अध्याय) लिखा है कि विष्णु महाराजने भृगुकी खींका चक्के सिर काट डाला, कहिये तो उस समय वह शान्ति विष्णुकी कहाँ को उड़ गई थी जो अवध्य ब्राह्मणीको भी मार डाला और इसहीका यह फल मिला कि अब विष्णुको बराबर अवतार लेना पड़ता है मैं सत्य कहता हूँ कि जब से ऐसी ऐसी फालसरिपोर्ट मेरे आफिसमें आने लगी तब से मेरा दम्फर भी गन्दा होगया मैं सत्य कहता हूँ कि मुझे अब इन रिपोर्टों पर तनक भी विश्वास नहीं रहा है, जो दान धर्म दानपात्रके उपकारार्थ था वह अब दिल्ली भान्न रह गया है, गोदान केवल इस वास्तेथा कि वेदाभ्यासी ब्रह्मचारीके निश्चक्ष शरीरमें शक्तिका संचार हो परन्तु स्वार्थान्ध लोगोंने सुवर्ण धेनु हीरे के दांत लगाके (भविष्य पुश्तत्तरादृ १३७ अध्याय भविष्य १३८ अध्याय भविष्य ३० १६० अध्याय) दान करना लिखा है । फिर उससे भी बढ़के रत्धेनु के दान का माहात्म्य लिखा है यदि वास्तवमें सुवर्णधनु को गौही समझा जाता है तो उसके अङ्ग प्रत्यङ्गको बेचकर खाना क्या नहापाप नहीं है? और आश्चर्य सुनिये शूकरकाभी दान करना लिखा है अर्थात् तिलका शूकर बनाके दान करें इस दानका ऐसा माहात्म्य लिखा है कि इस दान

का करनेवाला अपने पुत्र कलन्न और मित्रों सहित स्वर्गको
चाँजाय ! सोचिये तो सही कि जो मनुष्य असलीशूकर
का दान करें वहतो स्वर्गसेभी १० हाथ ऊंचा चला जाय ।

तीर्थोंके सहात्मयोंका जहां वर्णन किया है वहां
तो हास्यरसका अन्त ही कर दिया है मैंने स्वयम् अपने
नेत्रोंसे देखा है कि प्रयागराजके माहात्म्यमें लिखा है
कि जो मनुष्य ऊपरको दैर और नीचेको सिर करके
गंगा और यमुनाके संगममें आचमन करे तो १००००००
वर्ष तक स्वर्गमें सुख भोगे (देखो कूर्मपुराण) महाशय
बृन्द ! मैं कहां तक कहूँ इन फाल्सरिटोंमें देवतोंकी
ऐसी बुराई लिखी है कि जिनको सुनते भी हँसी आती
है गलेशको लम्बोदर और हाथीसे सिर युक्त लिखकर
फिर चूहेकी सवारी लिख दी है भला कहिये तो हाथों
की सवारी चूही क्यों कर हो सकती है । ।

प्रिय देवबृन्द ! अर्ज कल जो भारतवासियों पर
स्वार्थों जनोंने टैक्स लगा रखे हैं उनके विषय में मैं
केवल एक दृष्टान्त देके अपने व्याख्यानको समाप्त करूँगा

दृष्टान्त यह है कि एक उजबक नगर नामक शहर
में एक गवरगरडसिंह नामक राजा था वह राजा अप-
ने नामके अनुसार ऐसा मूर्ख और आलसी था कि उस
के अमले और ध्यादे मनमाने कार्य करते थे परन्तु व-
ह इतनाभी नहीं जानता था कि मेरे राज्यमें कितने
ग्राम हैं और उनका शासन कौन करता है एक दिन
उसकी राजधानीमें किसी और राज्यका एक मनुष्य

चीव बैंचनेको आया परन्तु वाजारतक जाते आते उ-
स का सम्पूर्ण चीव कर अर्थात् ड्युटी (महसूल) में ही
उड़ गया कहीं राजाका कर कहीं युवराजका कर कहीं
रानी का कर कहीं राजमाता का कर कहीं राज-
भाता का कर कहीं मन्त्री और कहीं उपमन्त्री आदि
का कर लेते जब उब व्यापारीके ऊपड़े तकभी सिपाहियों
ने छोन लिये तब वह रोता हुआ राजके पास गया। प-
रन्तु राजाने उसको धक्के देके निकलत्र दिया तब उ-
सने समझा कि इस राज्यमें अन्धेर है अतएव मैं भी अनधरमें
श्रपना कार्य सिद्धकर सकता हूँ वस वहभी इस शानके पास
जा बैठा और जो मुर्दा उधर आवे उसके ही साथियों
से कहे कि हमारा १।) ८० राज करके नामसे पहिले दे-
दो तब ग्रेटकी किया करो जब उससे कोई पूछे कि तुम
कौन हो तबही वह कह दे कि हम राणीके शाले हैं-
अनेक वर्षों तक वह इस ही रीतिसे कर लेता रहा कुछ
कालके अनन्तर गवरणरडसिंह राजाकी माताभी मर्दी
और स्वयं राजा साहिब इस शानमें गये और राणीके
सालेका नाम सुनके बहुत चकित हुए जब १।) ८२ उ-
स का कर देके आगे बढ़े तब अवसर पाके राणी साहि-
बा ने राजासे पूछा कि आपने किसको कर दिया आप
तो स्वयं राजा हैं राजाने कहा कि यह राणीके साले
का कर दिया जाता है रानी ने हँस के कहा
कि सियोंके साले नहीं होते हैं आप समझ के बात
लीजिये राजाने कोधके साथ उत्तर दिया कि इस

आत्मो तो एमभी जानते हैं कि स्त्रियोंके साले नहीं होते परन्तु सनातनधर्मकी रीतिजो मेंटनाभी तो पाप है देववृन्द ! आजशस्त्र दान की भी यही दुर्दशा जगत् में हो रही है कोई मृत्युज्ञयके जपसे अमर होना चाहता है कोई शनैश्चर और केतुके मुजाबरको थोड़ाशा लोहा वा तिल उड्ड देके शरीरको अग्र और निरोग बनाना चाहता है कोई दो चार रूपये की छांदी दे के अपने कर्म फलको उल्लंघन करके ईश्वरके नियम को भङ्ग करनेकी चेष्टा कर रहा है मुक्तिके विषयमें भी संसारी जनोंकी यही दशा है जिन लोगोंने रिश्वत ले ले के जन्म भर शराबखोरी और सीने जोरी की है वह भी ईसामसीष की शरणमें आके मुक्तिको मुंह बाय रहे हैं ऐसे ही खुदाके मञ्चलूकको खालमें निलाके और मुह-मन्दके मुहताज बनके नजात पानेको उत्सुक होरहे हैं परन्तु परमेश्वर पर भी विश्वास नहीं है और न सुकर्मों का भरोसा है सुतराम् हम लोगोंको अब ऐसा उद्योग करना चाहिये जिससे जगत्में ईश्वरकी भक्ति बढ़े और मनुष्योंकी अद्वा सत्य धर्ममें बढ़े यदि अब भी हम लोग आलस्य करेंगे तो जगत्में नास्तिक और आस्तिका-भासोंका ही प्रस्ताव फैल जायगा, और सत्य धर्मनाममात्र को भी न रहेगा, मैं चाहता हूँ कि आपको सभामें सभ लोग स्वतन्त्र भावसे अपनी २ राय प्रकाशित करें ।

समापति के अवस्थानानन्तर देवर्षि नारद खड़े हो के कहने लगे चूंकि पुराण वालोंने मेरी असीम निन्दा-

की है लिहाजामें प्रस्ताव करता हूँ कि पुराण (ब्रह्मवै-
वर्त्तादि) और मेरे नामको कलद्वित करने वाले नारद
पंचरात्रादि पुस्तक रट्टी खानेमें फेंक दिये जायं मैं शपथ
पूर्वक कहता हूँ कि मैंने उन पुस्तकोंको हर्गिज नहीं ब-
नाया भला मुझे क्या ज़हरत थी कि मैं षट्कोषी भत
का प्रतिपादन और शैवादिमतों का खदडन करता
न मैं रिश्वतखोर हूँ कि डोम आदि नीचोंसे कुछ धन
ले के किसी आधुनिक पुस्तक पर अपनी मुहरकर देता
देवीभागवत्के बनाने वाले ने जो अकारण मुझ पर
दोष लगाये हैं वह अवश्य ही आप लोगोंने सुने होंगे
(द० भा० स्कन्द ६ आ० २८, २९, व ३०) देखिये तो मुझे
विष्णु ने कैसा धोखा दिया कि मेरे कपड़े लत्ते और
बीन आदि ले के भाग गये और मैं तालाबमें स्नान क-
रता ही रह गया जब मैं तालाब में से निकला तब ली
हो गया फिर राजा तालध्वज से मेरा विवाह हुआ
देखिये तो क्या लाल बुफ़क़ड़ी कथा है ? देवी भागवत्
वालेको मेरी इतनी ही निन्दा करनेसे सन्तोष नहीं हुआ
बल्कि और भी अपूर्वकथा लिख डाली, उस में तो मुझे
बन्दर ही बना दिया है, उसमें भी राजा सञ्चय की
कन्या से मेरा विवाह करा दिया है सोचिये तो सही
कि मैं देवर्षि हो के मानुषी से विवाह क्यों करता ।

देवदन्द ! आप लोगों ने यह न सुना होगा कि
हमारे सभापति देवराज भी एक बार बैल बने थे (द०
भा० दद० ७ आ० ९) राजा ककुत्स्य जब देवतों की

ग्रार्थनालो सुनके दैत्योंसे लड़नेको चले तब उन्होंने कहा कि यदि इन्द्र हमारे बाहन बनें तो हम दैत्योंसे लड़ें भला, कहिये तो कितनी गली है कि जिन इन्द्र महाराजको विष्णु आदि सब ही राजा मानते हैं उन को ही बैल लिख दिया और मुझे तो पुराणवालों ने डाक का थैला और लड़ाई कराने का औजार व चुग-लखोर नियतकर दिया है इस कारण मैं प्रस्तावकरता हूँ कि पुराणों को मन्मूख कर दिया जाय ।

इस प्रस्तावको महर्षि पराशरने अनुसोदन करते समय कहा कि वेशक पुराणोंको मन्मूख कर देना चाहिये क्योंकि इन पुराणोंमें हजारों ब ते असम्भव लिखी हैं भेरे परिवारको और मुझे जैसे वाहियात दोष पुराणवालोंने लगाये हैं उन को मैं फिर वर्णन करूँगा किन्तु अब एक ऐसी गाथाका वर्णन करता हूँ जिसको सुनके आपसब लोगकई दिनतक हस्ते रहेंगे । देवोभागवत सप्तमस्कन्ध ८ अध्याय में लिखा है कि राजा यौवना-श्वके १०० द्वीर्घी थीं परन्तु पुन्र किसीके नहीं था इस से राजा को अत्यन्त चिन्ता रहती थी, इस ही चिन्ता से व्याकुल हो के राजा यौवनाश्व ब्रनको चले गये और वहां अनेक महर्षियोंसे कहा कि मेरे सन्तति नहीं है अतएव आप लोग ऐसा यत्न कीजिये जिससे मेरे पुत्र हो ऋषियोंने सन्तान प्राप्ति के वास्ते यज्ञ आरम्भ किया, ऋषियोंने जो मन्त्रोंसे अभिमन्त्रित करके जल से पूर्णघट स्थापन किया था वह इस अभिप्रायसे था

कि जो नारी इस जल को पान करे उसके अवश्य हीं पुत्र हो, एक दिन रात्रिमें राजा यौवनाश्वरो अहुत प्यास लगी और उन्होंने उस ही यज्ञकलश के जलको भूल से पी लिया प्रातःकाल जब यज्ञकर्ता ब्राह्मणोंने कलशको खाली देखा तो राजा से पैदा कि वह जल कहां गया तब राजा ने कहा कि वह जल मैंने पी लिया इसबात को सुनके सबने कहा कि तुम्हारे अवश्य पुत्र होगा उस जल के प्रताप से राजा के गर्भ रहा, जब १० महीने पूरे हुए तब राजा यौवनाश्वरके पेटको छीके बालक निकाला गया तब राजाके मन्त्रीने कहा “मान्धाता” यह बालक किसका दूध पियेगा तबही देवराज इन्द्र ने आके कहा कि “मान्धाता” मेरा दूध पियेगा इसही कारण उसका नाम मान्धाता रखा। देववृन्द ! कहिये यह कथा क्या इस पहेलीको चितार्थ नहीं करती है कि

सास कुंवारी बहू पेटसे ननद पंजीरी खाय ।

देखनवाली लड़का जन्में बांफिन दूध पिलाय ॥

क्या यह जाफर जटहसीका दिस्सा नहीं है भला विचारिये तो कि जिस गर्भाशयको मनुष्यों के पेट में ईश्वरने ही नहीं रखा उसको मन्त्रके पानी ने क्यों कर बना दिया ? यदि अर्भनन्त्रित पानीमें यह शक्ति थी तो राजाके स्तनमें दूध क्यों नहीं उत्पन्न करदिया वास्तवमें इन लालबुफ़क़ड़ी कथाओंने देश भाषा को और वेदोंको बड़ाही बदनाम कर रखा है ।

देववन्द ! इन पुराणोंने मेरे दादा बशिष्ठ के ही हमारे कुलको धलद्वित घरना आरम्भ किया है लिखा है कि बशिष्ठ विश्वामित्रसे लट्टनेको बगुला बन गये और लिखा है कि उन्होंने ऐसी दृष्टि करी कि आपने नौपुत्रों की मरवा के तब विश्वामित्रको ब्रह्मचिं कहा फिर मेरी (माताके गर्भमें) वेद पाठ करना लिखा है क्या यह सम्भव है कि कोई मनुष्य गर्भ में मुख खोल सके ? यदि गर्भमें मुँह खुल जाय तो माता के गर्भ के मल वालकके मुखमें भर जाय । ईश्वरने गर्भस्थ वालक की पुष्टि के बास्ते यही नियम कर दिया है कि वालक का मुख बन्द रहे और नाभि की नालके द्वारा माता के भक्षण किये अन्नादिका रस वालकके उदरमें जाय अम्ल अब एक और अद्भुत बात सुनिये कि मैं परम धर्मज्ञ और वेदज्ञ होके भी अविवाहित मत्स्यगन्धा पर मोहित हो गया (देवी भागवत द्वितीय स्कन्ध द्वितीय अध्याय) और अपनी कामवृत्तिको दिन ही मैं चरितार्थ करनेको मैंने कुहिरा उत्पन्न किया आप सब जानते हैं कि कुहिरे का नाम वेदोंमें भी लिखा है (नीहा रेण प्रावता उक्यशाश्वरन्ति) इसके अतिरिक्त कुहिरा केवल उस बाध्यका नाम है जो सूर्य की किरणों के द्वारा पृथिवीसे आकाशको जाती है और जबसे सूर्य तथा पृथिवी और जल बने हैं तबसे ही कुहिरा भी बना है भला मैं उसको क्यों करवनाता फिर मेरे जन्म से भी पूर्वकी अनेक कथाओंमें भी कुहिरे का नाम

आहा है जिस समस्यगमन्वाले मेरे ध्यभिचारकी कथा लि-
यी है अब उसके जन्मदा अद्भुत हाल खुनिये जिसको
जुनके आप लोगों की भी भ्रुद्धि चकरा जायगी देवी
भागदत के प्रथम स्फन्दशी प्रथम अध्यायमें ही यह अस
रभव कथा लिखी है कि राजा उपरिचर की गिरिका
नालनी भार्या जिस दिन अतुरुनाता थी उस दिन उप
रिचरके पिताने उन्हें शिकार खेलनेके बास्ते बन को
आने की आज्ञा दी राजा उपरिचर पिता की आज्ञा
को परमधर्म समझके बनको गये परन्तु उनको अ-
पनी अतुरुनाता भार्याका स्मरण रहा इस कारण बन
लें उनका बीर्य ससलित मुआ राजाने उस बीर्य को
बटपत्रके दीनेमें रखके आपने एकांशसे कहा कि इस
बीर्यको मेरी छोटी के पास ले जाओ एससे अवश्य पुत्र
उत्पन्न होगा उपरिचरके बाजने जब उस बीर्य युक्त
दोने को लेके आकाश नार्मसे गमन किया तब और
बाजों ने समझा कि यह भांस लिये जाता है तब और
दाघ उससे छीनने को आये इस कारण बाजोंमें खूब
युक्त मुआ वह दोना यमुना जी से गिर गया उस
दोनेके बीर्यको एक नद्वी (आद्रिका जो आप से
नद्वी तो गई थी) द्वा गई उसको एक मछुआने पकड़
की जीरा तो उसके पैटसे एक पुत्र और एक जन्मा उ-
त्पन्न हुए नद्वी उन दोनों घालकोंपी राजा उपरिचर
के चाल ले गया राजा उपरिचरने लड़कोंको आपने छूप
पाए देखते ही लिया और दल्लापी उचाही जमुके दो

दे दिया बही मछरी के पेटका लड़का राजसत्त्व हुआ
और कन्या व्यासकी भाता उत्थवती हुई कहिये आप
लोगों ने कभी ऐसी लालशुक्रहड़ी कथा खुनीं थीं ?
कथा अश्विनीकुमार और धन्वन्तरि का यह कहना
नियम है कि बालकों आगेक प्रत्यक्ष भाता के रज से
अमते हैं, यदि भान भी लिया जाय कि राजा उपरिच-
रका वीर्य अभोय था तो उसने रज किसका और क्यों
कर मिला ? यदि, कहाजाय कि मछरीका रज मिलगया
होगा तो भी अपुरुष है क्योंकि जिनके अहड़े उत्पन्न होते
हैं उनके गर्भाशयमें उष प्रकारका रज नहीं होता जैसे
जायुज स्त्रियोंके होता है । इसके अतिरिक्त अहड़न
स्त्रियोंका गर्भाशय भी भिन्न रीतिका होता है वह न-
नृथ के बा गधे के वीर्य का धारण नहीं करसकी है,
चकित्सा शास्त्रमें जो शर्तीरकी रचनाका वर्णन लिखा
है उसके दृष्टिकोण स्पष्ट जान पड़ता है कि मुखके सर्वं
वे गर्भमें गदा वीर्य स्त्री के उष स्याममें नहीं पहुंच
सका है जहाँ पहुंचनेसे गर्भोधान होता है ।

सैर हमारी तो हुदंशाकी ही थी परन्तु व्यासकी
भी वह हुदंशा की है जिस को सुनके भट्टजन अशान्त
होजाते हैं, व्यासको दासी पुत्र लिलके फिर लिखा है
कि उन्होंने १०० वर्ष शिवकी आराधना करके पुत्र होने
का वर पाया, परन्तु व्यासके घर खी तो थी ही नहीं
जो पुत्र होता एक दिन प्रातःकाल व्यास जी अग्निहोत्र
करनेके बासने अग्नि उत्पन्न करनेको अरणी भव रहेथे

उसही समय घृताची अप्सरा उधर आ बिकली, उसे देख कर व्याख्या कानातुर हुए परन्तु नम्में ठियभिचार कर्म से उरे और नम्में उक्ष चिन्ता करने लगे, व्यास मुनिको चिन्तातुर देखके घृताची भी घबड़ाई और भयसे शुक्री (शुग्नी, सौती) बनके भागी व्याख्या शुक्रीको देख-कर अत्यन्त विशिष्ट हुए और अप्सराका ध्यान करने लगे तब उनका बीर्ये अरणी पर पतित हुआ और उस से ही शुकदेव (लकड़ी) से उत्पन्न होगये। देवकून्द ! वि-चार (देवी भागवत प्रथमस्फलन्ध अध्याय १४) कर देखिये कि इस भहा लालशुकड़ी कथामें कैसी गप्प नाही है कि लकड़ीसे ही पुत्र उत्पन्न होगया, एक और भी शुक्रे आशचर्य है कि जिस श्रीमद्भागवतको पौराणिक लोग पु-राणों का शिरोमणि भानते हीं उसमें शुकदेव का विवा-हादि कुछ नहीं लिखा परन्तु हजारों व्यासण अपनेको वशिष्ठगोत्री बतलाते हैं जब कि शुकदेवका वंशही नहीं चला और व्यासके भी दूसरी सन्तान नहीं थी तब जगत् में वशिष्ठ का गोत्र कहां से आया ? स्था विना भाता पिताजे भी पुराण वाले किसीकी उत्पत्ति कलियुग में भानने लगे हैं परन्तु देवी भागवतमें शुकदेवका विवाह पीवरी खी के साथ लिखा है और उससे कृष्ण, गौरग्रन्थ भूरितथा देवश्रुत नामक ४ पुत्रोंकी उत्पत्ति लिखी है। इस नहीं जानते कि पुराणोंमें परस्पर क्यों विरोध है ? पुराण वालोंने हमारे बंश पर एक तो कृपा की है कि शुकदेवको कोई दोष नहीं लगाया, परन्तु “जबपर्सेदादा-

तो किस गिनतीमें पिर पोते रहे” इस कहावतके अनुसार हमारे कुल भर को ही कलङ्कित बना दिया है।

सभ्य महाशयो ! मैंने आप लोगोंको बहुत देर तक कष्ट दिया, परन्तु अब मैं केवल एक बात कहके अपने व्याख्यानको समाप्त करूँगा आजकलके सन्यासी अपनी गुह परम्परा में कहते हैं ।

नारायणं पद्मनभवं वशिष्ठम् ।

शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च ॥

व्यासंशुक्लौडपादंमहान्तं ।

गोविन्दयोगीन्द्रमधार्यशिष्यम्

श्रीशङ्कराचार्यस्थार्यपदम् ।

पादं च हस्तामलकं चशिष्यन्तनोटकं वार्त्तिकका-
रमन्या, नस्मद्गुरुन्सनातसानतीस्मि ।

कि शुकदेवके शिष्य गौडपादाचार्य, गौडपाद के शिष्य गोविन्दाचार्य गोविन्दाचार्यके शिष्य श्री शङ्कराचार्य हुए परन्तु इन सबके समयको लिलाने से यह बात सत्य नहीं भालूम होती क्योंकि शुकदेवका स्वर्गवा-
य पारहठवोंके जन्मसे भी ५० सौ वर्ष पूर्व ही हो चुका
था और गोविन्दाचार्य तथा शङ्कराचार्यका जन्म बुद्ध-
देवके समयसे सैकड़ों वर्ष पश्चात हुआ था तब गौडपा-
दाचार्यका शुकदेवके समयमें होना क्योंकर सिंह हो-
सकता है ? गौडपादाचार्यकी कलियुगमें भी कई सहस्र
वर्षकी अवस्थाका होना वेदों से तो विद्ह ही है
किन्तु कलियुग के राजधर्मे पुराणोंसे भी निषिद्ध है ।

महर्षि पराशरके स्पीच(व्याख्यान)को बढ़ता हुआ देखे। कर और सभापति लड़े होके कहने लगे कि महर्षि! पराशर ! आपको यह अधिकार नहीं है कि आप सन्यासियोंके विषयमें भी कुछ कहें क्योंकि इस विषय में इत्ताजीय तथा शंकराचार्य स्वयम् वर्णन करने को उपस्थित हैं। मेरी सम्मतिमें अब पश्चदेवों में से किसीको अपनी सम्मति प्रकाशित करनी चाहिये ।

सभापतिकी बातको लुनके स्वयम् भगवान् विष्णु हँसते हँसते लड़े हुए और इस प्रकारसे कहने लगे, सम्भवन्द ! इस नहनी सभामें जी कुछ मैं कहूंगा उसे आप लोग दिक् प्रदर्शन वा नमूना भाव समझियेगा क्योंकि संसारके कृतप्रेरणोंने सुके सुक काठ वा पुतला समझ रखदा है और मेरे नामसे स्वयम् विषय भोग करते लज्जित नहीं होते, भला यह कौन इनसाफकी बात है कि जिसको उपास्य देव वा देवी समर्कों उसको ही रास में नचावें, किर मेरे नाम से लन्दिरों में वेश्याओं को नचावें और व्यभिचार करें, अपने अपने हठ को पूरा करने के बास्ते विषयी लोगोंने सुभेद्रनाम कर रखदा है, कोई कहता है कि विष्णु गोलोकमें रहते हैं और गोलोक में सिवाय विष्णु के सम्पूर्ण स्थियां रहती हैं कोई कहता है कि विष्णु देव्यों को भारतके बास्ते संदेव अवतार लिया करते हैं जिन ननुष्योंको वह मेरा अवतार बतलाते हैं उन सहात्माओंके जीवनचरित्रोंकी सृष्टिका विस्तु बातों से भर देते हैं, ऐर अवतारोंकी

कथाओं को मैं किर कहूँगा, प्रथम अपनी ही दुर्दशाकी सुनाता हूँ, सब ही लोग मुझे मधुसूदन और कैटभारि कहते हैं परन्तु मधुकैटभ के सारने के समय न नालूक मुझे किस २ का उपासक पुराणवालों ने बना दिया है। गणेश पुराण के १७ और १८ अध्याय में लिखा है कि जब मैं मधु और कैटभ नासक दैत्यों से लड़ता २ थक गया और वह न मरे तब मैंने गन्धर्वका रूप धारण किया मैंने जो बनमें जाके बीन बजाई और गाया उस से शिव महाराज बड़े प्रसन्न हुए और अपने दूतके द्वारा मुझे अपने पास लुकाया और ऐसे गानेको सुनके बड़े प्रसन्न होके बर देनेको तैयार हुए मुझसे तब मधुकैटभ की कथाको सुनको शिव महाराज बोले कि तुमने गणेश की पूजा नहीं की थी इससे ही तुम्हारा विजय नहीं हुआ अब मैं तुमको गणेशका मन्त्र बताता हूँ उसको जपने से गणेश उस पर प्रसन्न होंगे और उससे ही तुम को विजय प्राप्त होगा। शिवने यह भी कहा कि गणेश के ३०००००००० मन्त्र हैं मैं उनमें से षड्क्षर मन्त्र तुम को उपदेश करता हूँ मैंने शिवसे उस मन्त्रको यहां को के १०० वर्ष तक जपा तब गणेशजी ने प्रत्यक्ष होके दर्शन दिये, देखिये तो यह गणेश जी और शिवजी कैसे धीखे बाज हैं कि जब मेरे गीत सुनने को शिवजी ने मुझे अपने पात लुकाया था उस समय गणेशजी वहीं मौजूद थे परन्तु वहां पर उनसे बरग दिया गया फिर जो गणेशजी भेरे जपर मिहर्वानी करनेको १०० वर्ष के बाद

आये थे उनके रूपका तेज ३०००००००० शूर्यों के समान लिखा है भला विद्वारिये तो सही कि एक शूर्यके उत्ताप वे तो जगत् भर उत्तम रहता है परन्तु तीन करोड़ शूर्य के समान तेजवाले गणेशसे मैं भी न जला और न मधुकैटभ जले, गणेश पुराण में तो यह लिखा है और मार्कंडेय पुराण तथा देवी भागवतमें लिखा है कि देवों की कृपासे मैंने मधुकैटभको मारा हाँ एक बात तो मैं भूल ही गया जिन गणेश जी का मंत्र सुन्हे १०० वर्ष तक जपना पड़ा था वा यों कहिये कि जिनकी उपाधना से सुन्हे किंद्रि मिली थी' वह गणेशी कीन हैं । देव-वृन्द ! वह गणेशजी भी धावती के शरीर के मैत से चत्पक्ष हुए थे, लिखा है कि एक समय पार्वतीजी अहा हैवसे रुष होके दूसरे बनमें अली गईं थीं, उन्होंने बन में जाके अपनी रक्षा के बाहते अपने शरीरके मैत से एक मनुष्याकार पुतला बनाया और उसे सजीव करके हार पर बिठला दिया, जब अहादेव अपने गणों के सहित पार्वतीजी हूँहते हुए वहाँ आये और भीतर जाने ली तब गणेश ने उनकी रोका इस कारण घरस्पर और संग्राम हुआ उस संग्राम में अहादेवने गणेशका बिर काट हाला इस बातको देख कर पर्वती जी बड़ी चिन्तायुक्त हुईं और शिव अहाराज से कहने लगीं कि इसको लिला दो अन्यथा मैं प्राण त्याग हूँगी इस हठको उनके शिव अहाराजने अपने दूतोंको दूधर उधर भेजके गणेशके तिरको तलाश कराया

यरन्तु गणेशके सिरको प्रथम ही देवता लोग उठाके ले गये थे और चन्द्रलोकमें रखदा था अतएव महादेव के दूत एक हाथीने उठाके और उपकी जाताकी अचेत सोया हुआ देखके उस बजायेके सिरको काट लाये गिर नहाराजने उठही हाथी के बच्चे के सिर को गणेशके कथन्थ पर रख दिया और उसे जिला दिया देखिये देवतन्ह ! कैसो शर्यकिया है कि दूसरेके सिर को धड़पर रखके छू भंतर दिया और ऊट से वह जो गया यहि कहा जाय कि गिर नहाराज सर्वशक्तिमान् थे तो वहीं नहीं बिना सिरकेही गणेश को जिलाया ? ।

ऐसी हास्यारपद कथा कुछ गणेशकेही विषय में नहीं लिखी वरन् मुझे माँ देवताने एकबार ऐसे हूँ भंतरसे जिलाया था महाप्रय ! इस बात को मैं पारखाल की सब्जेष्ट कर्नीटीमें विवान कर चुका हूँ अब एक बात और लुतिये जिस गरुड़जी को मेरा वाहन बताते हैं उससे ही मेरा घोर युद्धभी लिख दिया है यह कहा नी ऐसी अद्भुत रीतिसे लिखी है कि जिसको लुनतेही हँसी आती है लिखा है कि कश्यप की सी कट्ठ (लप्पी की जाता) और विनता गरुड़की जातामें एक दिन सूर्यके घोड़के विषयमें विवाद हुआ कट्ठ कहती थी कि सूर्यके रथमें जो घोड़े जुते हैं वह काले हैं और गरुड़की जाता उनको सफेद बतलाती थी सर्व अपनी जाताकी सब्जी सिंह करनेके बास्ते सूर्य के घोड़े के शरीरमें जा सिपटे इससे वह घोड़े काले भालूम होने

लग जब अधिकता अपशके अनुसार कहुकी दाती हो।
 गई तब दासी भावके सब कार्य करने लगी एक दिन
 गरुड़ने अपनी मातासे पूछा कि तुम इसके घर दासी
 का काम क्यों किया करती हो गरुड़ की माता ने प्र-
 घटकी सब कथा कह सुनाई गरुड़ने उस कथाको सुनके
 पूछा कि कथा कोई ऐसा कार्य है जिसके करने से तुम्हारा
 दासीपन छूट जाय ? गरुड़ की माताने अपनी सौति-
 न से पूछके गरुड़से कहा कि यदि तुम अमृत लाके स-
 पाँको पिलाओ तो मैं दासीपन से मुक्त हो जाऊँ इस
 बातको सुनके गरुड़जी अमृत लानके बास्ते चले मा-
 र्गमें अपने पिताके दर्शनकी उनकी श्रद्धा हुई तब
 वह अपने पिताके पास गये और दस्तबत प्रणाम करके
 उनसे कहा कि पिता ! मुझे बुधाने बहुत चताया है,
 आप मुझे बताइये कि मैं क्या खाऊँ गरुड़ के पिताने
 कहा कि एक हीपमें शूद्रही बसते हैं तुम उन सबको
 साजाओ परन्तु खबरदार किसी ब्राह्मण को भत साना
 गरुड़ने अपने पितासे पूछा कि मैं ब्राह्मणको क्योंकर
 पहिचानूंगा उसके पिताने कहा कि जो भनुष्य तेरे पेट
 में न गले उसेही तुम ब्राह्मण समझना गरुड़ उस हीप
 में गये और समूर्ध हीपवालियोंकी चोंचमें भरके नि-
 गलने लगे उनमें ही एक ब्राह्मण भी था वह गरुड़ के
 पेटमें तो चला गया परन्तु पेट में जब न गला तब पेट
 में घोड़ासा उछलने लगा तब गरुड़ने उससे पूछा कि तू
 कौन है जो जेरे पेटमें नहीं गलता है उसने पेटमें खे-

ही उत्तर दिया कि ब्राह्मण हुं गरुड़ने उससे कहा कि उत्त पौरन मेरे पेटसे निकल आओ ब्राह्मणने कहा कि मैंने जिस कहारिनको अपनी भार्या बनाके रखा था उसको भी आप निकाल दीजिये तब मैं निकलूंगा गरुड़ ने तयारतु कहके होनीको पेटसे निकलने की आज्ञा दी इस ब्राह्मणको पातेही वह ब्राह्मण कहारिन के सहित पेटसे निकल आया गरुड़ बहां से पेट भरके जब चले तब एक बटवृक्ष पर बैठे कि जो कहै योजनका था या गरुड़के बैठनेसे उस वृक्षको शाखायें टूट पड़ी और उस दी शाखापर कई हजार बालखिलय ऋषि तप करते थे यदि गरुड़ जी उस शाखाको छोड़ देते तो वह सब ऋषि दक्षके भर जाते इस लिये गरुड़जी उस शाखाको अपने पंक्तीमें दक्षके उड़े और बहुत दिन तक उड़ते ही किरते रहे फिर अपने पितासे पूछा कि इनको मैं कहाँ रखूँ कश्यप ऋषिने कहा कि इनको अमुक पर्वत पर जाके रख दो और उनका रखके गरुड़ जी अमृत लेनेको चले उब स्वर्गमें पहुंचे तब अमृतकुरुष के रखवालोंसे और गरुड़से भयानक युद्ध हुआ फिर उन के हार आने पर तमस्त इन्द्रादिवता गरुड़ ने लड़नेको आये जब वह भी हार गये तब मुझको सबसे बुजाया और मैं भी गरुड़से लड़ने लगा जब लड़ते २मैं भी यका तब गरुड़ने प्रसन्न होके कहा कि हे विष्णु मैं तुमसे बड़ा प्रसन्न हुआ मुझसे ईपिवत वर मांगो मैंने गरुड़ से यही वर मांगा कि तूम मेरे वाहन बनो (इत्यादि) देखिये

दिववृन्द कैली असम्भव कथा है क्या हमलोग छलसे किसी की ओपने वशमें करते हैं जब कि सुझे पुराणा बाले सर्वशक्तिमान् मानते हैं तो फिर ऐसे २ ढकोचलोंसे सुझे शक्तिहीन क्यों सिहु करते हैं ? भेरे अवतारोंमें से जिस कृष्णको पूर्णावतार मानते हैं उसके विषयमें जो २ असम्भव और अश्लील कथा लिखी हैं उनका आप लोगोंके सन्मुख वर्णन करना केवल समयको नष्ट करना मात्र है तौभी दो अपूर्व कथाओंकी में अवश्य यहाँ वर्णन करूँगा आप लोगोंने सुना होगा कि कृष्णके बड़े भाई बलरामसे रेवतीका विवाह हुआ था यह रेवती महाराज रैवत की कन्या थी इस कन्याको अस्त्यन्त रुद्रवती और मुख बती देखके उसके सदान बरकी जिज्ञासा करनेकी महा राजा रैवत अपनी कन्याके बहित ब्रह्माके पास ब्रह्म लोकमें गये ब्रह्माके पास उस समय एक और मालजा पेश था इस कारण राजा रैवत वहाँ बैठ गये और ब्रह्मा से विनय करनेकी अवसरकी प्रतीक्षा करने लगे जब अवसर निला तब राजा ने ब्रह्माजी से सुधोंग्य बरसी जिज्ञासाकी ब्रह्माजी ने हँसके उत्तर दिया कि राजन् जितनी देर तुम यहाँ बैठे रहे उतनी देरमें नृत्यलोकमें अनेक युग बीत गये इस कारण तुम्हारे वशमें अब कोई भी नहीं रहा है अब तुम मीम्र बले जाओ और इस कन्याका यहुवंशीय बलरामसे विवाह कर दो ब्रह्मा की आङ्गा ले राजा रैवत मृत्युलोकमें आये और बलराम से रेवती का विवाह करदिया । वर्धों महाशय !

रेवतीका शरीर क्या पार्षिव परनायुज्ञोंका नहीं था ? जो उसको सृत्युने न धेरा, यदि यही बात थी तो अब तक व्योंग जीवित रही ? यदि यही कहिये कि ब्रह्मलोक में चलेजानेसे सृत्यु न हुई तो विना शरीर त्यागकिये ब्रह्मलोकमें जानाही क्योंकर समझ है ? सत्य तो यह है कि लाल बुफ़लड़ोंने दूसरी कथा मुचकुन्दकी भी ऐसी ही रची है कि राजा मुचकुन्द देवतोंको दैत्योंसे बचाने के निमित्त स्वर्गमें गये परन्तु यहाँ उनका कुलखण्ड हो गया, यदि यह दोनों कथा सत्य होती तो सहाराजा उपर्युक्त जब इन्होंनो सहायता देने स्वर्गमें आये ये तब ब्रह्मलोकमें उनकी ली शकुन्तला और उन का पुत्र भरत व्योंग जीता रहा था, क्यों उनके बास्ते सृत्यु का दूसरा नियम था, और सहाराजा रैवत तथा मुचकुन्द के बास्ते दूसरा नियम था ॥

देववन्द ! इन कथाओंसे ही सिंहु होता है कि वेरे अवतारोंके विषयमें भी सब नियम कथावर्ण लिखी हैं। अवतार लेनेके जो कारण पुराणवालोंने लिखे हैं वह भी हास्याशय ही हैं भला सोचिये तो कि जरासे बल वाले कंसको भारने के बास्ते यदि मुझे रवयं अवतार लेनेकी ज़हरत होती तो जित्य जगत्में कंस सरीखे करीड़ों बलवान् भरे हैं उसको प्रत्य करने के बास्ते तो मुझमें शक्ति ही नहीं होगी, किर अवतारोंका भी ठिकाना नहीं है कि कितने हुए व्योंगकि गोकुलिये गोसाई सब अपने को विष्णु का अवतार ही समझते हैं। एक

और भी आमर्यकी जात है कि श्रीनहृधारगवतमें कृष्ण को अनेक रथसोंमें सर्वश्च लिखा है और यह भी लिखा है कि कृष्णने अपने एक सानपन के ग्रेरुए पुत्रों को जिसा दिया था परन्तु उब उनके पोतेश्चनिहृष्टोदाया-
उनने अपने घरमें कैद कर लिया था तब उनको यह भी न मालूम हुआ कि ऐरा योता कहां चलागया? जब नारद ऋषिने जाके उनको सब गुप्त हस्त सुनाया तब उनको मालूम हुआ कि अनिहृष्टको बाया। उनकी कन्या ने चिन्हरेता के हारा भंगा लिया है। न मालूम उस समय कृष्णकी सर्वशक्तिमत्ता और सर्वशक्ता कहांको उड़ गई थी, हां एकदात और भी उहना में भूलगया कि, जब बालक अवस्थामें यशोदाने कृष्णको मिट्टी सानके अपराध में बांधा था उब समय कृष्णने अपने मुखमें तीनों सोक दिखा दिये थे, भला कहिये तो मुख या या हृनिधां का नक्षा था परन्तु उब हृपौधनने कृष्ण को कैद करनेका प्रबन्ध किया उब समय उब सिटीपटांग भलगई, यदि कृष्ण बादतबमें ऐरा अवतार वा सर्वश्च होते तो अपने प्यारे भानजे अभिनन्दन्यको यमराजके घर से क्यों न लौटानाते? अबलमें न कृष्ण ऐरे अवतार थे और न सद्गुरु थे ॥

जिन प्रह्लादको विष्णु का परम भक्त लिखा है और जिन को नृसिंह की दृप्या से परम विज्ञान प्राप्त होना एवम् भीहसे रहित होना भागवतादि पुराणोंमें लिखा है उनका बहरिकान्नमें रहने वाले उन नारायण के

साथ (देवी भागवत) पौर युद्ध लिखा है जिनको पुराण
बाले विद्युकों अवतार भानते हैं (भागवत सं० १ अ०
तूर्यधर्मसाधने नरनारायणाद्योभूतवात्मभोपेतमक-
रोहुश्चरन्तः) कहिये तो वह प्रमुखादकी नारायण भक्ति
कहांको छली गई, जिर जिन नृतिंहजी की सब से अ-
धिक प्रशंसा और शक्ति लिखी है उनके ही विषय में
पुराणोंके इदा गुरु आकाश भैरव तन्त्रमें लिखा है कि
जब नृसिंह जीका क्रोध किसी प्रकारसे शान्त न हुआ
तब देवतोंने शिव महाराज से जाके प्रार्थना की शिव
जी भी देवतोंको अभय दान देके उनके क्रोधको शान्त
करनेका उपाय सोचने लगे जब कोई और उपाय न
मूला तब शिव जी ने शशभशात्र व पक्षीराज का रूप
धारण किया और नृसिंह जी को पञ्चोंमें दबा के उड़
गये अनेक बर्दी तक शिवमहाराज नृसिंहको पञ्चोंमें
दबाये आकाश में फ़िरते रहे, जब नृसिंह जी घके और
घबड़ाये तब शिवकी सुतिकी यही सुति दाहय सप्तक
नाम से प्रसिद्ध है, इन शरभ जी के रूपको आप लोग
मुर्नेंगे तो और भी अकित होंगे इनका रूप यों वर्णन
किया गया है ॥

चन्द्रार्काप्रित्रिहृष्टिः कुलिश्वदनस्त्वचलात्युग्रजिहृः ।
काली हुर्गा च पक्षी हृदयजटरगी भैरवोद्वाहवाग्निः ॥
जरस्यौष्याधिमृत्सूश्रभवरखगश्चष्ठवानातिवेगः ।
संहर्तासर्वशत्रून् जयतिसशरभः शालवः पक्षिराजः ॥

अब कहिये क्या यह अवतारों के बहाने से मुझे जाली देना नहीं है ? फिर बामन के नाम से मुझे धोखे बाज और जालराज बनाया है क्या मुझे पुराज बालों ने पाश्चिंयल वा पक्षपाती समझ रखा है कि मैं इन्द्रके बास्ते पहिले छोटा सा रूप बनाके भिक्षा मांगने जाता और फिर विकट रूप बनाता और विचारे निरपराध बलिको छल के क़ैद कर देता, क्या मैं अन्यायी हूँ कि निरपराध को दशड़ देना हूँ फिर पुराज बाली यह भी कहते हैं कि बामन सदा बलिके द्वार पर पहरा दिया करते हैं क्या यह सम्भव है कि ईश्वर किसीका पहरेदार हो सकता है । खैर एक और भी बात मुझे याद आई है जब कृष्ण महाराजसे शालव लड़नेको द्वारिकामें गया था तब कृष्ण बलरामको द्वारिकाकी रक्षाके बास्ते घरपर छोड़के आप शालवसे लड़नेको आये तब घोर घनसान भच गया कृष्णको छलनेके बास्ते शालवने मायासे वसुदेवका सिर बनाया और कृष्णको दिखलाके कहने लगा कि ले मैं तेरे पिताका सिर काट लाया उस समय सिर को देखके कृष्ण महाराजके होश हवाम् गुम हो गये और रणमें मुख सोड़ के रोने लगे, बहुत देरके बाद जब घ्यान आया कि मैं बलराम को रक्षाके बास्ते छोड़ आया था और बलराम मुझे शाधारण बौर नहीं हैं जिनको शालव चख भरमें जीत लेता, इससे निश्चय होता है कि यह दानवी माया है देखिये तो कृष्णकी सर्वज्ञताको कैसा साफ उड़ा दिया है यह तो देवीभागवतकी बात हुई अब भागवत का

हाल सुनिये इस—वें लिखा है कि जब हकिमणीके गर्भ से प्रद्युम्नकी उत्पत्ति हुई तब ही सूतिका गृहसे प्रद्युम्न को कोई उठा से गया, श्रीकृष्ण पुत्रके विरहसे अत्यन्त दुःखी हुए और कई दिन तक रोते फिरते रहे परन्तु वालक का कुछ भी पता न लगा तब नारदने आके कृष्ण को समझाया कि शम्बर दैत्य तुम्हारे पुत्रको उठा के ले गया है तुम कुछ भत घड़ाओ वह खी के सहित तुमसे आके जिलेगा, खैर अन्त में ऐसा ही हुआ कि प्रद्युम्न शम्बर दैत्यको मार अपनी खी रति के सहित कई वर्ष पश्चात् श्रीकृष्ण जी के पास आया । पुराण वालोंसे कोई पूछे कि जो श्रीकृष्ण अपने गुरुपुत्रों को लानेके समय सर्वज्ञ बने थे और मेरे हुए गुरुपुत्र को यमराजके पास लेनेको गये थे वह इतना भी न जान सके कि मेरे पुत्र को कौन ले गया और न उसको लुटा के लाये, कहां तक कहां श्रवतारों के विषयमें खूब ही लीला रची है, इसके अतिरिक्त मुझे खूब ही कलह लगाये हैं जय विजय के विषय में जो कथा लिखी है वह भी हँसीसे भरी हुई है देवगण ! यह क्या हँसी की बात नहीं कि जो खयं मुक्तिदाता है उसके ही पांचदो को राक्षस बना दिया फिर—

“आप गलन्ते पारिडया यजमान भी गाले”

इस कहावत के अनुसार जय विजयके कारण मुझ भी भद्ररी और क्षुश्रा बनना पड़ा फिर हर बार उनको मुक्ति देता रहा पर वह बराबर जन्म लेते ही

रहे, महाशय ! मैं कहां तप करूँ या तो आप सोग पुराज्ञोंको खारिज कीजिये नहीं तो मैं ऐश्वर्यम से प्रसीढ़ा देता हूँ, विष्णु महाराजको और भी कुछ पहुँचा था परन्तु एक ही व्याख्यान में यह दिन व्यतीत हो जानेके थयसे उनका व्याख्यान रोका दिया गया ॥

विष्णु भगवान् के बैठते ही सूर्यनारायण खड़े हुए और कहने लगे—

देववृन्द ! मुझे आप लोग भलीभांति जानते हैं कि मैं कृष्णकर्त्ता ईश्वर की उस अहिमा को प्रकाशित करनेवाला हूँ जिससे उसकी अपूर्व कारीगरी और असीम विज्ञान का प्राणीमात्र को परिचय मिलता है, सृष्टि के आरम्भमें ही परमेश्वर ने मुझे इष्ट अभिप्राय से निर्माण किया था कि मेरे आकर्षण से अनेक लोक अपनी सीमा पर स्थित रहें परन्तु पुराणवालोंने मेरी उत्पत्ति अद्भुत प्रकारसे लिखी है। सिखा है कि कश्यप की ली अदितिके गर्भसे मेरी उत्पत्ति हुई भला कहिये तो कि यदि मैं किसी छोटीके गर्भसे उत्पन्न होता तो मेरे जन्मसे पूर्वके ननुध्य अर्थात् मेरे जाता पिता की ज्यों कर देखते, कठा वह लोग धन्य है ? इस ही प्रसङ्गमें मैं यह भी कहे देता हूँ कि पुराणदातोंने मेरे मित्र वायुदेव को भी ऐषा ही दोष सगाया है, सिखा है कि जब वायु अपनी जाताके गर्भ में थे सब एन्ड्रु उस दी जाता के गर्भमें घुस गये और वायुपदे भृत दुष्ट हो जाले जब वायुकी जाताको चेत तुच्छा तथा उसने एन्ड्रु की आप

दिया, यहाँ यह असम्भव और अश्लील बात नहीं है कि देवराज इन्होंने अपनी विमता (Step mother) के गर्भ में चले गये ? खैर मेरे विषयमें जो पुराणवालोंने लिखा है वह बिलकुल असत्य है, लिखा है कि दुर्वासा ऋषिसे कुन्तीने मन्त्र लेके मुझे मन्त्रबलसे अपने पास बुलाया यह कन्या धी मैंने उससे व्यभिचारकी इच्छा प्रकटकी जब वह सहमत न हुई तब मैंने उसे वर देके प्रसन्न किया, कहा कि तेरा कन्यापन नष्ट न होगा और तेरा पुत्र मेरे ही समान तेजस्वी होगा कुन्ती इस बात को सुनके राजी हुई और मैं जनाविलजन्म के कसूर से बरी हुआ भगर (Repe case) कन्यास्तव नष्टपा दोष तो मेरे ऊपर लग ही गया खैर ! कुन्तीके गर्भस्थापन कर मैं फिर आकाश में जा चमका और १० मासके पश्चात् कुन्तीके पुत्र उत्पन्न हुआ इस पुत्रकी उत्पत्ति भी विलक्षण ही लिखी है कि कुन्तीके कानसे वह लड़का पैदा हुआ वाह जी वाह ! क्या ही कथा गढ़ी गई है (मैं ठीक कहता हूँ कि यह कथा लाल बुफ़क्कड़ की डस कहानी के अनुसार है कि एक बार लाल बुफ़क्कड़ के घास में कोई सौदागर हाथी ले आया उसको देख के घासवासी चकित हुए और लाल बुफ़क्कड़ से पूछने लगे कि बतलाओ यह क्या है ? लाल बुफ़क्कड़ ने उत्तर दिया कि "लाल बुफ़क्कड़ बूझिया और न बूझे कोय । रात इकट्ठी हो गई या दिल्ली बाला होय । बस इस ही प्रकार से राधा पुत्रका कर्ण नाम सुनके ही कानसे पैदा होने

की कहानी गढ़ी गई है) भला कानसे भी कहों पुन्ह
उत्पन्न होते सुने हैं किर लारीफ यह है कि लोहे का
जिरह बरुतर पहिने ही उमका जन्म होना लिखा है,
क्या कोई वैद्य किसी विद्यासे सिद्ध कर सकता है कि
माताके पेटमें लोहे का जिरह बरुतर बन जाय आप
लोग खूब समझ सकते हैं कि राधेय कर्ण को क्षत्रिय
बनानेके बास्ते जो यह कथा गढ़ी गई इसमें मुझे और
पाण्डवोंकी माता कुन्तीकी बड़ा भारी दोष लगाया
है, फिर द्वायाको मेरी ल्ली लिखा है, नृसिंह पुराणके
१८ अध्याय में मेरे वंशजी अद्भुत कथा लिखी है, लिखा
है कि त्वष्टाकी कन्या संज्ञासे मेरा विवाह हुआ, जब
वह मेरे तेजको न सह सकी तब अपने पिता के पास
गई उसके पिताने यह कह के मेरे पास उसे भेजा कि
मैं सूर्यके पास आके सूर्यके तेजको कम कर दूंगा तब
फिर वह मेरे पास आई और रहने लगी उसके गर्भ से
मेरे तीन सन्तान हुईं, बैवस्वत मनु, यम और यमी नाम
की एक कन्या इसके पश्चात् संज्ञा मेरे तेज को न सह
सकी तब आप तो घोड़ी बनके उत्तर कुरु देश को चली
गई और अपनी द्वायाको मेरी ल्ली बना के घर छोड़
गई तब मुझे इतना भी ज्ञान न रहा कि यह मेरी असल
ल्ली नहीं है तब उस द्वायासे मेरे तीन सन्तान फिर
हुईं मनु शनैश्चर और तापती नामकी कन्या, द्वाया
अपनी सन्तानसे अधिक प्यार करती थी और संज्ञा की
सन्तानसे कम प्येस रहती थी इसकारण यम और यमी

मेरे मुक्तसे कहो तब मैंने छायाको समझाया पर छाथा
ने क्रोध करके घमको शाप दिया कि तू ग्रेतोंका राजा
हो और यमीको शाप दिया कि तू नदी हो जा, तब
मैंने भी छायाकी सन्तान को शाप दिया कि शनैश्चर
तू क्रूर ग्रह हो जा, और तापसी तू भी नदी हो जा
तब मैंने ध्यान करके देखा तो मालूम हुआ कि संज्ञा
घोड़ीका रूप धारणा किये उत्तर कुरु देशमें विचरती
है तब मैं भी घोड़ा बनके भागा और उससे दो पुत्र
उत्पन्न किये वही आप लोगोंके डाक्टर अश्विनी कुमार
हैं, भला कहिये तो मुझे कैसा घोड़ा बनाया है, कोई
पुराण बनाने वाले पोप से पूछे कि जब मैं घोड़ा बन
के कहे वर्ष तक उत्तर कुरु देश में रहा था तब जगत्में
प्रकाश कौन करता था, देववन्द ! मैं आपलोगोंसे प्रार्थना
करता हूँ कि इन देवकुलकलङ्घयारी पुराणा पुस्तकों को
इतिहासोंकी लिस्ट (सूचीपत्र) से अवश्य काट दीजिये

सूर्य नारायणके वचनस्ती तार्द्द भविष्य अगस्त
ने की और कहा कि पुराणोंका नाम आजसे पंच (दि-
म्बगी के अख्यार) रखें जाय क्योंकि इनमें ऐसी ही
हंसीकी बातें लिखी हैं, मेरे विषय में लिखा है कि
अगस्तका जन्म घड़ेसे हुआ और फिर लिखा है कि मैं
समुद्र को पी गया, भसा जो सुद घड़ेसे पैदा हो वह
समुद्रको द्योंकर पी सका है ? यथा घड़ेमें समुद्र समा-
वक्ता है ? यद्यु मेरे चरित्रोंको लुनिये पि दक्षिण पच
में आताचि घीर धाताचि नामद्वे दो दैत्य रएते घे—

वै सदैव द्वलसे ब्राह्मणों को निर्मन्त्रित करके बुलाने
थे और उन दैत्योंमें से एक छकरा बन जाता था और
दूसरा उसे मार के ब्राह्मणों को खिला देता था
एक दिन भेरा भी उन्होंने ने निर्मन्त्रण किया पर
यहां तो ठहरे गुरु घटटाल उसे खाके पक्षा गये किर
वह भी मारा गया इसके अनन्तर मैंने समुद्र को पिया
और सूत्रके मार्गसे निकाल दिया गोया वह भेरे लिये
इन्द्रियजुलाब था फिर विन्ध्याचल पर्वत सूर्यको रो-
कने के वास्ते ऊँचा हो जाता था तब देवतोंने मुझसे
प्रार्थनाकी मैं पर्वतके पास गया वह प्रणाम करने को
पृथिवीमें गिरा मैंने उसके सिर पर हाथ रख के कहा
कि जब तक मैं तीर्थ यात्रा करके न लौटूं तब तक तुम
ऐसे ही पड़े रहो बस मैं तो आके तारा बन गया और
विन्ध्याचल अब तक वैसे ही पढ़ा है इस कथामें प्रथम
तो मुझे धोखेबाज सिद्धु किया फिर सृष्टिकर्मिरुद्धु जड़
का चैतन्यके समान प्रणाम करना और भेरे बचन को
मानना आदि असम्भव बातें सिद्धुकी हैं द्या हम महर्षि
होके भी मांस भजण करते? समुद्रका ज्ञार होना पुराण
से जो प्राचीन पुस्तक हैं उनमें बराबर लिखा तुश्रा है
परन्तु उसको भी भेरा सूत्र लिख दिया इन कथाओंसे
हम लोगोंको बड़े दोष लगते हैं इत्याशारस इनकी ज़-
दर ही मनसूख कर देना पाहिये ।

एषके अनन्तर सांख्यशास्त्र के प्रणेता महर्षि क-
पिल खड़े हुए और कहने लगे कि मैंने जो सांख्यशास्त्र

बनाया है उसको विना विचारे और पढ़े ही भागवत में मेरे सतको प्रकाशित किया है इस कारण में भागवत बनानेवाले पर मदाख्यलत बेजा का जुर्म कायन करके नालिश करनेवाला था परन्तु अब आप लोगोंने पंचायत करके भागवतको रट्टी करने का प्रस्ताव किया है इस कारण मैं आप लोगोंको धन्यवाद देता हूँ पुराण वालों ने मुझे भी घोरोंका रक्षक लिख दिया है उन्होंने लिखा है कि जहाँ मैं तपश्चर्या करता था वहाँ राजा इन्द्र राजा सगरके अश्वमेधार्थ घोड़े हुए घोड़ेको चराके बांध गया मैं समाधिस्थ था इस कारण मुझे कुछ खबर न पड़ी जब राजा सगरके ६०००० पुत्र घोड़े को सब जगह ढूँढ़ के हार गये तब उन्होंने पृथिवीके नीचे ढूँढ़ने के अभिप्रायसे पृथिवीको खोदना आरम्भ किया उन्हीं के खोदनेसे सात चमुद्र बन गये (और जब गंगा जी आईं तब उनमें पानी भरा) पृथिवी को खोदते खोदते चनको मेरा आश्रम मिल गया तब उन्होंने मुझे पीड़ा दी उस पीड़ासे मेरी समाधि खुल गई ज्योंही मैंने उन को नजर उठाके देखा त्योंही वह सब भस्म हो गये भला कहिये क्या मैं ऐसा हत्यारा हूँ कि ६०००० मनुष्यों को मार हालता हूँ मैं लोग ऋषि क्या हुए मलकुलमौत हो गये फिर राजा प्रियव्रत के रथदी कथा इससे भी दिलच्छा लिखी है अर्थात् सूर्यकी रथदुर्दीप से जगत् में बराबर चांदना रखनेके बाहते जो जात दिन रथयम् रथयर चढ़के घूमे दे उनके प्रपाण से जात दिन तक

जगत् भर में चांदना रहा था और उनके दधके एक ही पहिये दी लीकसे सात समुद्र बन गये इनहीं राजा प्रियब्रत को ११ अरब बर्ष तक राज्य करते लिखा है सभ्यगण अब कहिये किसको सज्जा माना जाय अर्थात् राजा सगरके पुत्रोंके खोदने से समुद्र बने वा राजा प्रियब्रत के पहिये से समुद्र बने हमतो इन दोनों ही कथाओं को मिथ्या समझते हैं क्योंकि वेदोंमें लिखा है कि सृष्टि के आरम्भमें ही ईश्वर ने समुद्र को बनाया ।

महर्षि कपिलके व्याख्यान का अनुसोदनकरने को महर्षि वशिष्ठ दण्डायमान हुए और यों कहना प्रारम्भ किया । सभ्यवृन्द ! और सभापते पुराणोंके विषयमें मैं वथा कहूँ वह तो असम्भव और प्रसागशून्यकहानियोंका भरपुर है मैं महर्षि विश्वामित्र और मेरे विरोधके कारणमें लिखा है कि एक बार विश्वामित्री (जब राजा थे) बन में शिकार खेलनेको आयेमैंने उनको धर्मज्ञ राजा समझके अपने आश्रम पर निमंत्रित किया उन्होंने मेरे आश्रम पर खान पानकी जब कुछ भी सामग्री न देखी तब बड़ा आश्र्य करने लगे मैंने उनका अभिमान भङ्ग करनेको उन की महती सेना और अभात्यवर्ग के सामने ही सुरभी गौ से कहा कि तुम सबका यथायोग्य सम्मान करो मेरे बचन को सुनके सुरभी ने हुंकार छोड़ी उसके हुंकारते ही सहस्रों दास और दासी उत्पन्न होगये फिर सुरभी की हुंकारसे ही सब प्रकारके भद्र भोज्य और घोष्य तथा लेह्य पदार्थ उत्पन्न हो गये और दास दा-

विषयों ने उपके घाट धुंपा दिये इस अद्भुत शातकी
देखके गाधिसुअन विश्वामित्र बड़े घण्टित होके मुझसे
कहने लगे कि हे नहर्वे ! यह गौ तो हमारे योग्य है तुम
भिक्षुक इसे लेके क्या करोगे मैंने कहा राजन् यह ह-
मारी यज्ञ धेनु है इसको लेने की आप छूच्छा न की-
जिये, मेरे बहुत समझाने पर भी विश्वामित्र न माने
और अपना ज्ञान खल दिखाने लगे, तब मैंने कहा कि
तुम जबरदस्त हो यदि शक्ति रखते हो तो मेरी यज्ञ धेनु
को ले जाओ, विश्वामित्रने अपने सैनिकोंको आज्ञादी
कि विश्वामित्री धेनुको खोल लो जब विश्वामित्रके सेवक
मेरी गौ को खोल के ले चले तब धेनु ने मुझसे शातर
त्वर्त्ते लाय कहा कि नहर्वे मेरा क्या अपराध है जो
आप मुझे परित्याग घरते हैं मैंने पहा लुरमे ! मैं तुम्हे
परित्याग नहीं घरता हूँ वरन् राजा विश्वामित्र जबरदस्ती
तुम्हे छीनदे लिये चाता है, यदि तू अपनी रक्षा कर
सकती एो तो घर मेरे बधन पो उनके धेनु ने हुंकार
किया और उसके कोश घरते ही उसके खुरांसे लुरा-
सानी राज्ञ तपा और २ प्रधारके सहस्रों राज्ञ उत्पन्न
होगये और विश्वामित्र की सेनाए युद्ध करने लगे उन
राज्ञों ने ज्ञानान्न में विश्वामित्र की सेनाओं विध्वंस
कर दिया जब विश्वामित्र ली बब सेना मारी गई और
विश्वामित्र एकसे खड़े रह गये तब उनकी ज्ञान बल पर
अविश्वास और धरा उत्पन्न हुई और वह उसए समय
राज्य छोड़ तप घरने छनदो चले गये आप लोग

विचारिये कि वह गौ थी वा ब्रह्माकी भी दादी थी जिस के हुंकारतेही सहस्रों दैत्य पैदा होगये यदि यही बात है तो इन्द्रने वधों नहीं अपने घर में एक वैसी गौपाली जिससे क्रोई भी दैत्य दानव स्वर्ग पर चढ़ाई न कर सकते खैर एक और अद्भुत कथा सुनिये मेरे यजमानोंके साथ मेरी लड़ाईका कैसा बयान पुराणोंमें लिखा (द० भाठस्क० ६ अ०१५) राजा इद्वाकु के १२ वें पुत्र राजा निमि ने एक बार मुझे यज्ञ करने को बुलाया राजा निमि का वह यज्ञ ५००० वर्ष में पूर्ण होने वाला था परन्तु इस यज्ञसे पहिले मुझे देवराज इन्द्रने यज्ञ करने को निमंत्रित किया इस कारण मैंने राजा निमिसे कहा कि प्रथम मैं इन्द्रका यज्ञ कराय आऊं पश्चात् तुम्हारा यज्ञ कराऊंगा अभी तुम यज्ञ सत करो, राजा निमिने कहा कि मैं सब ऋषियोंको बुला चुका हूँ और सब सामग्री भी इकट्ठी कर चुका हूँ अब यज्ञको नहीं रोक सकता हूँ आप हसारे वंशके पुरोहित हैं इस कारण हमें कोइके धनके लोभ से इन्द्र के यहां तुम को जाना उचित नहीं है परन्तु मैंने राजा निमिका कहना न माना और मैं इन्द्रके यहां यज्ञ कराने चला गया तब राजा निमिने महर्षि गौतमको पुरोहित बनाके यज्ञ करलिया जब मैं इन्द्रके यज्ञको समाप्त करके ५००० वर्ष के पश्चात् राजा निमिके घर लौट के गया तब देखा कि राजा शयन करते हैं राजा के सेवकोंने राजाको न उठाया तब मुझे ऐसा क्रोध आया कि मैंने राजाको शाप

दिया कि तेरा शरीर नष्ट होजाय जब मैंने शाप दिया
 तब राजा के सेवकोंने राजाको जगाया वह जागके मेरे
 पास आया और कहने लगा कि महर्ष ! तुमने अकारण
 मुझे शाप दिया और प्रथम लोभवश मुझ यजमान के
 यज्ञ को छोड़ के इन्द्र के घर चले गये थे यदि जागता
 होता और तुम्हारे पास न आता तब अवश्य अपराधी
 होता परन्तु तुमने मुझ निद्राग्रस्तको शाप दिया इस
 कारण तुम्हारा अविवेक पूर्ण और कोधी शरीर भी नष्ट
 होजाय, राजाके शापको सुनके मैं ब्रह्माकेपास गया और
 उनसे सब वृत्तान्त सुनाया ब्रह्माने कहा तुम्हारा दूसरा
 जन्म नित्रावत्त्वक्रियहां होगा और तुम्हारा विज्ञान विनष्ट
 न होगा और मेरा दूसरा जन्म हुआ और फिर घड़से
 मेरी उत्पत्ति हुई, अब राजा निमिका हाल सुनिये उस
 का भी शरीर नष्ट हुआ परन्तु ब्रह्माके वरसे उस का
 वास समस्त मनुष्योंके नेत्रोंपर होगया, देखिये तो क्या
 दिल्ली की कथा है कि राजाका निवास सब मनुष्यों
 के नेत्रों पर होगया देखा उससे पूर्व मनुष्योंका पलक
 (निमेष) नहीं लगती थी ? यदि यही बात है तो अ-
 धर्म गौतम ने जो जीवके साधारण लक्षण लिखे हैं वह
 क्या लिया है ? महर्षि वशिष्ठ जी की बातको सुनके
 समाप्ति जी ने अपने आसनसे उठ के कहा कि अभी
 तक किसी वस्तु के अविष्टात् देवताने अपनी सम्मति
 प्रकाशित नहीं की है जिससे उस गरोह की राय भी
 जाहिर हो, लिहाजा अब किसी गरीहके देवताको अ-

आपनी सम्मति प्रकाशित करनी चाहिये श्रीमान् सभापति
जी की आङ्गाको लुन के सब नदियोंके अधिपति श्री-
मान् सुदृदेव खड़े हुए और कहने लगे कि—

सभासद्वृन्द ! पुराण बालोंने जो मेरी दुर्दशा की
है वह अकथनीय है, आप लोगोंने मेरे मध्यनेकी कहानी
को अवश्य सुना होगा ? देखिये तो कैसा वाहियात फ-
गड़ा भवाया है कि मेरे मध्यने के बास्ते मेरे पर्वत को
उठाके देवतों ने मेरे बीचमें डाल दिया फिर सर्पराज
बालुकी को नेती (रस्सी) बनाके धर्टीके साथ उभाया
उस घुमानेमें भी विष्णुने चालांकी की कि देवतों को
सर्पराजके मुखकी और खड़ा किया और देवतोंको पूछ
की और खड़ा किया जिससे सर्पका विष दैत्योंको ही
चढ़े और देवता उससे बचे रहे खेर यहभी चालांकी च-
मत्कारिणी और हितकारिणी न हुई और न सर्पने काटा
तब जो २ चीज अच्छी २ निकली वह देवतोंको मिलती
गई और तुरी २ चीजें विचारे दैत्यों को दीं उच्चब्रवा
घोड़ा तो खुद देवराजने हथिया लिया लहसी विष्णुको
पसन्द हुई और नरे विचारे भोलानाथ कि विष उनको
पीनापड़ा फिर जब मदिरा निकली तबतो वह दिल्लगी
हुई कि भाँड़ोंको भी नात कर दिया दैत्योंके छलने
के बास्ते स्वयम् विष्णुभगवान्को भोहिनी रूप धारण
करना पड़ा उस रूप को देखके हसारे भोलानाथ जी
ऐसे बहंके कि विष्णुकी भी छकड़ी भूल गई उन की
पिरड छुड़ाना कठिन होगया । खेर विष्णुने उसही

लोहिनी रूपसे दैत्योंको कुलके देवतोंको अमृत पिलाया
भला सौचिपे तो कि खारी पानीमें अमृत कहांसे आया
को भी अगस्त ऋषिके मूत्रमें । देवबुन्द ! क्या पुराणावालों
ने आप लोगोंको यह गाली नहीं दी है कि अगस्त ऋषि
के पीशाबसे मेरी उत्पत्ति लिखी और उससे उत्पन्न हुए
अमृतको आप लोगों को पान कराया फिर यह भी
विचारनेकी बात है कि मुझमें क्या किसीने गुड़ वा
महुआ घोल रखे थे जो मुझमें से शराब निकल आई
इसके अतिरिक्त जिन धन्वन्तरिके पिता दीर्घतमा थे
और जो काशीके राजकुलमें पैदा हुए थे उन धन्वन्तरि
की भी उत्पत्ति मेरे जलमें से ही हुई बतलाते हैं क्या !
धन्वन्तरि कहु या मदरी थे जो पानीसे उत्पन्न होते !
फिर सुश्रुतमें धन्वन्तरि ने स्वयम् कहा है कि—

“अहं हि धन्वन्तरिरादि देवो जराहजामृत्यु हरो मराणाम् ।
प्रात्याङ्गनङ्गैरपैतम् प्राप्तो हिमगाम्भूय इहो पर्वेषु म्” ॥

नहीं मालूम धन्वन्तरिने यह शेखी क्यों बधारी
है ? यदि मेरे सथनेसे धन्वन्तरिकी उत्पत्ति होती तो
वह अपने मुंहसे आदि देव क्यों बनते क्या अपने मुंह
से मिट्ठू बनना सभ्यता से बाहर नहीं है ?

महाशय ! जिन नदियोंका मुख पति लिखा है उन
की कथा लुनिये देवी भागवत में लिखा है कि एक दिन
ब्रह्मके दरवारमें नद्याजी खड़ी थीं इन्द्रजी दर्वारमें हाजिरी
देनेकी उसही समय पहुंच गये इनके अलावा और २
देवताभी दरवारमें हाजिर थे इत्पाकिया वायु से

गङ्गाके शरीरका बख उड़ गया इससे सब देवतोंने नीची भगवरकर ली परन्तु देवराजतिक्रतिग्नी बांधकर देखते रहे और गंगाजीभी मुस्कराई इस धृष्टता (वेगदबी) को देख कर ब्रह्माने दोनोंको शाप दिया कि तुम मनुष्ययोनि में जन्मलो इबही कथाकी भूल भलैयामें पुराणवालों ने एक और भी कथा जोड़ दी है जब गंगाजी शाप पाके ब्रह्माके दरवारसे लौटी आती थीं तब उन्होंने देखा कि आठों बसु रास्तेमें बैठे रो रहे हैं वह सब गंगा जी को देखकर और भी रोये तब गंगाजी ने उनसे पूछा कि तुम लोग क्यों रोते हों ? उन्होंने उत्तर दिया कि हम सबको बशिष्ठ ऋषिने मनुष्य योनि में जन्म लेनेको शाप दिया है शापका कारण पूढ़ने पर बसुओं ने कहा कि हम सभी अपनी अपनी छियोंको साथ लेके बनविहार (सैर) करते २ बशिष्ठजी के आश्रम पर पहुंचे बशिष्ठजी ने अपनी यज्ञथेनुसे अतिथि सत्कार करके सब पदार्थ लेके हम लोगोंका सत्कार किया तब गौ की इस अपूर्वशक्तिको देखकर हम में से एक बसु की लौ ने अपने पतिसे कहा कि इस गौ को ले लेना चाहिये खीके अनुचित हठसे उस बसुने गौ को चुरा लिया परन्तु वह दिव्य गौ थी इस कारण बोल उठीकिन्तु इससे बशिष्ठ महाराज कुद्धुहुये और हम लोगोंसे बोले कि तुम मनुष्योंके समान बुद्धि रखते हो इसकारण तुम सब मनुष्ययोनि में जन्म लो महर्षि के इस शाप को मुनकर हम लोगोंने बड़ी विनय की उस से बशिष्ठ

जी का जब क्रोध शान्त हुआ तब उन्होंने कहा कि जिसे ने गौ चुराई है वह अधिक दिन तक भनुष्य रहेगा और अन्य वसु जन्म लेते ही शाप से मुक्त हो जायगे । हे गंगा! इसही दुःखसे। हम लोग ऐ रहे हैं गंगाजी ने यह कुनके उन्हें सन्तोष दिया और अपने दुखड़ेको सुनाया तब यह सलाह ठहरी कि वसु गंगाके गर्भमें जन्म लें और यही किया गया और देवराज इन्द्र राजा शान्तनु बने और गंगा उनकी पत्नी हुईं। जब वह अपनी प्रतिज्ञानुसार सात पुत्रोंको जार चुकीं तब वही आठवां युत्र भीचम उत्पन्न हुये और पिताके बरसे स्वाधीन सरण हो गये। यह तो गंगा जी की कथा हुई यसुना और तापतीका हाल आप लोग कुनहीं कुको हैं इनके अतिरिक्त औरभी कई एक ऐसी नदी हैं जिनको पौराणिक लालबुफङ्गड़ोंने पहिले जन्मकी भानुषी लिखी हैं और वह परस्पर के शापोंसे नदी हो गई हैं परन्तु यह किसी पुराणमें नहीं लिखा कि लखड़नकी टेस्स नदी पहिले जन्ममें कौन थी हाँ एक बात तो मैं कहना भूलही गया कि एक नदी राजाकी रालसे बनी है और वह राजा जिसको परस्पर धर्मार्था महाराज हरिष्चन्द्रका पिता लिखा है वह अभी तक आधे स्वर्गमें टंगा है और उस के सुखसे राल गिर रही है वस वही राल नदी होके बहती है इस नदीका नाम कर्मनाशा इस कारण है कि उसमें स्नान करनेसे व उसका उल रपर्श करने से ही भनुष्य के पूर्वकृत सब सुकर्म नहट हो जाते हैं क्या मैं

आप लोगों से यह प्रश्न कर सकता हूँ कि उस नदी के आस पास निवास करने वाले पाप पुंज नहीं बन गये होंगे । क्या उन लोगोंके बास्ते ईश्वर दयालु और न्यायकारी नहीं रहा ? फिर आश्वर्य यह है कि उस ही नदी के किनारे पर बसी हुई गया पुरीमें पितरों का आटु करनेसे स्वर्गका फाटक सुल जाता है उस परभी तुर्ता यह है कि जिन पितरोंका गयासे आटु हो जाता है उनकी मुक्ति हो जाती है पर फिरभी उनका वायिक आटु होता रहता है । देववृन्द ! मैं प्रश्नरण विस्तु आटुके विषयको कहने लगा था अब मैं केवल यही रहके अपने व्याख्यानको समाप्त करूँगा कि श्री पौराणिष पौष्ट्राजने अपने सब गढित भूगोलमें लिख दिया है कि शराबका धीवका और ऊखके रस का भी समुद्र है यदि यह बात सत्य होती तो सबलोग मजें धीके समुद्रसे घड़े बर्यों न भर लेते और सद्यग्रिय आंशुर उस सुदाईका शराबका व्यौपार बर्यों न करते ? इसके अतिरिक्त यदि शराबका समुद्र होता तो सुके अर्थात् शराब बर्यों न निकाली जाती ? सम्यवृन्द ! मैं तो यह चाहता हूँ कि जो पुस्तक मुगालतेसे भरे हुये हैं उनके सान्ध पुस्तकोंकी सूचीमें से अवश्य काट देना चाहिये

समुद्रका व्याख्यान होजानेके अनन्तर भगवती भूमि उठीं और यों कहने लगीं देववृन्द ! आपलोग जानते हैं कि जिन परमाणुओंसे मेरा संगठन हुआ है वह प्रसाणु नित्य हैं और उनका संयोग ईश्वर ने सृष्टि वं

आंतरिकमें किया है परन्तु पुराणा बालोंने मेरी पाँव नक्षत्राको घटानेके निमित्त लिख दिया है कि मधु और कैटभकी चर्चासे शृणिवी बनी है भला विचारिये तो कि यदि मधु कैटभसे यहिले में न होती तो जिस जल पर विष्णु सेरे थे वह किसके आधार पर ठहरता ? फिर मेरे आधारके विषयमें वह वहार की है कि जिस से आप लोग अवश्य हँसने मेरा आधार शेषनागको लिखा है भला यह क्या दिल्लीकी बात है कि एक वह सर्व जो कदम के गर्भसे उत्पन्न हुआ वह मुझे कर्यों कर धारण करता और उसके जन्मसे पूर्व में काहे पर रखी थी फिर उसका भी एक आधार लिख दिया है परन्तु हजारतोंको यह न मालूम हुआ कि हम सबलोग परम्पर के आकर्षणसे ठहरे हुए हैं फिर यहभी पुराणा बालों को मालूम नहीं है कि जड़ पर्वतोंके सन्तान कर्यों कर होती पर्वतोंका विवाह पर्वतोंकी सन्तति और पर्वतों का निष्क्रियांमें जाना न मालूम किस विज्ञानसे सिद्ध करते हैं ? पौराणिक महात्माओंने लाख यीजन का एक एक दृष्टि लिख दिया है और द्वीपोंका जो विस्तार लिखा है उसको पढ़ते ही हँसी आती है सभ्य अहाश्य ! आज इतना सभ्य नहीं है कि अपनी पूरी सम्पत्ति बा द्वीपादिकोंकी पूरी कथाको प्रकाशित कर्किन्तु इतना अवश्य कहसी हूँ कि पुराणोंने मेरे विषयमें सैकड़ों असम्भव बातें लिखी हैं इस कारण पुराणों को अवश्य खारिज कर देना चाहिये ।

भगवती भूमिकी वक्ताको उनके श्रीमान् सभापति जीने सिंहासनसे उठ कर कहा कि सभयवन्द ! आप लोगोंने इस भइती सभामें जितने व्यास्यान सुने मेरी सम्मतिमें उन सबका आरांश यही है कि पुराणोंके बनाने वालोंने आप लोगों पर सहस्रों मिथ्या दोष लगाये हैं अतएव आप लोगोंकी सम्मति है कि उन सब पुराणोंको रही जानेमें केक दिया जाय, यह भी सिंह हो गया है कि भगवान् विष्णु और शिव महाराज भी आप लोगोंसे सहमत हैं यद्यपि ब्रह्मा जी ने अभी तक अपनी सम्मति प्रकाशित नहीं की है तौ भी वह आप लोगोंसे ज़हर इत्याक राय होगे क्योंकि उनको भी पुराणों वालोंने पुन्नी गमनका महाकलङ्घ लगाया है इसके सिवाय भागवतके कर्त्ताने 'उनको अज्ञानी और चोर भी लिखा है मुतराम् उनकी राय आप लोगों से मिलती है मगर अभी तक बहुतसे देवता और देवियोंने अपनी सम्मति प्रकाशित नहीं की है और उन की राय इस बारेमें निहायत ज़रूरी है, आप लोग यह भी स्थाल कर लीजिये कि अब बहुत ही अतिकाल हो गया है यदि अब किसी देवताका व्यास्यान होगा तो सन्ध्योदासनका समय भी व्यतीत हो जायगा इस कारण मेरी सम्मतिमें आज सभाका विसर्जन करना उत्तम ज्ञान पड़ता है और फिर दूसरे दिन सभा करके इस दिनपर विचार किया जाय ।

सभापतिकी सम्मतिको लुप्तके खाली शङ्कराचार्य
ने तथा राजाराम मोहनराय आदि अद्वैतवादी धर्मरा-
चार्यानि नाक भौंह तिकोड़िके कहा कि सन्धयोपासनके
बास्ते सभाकी कार्यको रोकना उचित नहीं है क्योंकि
जिन लोगोंको आटनाका साहात्कार हुआ है उन प-
रिष्क ज्ञान वाले देवतोंको बहिरङ्ग साधन खल्प उ-
पासनाकी आवश्यकता नहीं है इनके प्रस्तावको यूरोप
के अनेक लोगोंके साथ श्रीमती बैडमलेकेटसकी ने अ-
जुसीदन किया वर्जन्तु श्रीरामानुजाचार्य तथा परमपदा
खड़ नहरि स्वातीदयामन्द सरस्वती जी नहारामके शि-
ष्यने इस प्रस्तावका बड़ेबलसे विरोध कि
खाहिबने यूरोपीय लोगोंको अपनी ते
काया कि इसगुप्तस्त्रा आप लोग जैसे ब
खुदाकी इबादतमें खलल हुआना चाहते हैं, मुहम्मद सा-
हिबकी धनकीको लुप्तके मौलानासूम खड़े होके कहने लगे
कि हम लोग आजाद हैं किसीके बन्दे नहीं हैं हमारा
तो यही कौल है कि “नश्वतेके हेर पैरमें हमते जुदा
हुआ। नुकता जो फेर है दिया आप ही खुदा हुआ”
इन सबकी बहसको लुप्तके बाबू के शब्दसेन बड़े जीप
के साथ उठे और यों कहने लगे कि माशयगोन ‘आ-
पमारा एई हूडा हूडी आर मारामारी केनो काढ़ैन, उ
भय दौलेर श्रभी भीमानशा कोरे दीच्छी आपनारा गाव
बोलुन खोदा बोलुन वा इश्शोरई बोलुन किन्तु याकटी
उपास्त अवश्यहै मानिते एषे और उपासनारकीनोई

शमय निर्दोहित होतेपारे ना शुतराम् विषये कोलह-
कोरा अनावश्यक ।

इन सबकी बातोंको लुनके सभापति मुस्कराके बोले कि देववृन्द ! सभाको विसर्जित करनेमें धर्मराजार्थीकी अनेक सम्भति जान पड़ती हैं इस कारण इस विषयमें समस्त देवदोक्षी सम्भतिका लेना आवश्यक है अतएव मैं सबकी सम्भतिको जानने की इच्छासे सब से कहता हूँ कि जो लोग इस समय सभा का विसर्जन चाहते हैं वह अपने हाथ उठाके सभापतिकी बाणीको लुनके इनने देवताओं ने हाथ उठाये कि न हाथ उठानेवालोंकी संख्या अस्यत्त स्वल्प रह गई इस कारण सभाका विसर्जन हो गया ।

पाठकवृन्दको निराश न होना चाहिये क्योंकि शेष वृत्तान्त यथावकाश हमारे संवाददाता फिर भेजने की प्रतिज्ञा कर चुके हैं और हम भी डिवायन मेल सर्विस की प्रतीक्षामें अपनी लेखनीको धीड़े दिनके बास्ते विश्राम देते हैं ॥

खर्ग में महासभाका प्रथम प्रोसीडिंग्स (अधिवेशन)

॥ सभापूर्व ॥

ओ॒इ॒स॒ शा॒न्तिः ३



ओऽम्

आर्यसमाजके नियम ।

- १—सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्यासे जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है ॥
- २—ईश्वर सच्चिदानन्दखलप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसीकी उपासना करनी योग्य है ॥
- ३—वेद सत्यविद्या आदोंका पुस्तक है, वेदका पढ़ना पढ़ाना और सुनना उननाना सब आर्यों का परम धर्म है ॥
- ४—सत्यके गहण करने और असत्यके छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये ॥
- ५—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये ॥
- ६—संसारका उपकार करना इस समाजका मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मक और सामाजिक उन्नति करना ॥
- ७—सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये ॥
- ८—अविद्याका नाश और विद्याकी वृद्धि करनी चाहिये ॥
- ९—प्रत्येकको अपनी ही उन्नतिसे बन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सबको उन्नतिमें अपनी उन्नति समझनी चाहिये ॥
- १०—सब मनुष्योंको सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालनेमें परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियममें सब स्वतन्त्र रहें ॥

लीजिये ! लीजिये !! बिलम्ब न कीजिये !!!

इससे बढ़कर और क्या सस्ता होगा ?

धर्मार्थ वांटने योग्य सस्ते पुस्तक ॥

निम्नत्य लघुपुस्तक (ट्रैकट) मेले, बाजार उ-
त्सव, सभा समाज प्रचारादि शुभावसरों पर धर्मार्थ
वांटनेको बड़े ही सस्ते तैयार हैं जो दैकड़के भाव
दिये जाते हैं ।

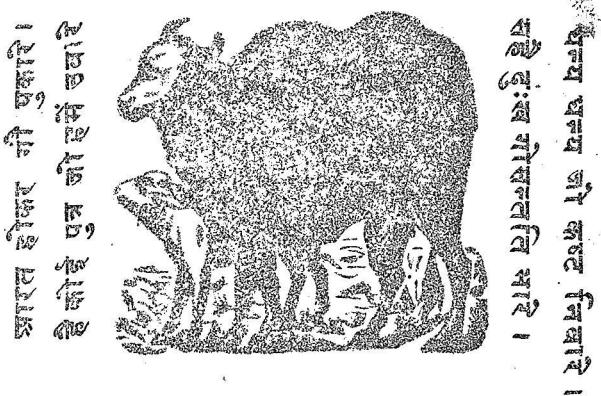
२५ से कम पूर्ण दास पर निलंगे—हजार दो हजार
पुस्तक इकट्ठे लेने पर और भी सस्ते निलंगे !!!

सजीवनवृत्ती =)। सैकड़ा १०) पञ्चायज्ञविधि:—स-
न्ध्योपासन)। सैकड़ा १) और ८) हजार धर्मप्रचार—
शुद्धिविषय (पं० लेखराज कृत))॥ सैकड़ा १॥) शिव
लिङ्गपूजा)॥ सैकड़ा २॥) नांसभक्षणनिषेध)॥ सैकड़ा ३॥)
समुराललीला (समुराल वासके दोष))॥ और ४॥) आ-
ने सैकड़ा जैनमत दर्शन (पं० राजदयालुभा कृत) -
और ४) सै० पुराण शिक्षा)॥ सैकड़ा ॥=) सृतक आठुवि-
षयक प्रश्न)॥ सैकड़ा ॥=) गाजीनियांकी पूजा हिन्दु-
ओं को क्या सूफा, कबर पूजा का रसड़न)॥ सैकड़ा
१॥) पुराण किसने लियाए पं० लेखराज कृत)। सैकड़ा
३॥) आरती (ईश्वर स्तुति) नित्य गाने योग्य ॥) सै०
आर्यसमाजके नियम ॥=) आ० हजार सद्यदर्पण भजन
[श्री ब्लाकटानन्द, गहन्त केशव देवादि कृत] -) सै०
२॥) वेश्यालीला)॥ सैकड़ा १॥) श्री भजनसाला ज्ञान
गजरा)॥ सैकड़ा २॥) आर्यसमाजके नियम संस्कृतभाषा
॥) सैकड़ा ३॥) ईसाईमतपरीक्षा)॥ और १) सै० आर्य-
समाजके प्रवेशपत्र ॥) सै० आतिश्वामी रसड़न)॥ सै०

(=)

॥) भजनभाला ॥) और ॥) सैकड़ा जैननास्तिकत्वे ॥
आनकी रीति पं० रुद्रदत्त कृत ॥) सैकड़ा २) सूत्रि
पूजाविचार ॥) सैकड़ा ॥) गंगाकी नीद ॥) और ॥) शिं
हुरीतिनिवारण -)॥ सैकड़ा ४) धर्मवलिदान प्रथिकत्वि
योग पं० लेखराजशर्माका सृत्यु वृत्तान -) सैकड़ा ५)

* पांचपैरकी गी *.



महादेवका नादिया ।

नादिया कैसे बनता है, यदि यह गुप्त भेद (रहस्य
और गोकृष्ण जानना तथा)। में 'क्षीटि २ गौओं का
पुरय लूटना चाहते हो तो यह पुस्तक पढ़िये औरतों
को पढ़ाइये मूल्य)। धर्मार्थ बाटने वालों को १) रुपया
सैकड़ा और ८) रुपया हजार ।

निलगेका पताः—

बाबूराम शर्मा

आर्य पुस्तकालय—हृषीकेश ।

१२३

२२८५. ३४५३

॥ श्रीम् ॥

वा. पा. १८

॥ स्वर्ग में महासभा ॥ १८

एकल चतुर के पहिये को बुमाते हुए सूर्य नारायण जी ही उत्तराखण्ड इन त्वों हो देवलोक में घोर घबराहट मच गई। इस घबराहट कारणों को लिखा जाय तो एक करोड़ ज्ञाकों का महा महा महाभारत बनजाय तौभी पाठकों के सन्तोषार्थ संक्षेप से ही द्वार कारणों का वर्णन करना अत्यन्त आवश्यक जान पड़ता है।

इस घबराहट का खास कारण तो यह था कि मिस्टर टकर ने फ़क्कर बन के जब से सुक्ति सेना बनाई और वारक्राई (War cry) सुझाचारपद निकाला तबसे देवता लोगों को हर समय यही सम्बद्ध और भय बना रहता है कि नालूम किस समय टकरासुरके सैनिक स्वर्ग में सौढ़ी लगा के चढ़ आवें और हमलोगों को मार के स्वर्ग से लिकाल दें। गत २४ दिसम्बर १८८६ को प्री मैशन के देवता ने स्वर्ग में आके देवतों से प्रार्थना की कि महाराज मुझे कृष्णों ने मार के भगा दिया, मर्त्यलोक से मेरी उपासना को ईसाई उठाना चाहते हैं आप सब कौमपरदर हैं लिहाजा मेरी रक्षा करना आपलो फर्ज है, प्री मैशन चर्च के देवता की प्रार्थना को सुन के दे इन्द्र को ध्यान आया कि गव्जिक कमीटी में जो पद्धतिक वा महासभा करने का प्रस्ताव हुआ था उसको अब करना चाहिये। देवराज इन्द्र इस विचार में बैठे ही थे कि इतने में असंख्य पितरों ने आके देवदर्बार को घेर लिया और चिङ्गा के दुहाई देने लगे, इनकी चिङ्गाहट को मुनके महाराज इन्द्र भी घबराये और अपने द्वारपाल से बोले कि इन सब को खामोश करके दर्बार में जाजिर करो हुक्म पाने ही द्वारपाल मबको बुला लाया।

उन सब ने हीथोड़े की विनय करी कि, हमलाग
बड़े कष्ट में हैं। हम में से अधिक लोग अद्व और के रहने
जाते हैं हमलोगों ने जितने सुकर्मी किये थे उनमें से किसी का भी
हमको फल नहीं मिला और न हमारि पुत्र हमारा शाह ही करते
हैं जो हमको यहां खाने की मिले जिज्ञाजा हम सब भूखे मरे
जाते हैं अगर हमको पहिले से यह अन्धेर मालूम होता तो हम
कभी सुकर्मी न करते ।

इन लोगों की बात को आर्थावर्तीय पितरों ने भी ताँदूद की
और कहा कि विश्व क यह लोग सब कहते हैं अगर हमलोग जानते
कि सुकर्मी और कुकर्मी करने वालों को खर्ग में एक ही स्थान मि-
लता है तो हमलोग किंवा सुकर्मी करते, देखिये जिस महिषासुर ने
बड़े बड़े महर्षियों को सताया आप सब लोगों को दुःख में धताया
वही आज सुक पदवी पाके आनन्द भोग रहा है इसके आतिरिक्त
रावण और वाणिदि अनेक महा अन्युयोगी राज्यस भी सुक ही दैन-
चड़ा रहे हैं तब अन्य लोगों का सुकर्मी करना भर्ख भारना नहीं
तो क्या है ? महाराज ! आप इस लघड़ धौधौं की मिटाइये महीं
तो जगत् में अन्धेर हो जायगा ।

इन लोगों की अर्ज पूरी नहीं हुई थी कि इतने में देवतों के
इल ने आके इन्द्र महाराज से प्रार्थना की कि ही देव राज ।
कल हमलोग भूखे मर रहे हैं कहीं पर यज्ञ नहीं होता जो
हमको भाग मिले, यज्ञ के बिना उनम धुआं नहीं होता, धुआं
हीं नहीं तो बादर काहि को बनें, बस बादरी के अभाव से वर्षा का
अभाव हो रहा है, अवर्षण से संसार को यह दशा है कि शाक-
शरीरेद्वी (मार्कण्डेय पुराण में लिखा है कि शाकशरी देवी ने १२
वर्ष तक देवतों को शाक खिला के जिसाया था) की तकरी भी
सुख गई, जो हमारे भक्त पहिले बफीं और देढ़ीं का भोग खागाया
करते थे अब उनकी बाजरे की दीटो भी नहीं मिलती है ।

इन सीरी की तारेद करते हुए काथीपति विश्वनाथ बोला उठे, महाराज ! वेशक आजकल देवतों को बड़ा कष्ट है मेरी ही दशा देखिये ज ! मैं जो एक बार भूम की तरह मे यवन के छर से छान बापौकुर मे जा गिरा था तो काशी के पडो ने मेरी एवज मेर्हे लायम सुकाम (Officiating) विभुनाथ बना लिया अगर आख्य यह है कि अब तक भी कोई मेरा भक्त मुझे कुए से नहीं निकालता है, हालाँकि मेरा मगज चावल और मड़े पानी की बदू से सड़ा जाता है और मैं कुए मे पड़ा महाकष्ट भीग रहा हूँ और मेरा द्वायम सुकाम मुश्तकिल (Permanent) विश्वनाथ बन के गुल्हे उड़ा रहा है, हे देवराज ! यदि आप हमलीरों के कष्ट की दूर य करेंगे तो हम सब मिल के बलि को देवराज बनालेंगे ।

इन सबकी बातों को सुनके देवराज इन्द्र ने मुखरा के कष्ट उंभाई अब तो तुम्हारी नज़र बढ़ गई है अब आपलोग अस्त्रिका की ओर क्यों न देखेंगे ! मगर याद रखिये कि अबवहां बलिका बिष नहीं है अबतो याताल मे रिप्लिकन गवर्नमेण्ट (प्रजातंघ) ही यहै है अगर खर्ग मे भी वही साम्यवाद आपलोग चलाई गे तो हम भी अत्येक के मनुष्यों की महा कांयेस करा के आपलोगों की भक्ति को नेप्ता नावूद कर देंगे । सारण रखिये कि जैसी उन्नति हम आप सीरोंको करसक्ते हैं वैसी उन्नति विदेशीय राजाविलि नहीं करसकता है मैं अभी सब अंसार के देवतों की महा सभा करके आपलोगों दी दुःख दूर जरने के उपायों को बड़े यदि से करूँगा । ○

इतना कह के महाराज इन्द्र ने समस्त दिग्पाल और सूर्य चन्द्रमा आदि प्रधान प्रधान देवतों को सम्मति करने के बास्तु बुलाया वह खोग पलक मारते देवराज की अमरादतीपुरी ग्रामिणी ।

प्रथम सबकी सम्मति से एक मनेजिस्ट कमीटी काढ़ा दी गई चूँकि इस कमीटी द्वा खाल काम नोटिस देना व सभा की कास्टों

खानादि का प्रबन्ध करना था इस कारण श्री सूर्य नारायण उसकी सभापति चन्द्रमा उपसभापति और अग्निदेव ईश्वरी द्वितीय दिव्य गये, प्रथम मनेजिङ कमीटी के भिन्नरों की राय हुई कि श्री दिव्य विनायक लम्बोदर से विज्ञापन लिखा के वित्तीर्ण किये जायं परं यु श्रीशुक्राचार्यने कहा कि अब वह जमाना नहीं है जब द्वाष्टसे लूख लिख कर दिशावरों को चिट्ठी भेजी जाती थीं, अबतो इम्लाइटेक्स दोशनी का जमाना है इसलिये किसी प्रे समें दो चार परव नोटिस छपाके बांट देने चाहियें, आजकल फीमेल एजूकेशन (खी शिक्षा) तरफ़ी पर है लिहाजा सरखती देवी पह माद में नोटिस कथोल कर के छपा सकती हैं । इन सबकी बातों को सुनके भुवन भास्कर भगवान् बोले कि नोटिस बांटने वा छपाने की कोइ क़रूरत नहीं है क्योंकि इस्टेलोजिक्स डिपार्टमेण्ट (समाचार विभाग) ने इतनी उचित करली है कि पलक मारत सारे संसार में सभा के समाचार पहुंच जायंगे, मैं हेलोग्राफ (सूर्य की किरणों के हारा जो समाचार भेजे जाते हैं) के हारा मेरे मित्र श्रीतरश्मि (चन्द्रमा) नाइट सिगनेचर्के हारा और अग्निदेवजी महाराज तड़िदयाम (तार) के हारा पलक मारते सर्वत्र समाचार पहुंचा देंगे आपलोग विज्ञापन बांटने की चिन्ता को भीड़ के दूसरे प्रबन्ध कौजिये । मनेजिङ कमीटी की सम्मति से घमरावती के टौन हाल में बसन्त पंचमी को सभा का होना स्थिर हुआ, सभा में अधिक भीड़ होने की सम्भावना थी हाल कारण इसपेक्टर जनरल आफ़ डिवाइन् हास्टिलस (सिविल इंग्ल मिलेटरी) (अश्विनी कुमारी को) बुला के आज्ञा दी गई कि प्राप अपनी डिसपेन्सरी के सहित सभा मण्डप के दाहिनी ओर हर पमय हाजिर रहिये क्योंकि आजकल बोबोनिक्सेग (महामारी) का धिक भयहै, इसके अतिरिक्त डिवाइन्मेलमर्सिस के सुपरिणेट एवं एस शाय देव को आज्ञा मिली कि तुम हर समय यहाँ हाजिर रहो ग्रोजिस समासद का दाहिं से कोई पत्र आवे फौरन उसे उसके पाप पहुंचा दो ।

इन प्रथमी को करने के पश्चात् मनेजिङ्ग कमीटी ने विदेशी देवतों के वास्तों टौन हाल के हाते में एक होटल तयार कराया और योरोपियन देवतों के वास्ते भोजन पकाने के निर्सित मात्र-गिनी देवी को उच्चिष्ठ चारणालनी के सहित सम्पूर्ण सासग्री देके नियत कर दिया, बगदेशीय देवतों के वास्ते मत्य प्रिया बगला सुखी नियुक्ति की गई, यवनदेवी और अफ्रीका के देवतों के खान पान का प्रबन्ध करने को कज़लगिरिनिमा काली जी नियत की गई, ऐसे ही चोन, जापान और मलाया आदि द्वीपीं के देवतों के खान पान का प्रबन्ध करने को बारेहवरी और पश्चा देवी को (यह दोनों देवी बौद्ध सम्प्रदाय में मानी जाती हैं) आदेश मिला, मनेजिङ्ग कमीटी ने इस प्रकार से सब के खान पान का प्रबन्ध बार के, टौन हाल के हार पर (Welcome to Holy Gods) चुन्दर अक्षरों में लिख के लगवा दिया और हार पालों को आज्ञा दे दी कि जो कोई सभा में विज्ञ छालने के अभिप्राय से कुछ दाख करे उसको जहम मर सौद करो और जो सौधि खुभाव से सभा में जाना चाहे उसे हर्गिज मत रोको ।

प्रबन्ध करते ही करते बसन्तपञ्चमी का दिन आगया उस दोज प्रातःकाल ही से सभा मण्डप में देवतों का आना आरम्भ हुआ सब लोग अपने २ ब्लाक में जा बैठे, ए० ब्लाक में ओरिजिनेल (अ-खली) देवतों के वास्ते कुर्सीयों को कतार लगी हुई थी, और उस दी के बीच में सभापति के वास्ते एक रळ जटित सिंहासन बिछा हुआ था, इसको दाहिनी ओर बी० ब्लाक या इसमें महार्षि मरुल तथा बेदीं के मानने वाले मुक्त जीवों के वास्ते कुर्सीयां बिछी हुई थीं, बाँझ और सी० ब्लाक में यूरोप तथा अरब आदि देशों देवता तथा पैग्म्बर लोग विद्यमान थे और डी० ब्लाक में मोडन (नये जमाने के) कृषि तथा धर्माचार्य लोग विराजमान थे ।

देवियों की आसन देने के ममय प्रबन्ध कर्त्ताओं में वैमनस्त्र ही

यथा क्योंकि जाईएका की सम्मतिश्वी कि देवियों को देवतों के दीप्तमें प्राप्तमन मिलना चाहिये क्योंकि मनातन धर्म वाले द्वियोंकी सभा में बिठाना पाप समझते हैं । दूसरे कहते थे कि जिश दुर्गा देवी ने दण्डिष्ठासुर को और शुभ निशुभ आदि देवीं को युज में मारा वह घब विस्ते पड़दा करेगी खैर अन्त में यह खिर हुआ कि ए० ब्राह्म के पान छो एक फोमेल लाटेर बनाया जाय और सब देवी उस छो देव बैठ के सभा को देखें और आवश्यकतानुसार सम्मति भी दें ।

प्रस्त्रो अमल्लर प्रवन्ध कर्त्ताओं ने जो डी० ब्राह्म की ओर देखा भी वहाँ पूरी शाश्वति पाई कुछ लोग आगे बैठने के दास्ते प्राप्तमें भगड़ा धर रहे थे इस कोनाहल को सुनके मनोजङ्ग कमीटी के सभापति ने सब को यथा स्थान बिठाने के शान्ति की जब सब लोग यथा स्थान बैठ गये और सभा में शान्ति खापत छो गई, तब रिसेप्शन कमीटी वा अध्यक्षना सभा के सभापति हुआर जयन्त ने प्रस्त्र प्रकार से अपना व्याख्यान आरक्ष किया ।

व्याख्यान ।

देव, देवो, कर्ष, मुक्त और धर्मादार्थवन्द !

मैं आप लोगों को धर्ववाद देने योग्य नहीं हूँ क्योंकि कलियुगो रामायण में मुझे कवा लिख दिया है, भला सोचये तो सही विमैं अपने देव स्वरूपको ल्याग कर कवा कीं बनता? प्रथम तो योगी जै बिना किसो को यह शक्ति ही ईश्वर ने नहीं दी । क.अपने शरीर का बिना लृत्यके क्षोड़के उसरा शरीर धारण करे, यदि मुझे योगी ही माना जाय तो क्या योगी इतना भी नहीं ममभ सज्जा कि श्रीरामचन्द्रजी की धर्मपत्नी सती माध्वी पतिक्रता सीताजी परंपुरुष प्रीति नहीं कर सकती है मैं भास्त मारने द्यां जाऊ, फिर उस ही रामायण में यह भी खिलाहै कि महाराज रामचन्द्रजी ने मेरी एक आंख फोड़ डाली परन्तु देखिये मेरे दोनों नेत्र कमल से खिले हुये हैं, यदि कहिये कि कब्जे रूप की आंख फोड़ दी थी और इस ही

पारप अथ तक भी सब कबे कायि होते हैं तो यह महा अन्याय है कि अपराध कर्त्ता में आख फोड़ी जाय कबीं की, इसके अतिरिक्त श्रीरामचन्द्रजी के और मेरे जन्म से भी पूर्व काकमुखण का होना पुराणों में लिखा है परन्तु उसके भी दो नेत्र नहीं लिखे अस्तु—मैं अपनो अधिक सफाई देना नहीं चाहता हूँ क्योंकि मत्त्य लोक के अनुष्ठों ने कुछ सुमो ही दोष नहीं लगाया है बरन भगवान् विष्णु को भी दोषों का भग्नार बना दिया है, द्वितीं की दुर्दशा को दूर करने के बास्ते जो आप लोग लाखों लोगों से यहां आये पौर अमरावती के टौन हाल को गुशीभित किया इस कारण मैं आप लोगों को अरबों धन्वदाद देता हूँ।

देवदृष्ट ! पुराणों को मानने वालों ने खर्ग को थियेटर हमलोगों को नगाड़चो और देवङ्गनाओं को नटनी समझ रखा है क्योंकि अपने देश के छोटे २ आनन्दोत्सव में लिखा दिया है कि “देवादुन्दु-भयो नेदुर्नृतुशाप्तरोगणाः (अथवा) अवादयन्तः पठङ्गान् पुष्पहृष्टि मुवीदिवि ” इनके अनावा दीन इसलामियां वालों के ख्याल से तो भिक्षा भी छोरों का बाज़ार है इन सब लबड़धौं २ को दूर करने की वास्ते जो आप लोग आज इस टौनहाल में इकड़े हुये हैं एस परिअम के बास्ते मैं आप लोगों को रिसेपशन कमीटीकी ओर से धन्वदाद देता हूँ ।

इस स्थोच के समाप्त होते ही महाराज कुवेर ने प्रस्ताव किया था आज की जनरल कमीटी में भगवान् विष्णु सभार्पात बयाये जायें यद्यपि इसका अनुमोदन अनेक लोगों ने किया परन्तु विष्णु भयो ने यह कहके इसे अनङ्गीकार किया कि हम तो आज घास दिक्काम के ही नहीं रहे हैं, जब से शङ्कराचार्य ने बेदों की जड़ धार्टने को सिल्फ गवर्नमेंट चलाया, तब से छोटे २ बालक भी खुद-खुद बन गये, हृष्टि करने और वेद बनाने के समय हम एक ही

खतन्त्रये पर सृष्टिका और वेदोंका नाश करने को करोड़ी ब्रह्म बग गये हैं, अब तो हम केवल स्त्रियों की कसम खाने को ही रुद्धये हैं और देखिये जो हमारे भक्त बनने का दम भरते हैं वही हम दो गाली देते हैं, “महाबराही गोविन्दः” (विष्णु सहस्रनाम) घर्यात् विष्णु बड़ा सुवर है कहिये किसे गरज है जो आपका सभापति बम के गाली खाय !

विष्णु भगवान् की बात को सुनके भोक्तानाथ शश्वरजी इंसते २ खड़े हुये और सुस्कुराके कहने लगे कि गाली से क्यों घबड़ते हो ? १३१०८ यटरानी और मनोहारणी द्वज बनिताओं का रसास्तादन भी तो आप को ही कराया गया है, क्या कड़ये २ शू और भीठे मौडे गप की कहावत को चरितार्थ करना चाहते हो ? रास करते वक्त तो कु महीने की रात करदी और कुछ भी न शर्मायि पर अब जरा देरको सभापति बनते आपकी नानी मरती है, क्या गोप्यों का यह गीत अच्छा लगता था कि—

फणिफणार्पितन्ते पदाम्बुजम् ।

कण्यकुचेषुन शारहृच्छयम् ॥

और प्रेमातुर भक्तों के सुख से महाबराह शब्द को सुन के कान कटे पड़ते हैं । कैलासवासी शशु की बात को सुनके सरलती पिता श्री ब्रह्मा जौ खड़े हो के बोले, चूंकि विष्णु के दीपों पर सभा में विचार किया जायगा लिहाज़ा विष्णु को सभापति बनाना मुनासिब नहीं है मेरी राय नाकिस में आज की सभा में भी देवराज इन्द्र ही सभापति के आसन को घड़ा करें ।

अनेक वादानुवाद तथा अनुमोदन प्रमोदन होने के पश्चात् देवराज इन्द्र ने सभापति का आसन अद्वैत किया, जिस समय इन्द्र व्याख्यान देने को खड़े हुए उस समय चिरसं और करताति की अविन से ठोनहाल गंज उठा ।

खर्ग में महासभा ।

सभापति का व्याख्यान ।

देववृन्द ! आपलोगों ने जो सुन्मे इस महती देवसभा क्रा प्रधान बनाया यह आपलोगों ने मेरे आफिशियल रैक का मान्य बढ़ा के अपनी नियमवत्तिता का अपूर्व परिचय दिया है, इस महती सभा के महाधिवेशन का उद्देश्य यह है कि मर्त्यलोक के निवासियों ने जो देवता लोगों पर सज्जों दोष लगाये हैं और धीखा घड़ी लगा रखी है इससे हम लोगों का ही अपमान नहीं होता है बरन परम क्षपालु परमेश्वर का भी पूरा अपमान होता है, मेरे तो पूरे परिवार को ही पुराण बनाने वालों ने चौर और व्यभिचारी लिखा दिया है । नृसिंहपुराण के २८ अध्याय में मेरे पुत्र जयन्तकुमार को लिखा है कि राजा शत्रुघ्नि ने एक वृन्दावन बसा के जो अत्यन्त मनोहर ब्राग बनाया था उसके फूलों को मेरा पुत्र चुग लाता था, एक दिन माली ने मेरे पुत्रको फूल चुराते देखा और नृसिंह की स्वप्न प्राप्त आज्ञा से दीवारों पर नृसिंह का निर्माल्य छिड़क दिया उसके लांघने से जयन्तकुमार ऐसा शक्तिहीन होगया कि वह रथ पर न चढ़ सका तब सारथी के उपदेश से वृन्दावन में १२ बर्ष रहा और व्राज्मणों का उच्छिष्ट बटोरता रहा तब उसके शरोर में शक्ति आई । भला इस कथाके बनाने वाले से कोई पूछें कि जब यवनों ने भारत पर आक्रमण किया और देवमन्दिरों को तोड़ा नृसिंह की असूरियों को तोड़ के फेंकदिया तब क्या नृसिंह का निर्माल्य न रहा था ? जो भारत की सोमापर छिड़कों देते और उसको नांघने से सब यवन शक्तिहीन होजाते, इसके अतिरिक्त उसही नृसिंह-पुराण की ४३ अध्याय में सुन्मे व्यभिचारी लिखा है, जब हिरण्यकशिपु तपश्चर्थ्या करने गया था (तब इन्द्र उसकी गर्भवती खी को उठा के ले गया और उससे व्यभिचार करना चाहा तब नारद ने इन्द्र को समझाया और कहा कि यह गर्भवती है इसके उदर में परम भागवत है) क्या मैं ऐसा अज्ञानी था कि इतना भी न

समझता कि यह गर्भवती है, खैर ! यह तो छुक्क बड़ी निन्दाही नहीं है सुभ्र से बढ़ के विष्णु को लूलू बनाया है, एक जगह तो लिखा है कि सब देवतों के कहने से भृगु ऋषि ने विष्णु के वक्षस्थल में खातमारी परन्तु विष्णु भगवान् की ऐसी शान्ति बढ़ी कि भृगुके पदको दबाने लगे और कहने लगे कि आपके कमल समां को मल पढ़ी में मेरे कठोर वक्षस्थल की बड़ी चोटलगी होगी, दूसरी जगह (भविष्यपुराण ५६ अध्याय) लिखा है कि विष्णु महाराज ने भृगु की स्त्री का चक्र से सिर काट डाला, कहिये तो उस समय वह शान्ति विष्णुकी कहां को उड़गई औ जो अवध्य ब्राह्मणीको भी मार डाला और इसही का यहफल मिला कि अब विष्णुको बर-बर अवतार लेना पड़ता है मैं सत्य कहताहूँ कि जब से ऐसी ऐसी फाल-सरिपोर्ट मेरे आपिस में आने लगी तब से मेरा दफ्तर भी गन्दा होगया, मैं सत्य कहता हूँ कि मुझे अब इन रिपोर्टों पर तनिक भी विश्वास नहीं रहा है, जो दान धर्म दानपात्र के उपकाशर्य था वह अब दिल्ली मात्र रह गया है, गोदान के बल इस वास्ते आ कि विद्यमासी ब्रह्मचारी के निश्चल शरोर में शक्तिका संचार हो परन्तु स्वार्यन्ध लोगों ने सुवर्ण धेनु हीर के दांत लगा के (भविष्य पु० उत्तरार्द्ध १३७ अध्याय भवि० उ० १३८ अध्याय भवि० उ० १६० अध्याय) दान करना लिखा है । किर उससे भी बढ़ ब्रधेनु के दानका माहात्म्य लिखा है यदि वास्तव में सुवर्णधेनु गौही समझा जाता है तो उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग को विचकर खाना क्या महापाप नहीं है ? और आशर्य सुनिये सुवरका भी दानकरना लिखा है अर्थात् तिलका सुवर बना के दान करें इदान का ऐसा माहात्म्य लिखा है कि इस दान का करनेवाला अपने पुत्र कल्प और मिथों सहित खर्ग को लगा जाय सोचिये तो सही कि जो मनुष्य असली सुवर का दान करें वह तो खर्ग से भी १० हाथ ऊँचा चला जाय ।

तीर्थों के महात्मणों का जहाँ वर्णन किया है वहाँ तो छास्यरस का अल्पही कर दिया है, मैंने रुद्रम् अपने नेदों से देखा है कि प्रयागराज के महात्मग में लिखा है कि जो मनुष्य उत्तर को पैर और नीचे को सिर करके गंगा और यमुना के संगम में आचम्नन करे तो १००००० वर्ष तक खर्ग में सुख भोगे (देखो कूर्मपुराण) महाइय छन्द ! मैं कहा तक कहूँ इन फाल्स दिपोटी में देवतों को ऐसी बुराई लिखी है कि जिनको सुनते भी हँसी आती है गणेश की लम्बोदर और हाथी के सिर युक्त दिख के फिर उन्हीं की सवारी लिखदी है भला कहिए तो हाथीकी सवारी चुही क्यों कर होसकती है ?

प्रियदेवछन्द ! आजकल जो भारतवासीयोंपर खार्थी जनोंने टैक्स लगा रखे हैं उनके विषय में मैं केवल एक दृष्टान्त देके अपने व्याख्यान की समाप्त करूँगा ॥

दृष्टान्त यह है कि एक उजबक नगर नामक शहर में एक गवर गण्डसिंह नामक राजा राज्य करता था, वह राजा अपने नाम के अनुसार ऐसा सूख और आलसी था कि उसके अमले और व्यादे मन माने कार्य करते थे परन्तु वह इतना भी नहीं जानता था कि मेरे राज्य में कितने ग्राम हैं और उनका शासन कौन करता है, एकदिन उसकी राजधानी में किसी और राज्य का एक मन्त्र घीर वेचने को आया परन्तु बाजार तक जाते जाते उसका सम्पूर्ण कर अर्थात् द्युटी (महसुल) में ही उड़गया, कहीं राजा कर, कहीं युवराज का कर, कहीं राणी का कर कहीं राजभाता का कर, कहीं राजभाता का कर, कहीं इन्हीं और कहीं उपमंडू आदि का कर लेते जब उस व्यापारी के कपड़े तक भी सिपाहियों ने छोनलिये तब वह रोता हुआ राजाके पास गया परन्तु राजाने उसकीधके देके निकलवा दिया, तबउसनेसमझाकि इसराज्यमेंअब्देर है अतएव मैं भी अपना कार्य सिँच करसकता हूँ बस वह भी स्वाक्षण

के पास जावैठा और जो सुर्दा उधर आवे उसके ही साथियों से कहे कि हमारा १) र० राज करके नाम से पहिले दो दो तब प्रेत की क्रिया करो, जब उसे कोई पूछे कि तुम कौन हो तब ही वह कहदे कि इम राणी के साले हैं, अनेक वर्षों तक वह इस ही रीति से कर लेता रहा, कुछ काल के अनन्तर गवरगण्डमिंह राजा की मांता भी मरौ और स्वयम् राजा साहिब साशान में गये और राणी के साले का नाम सुनके बहुत चकित हुए, जब १) र० उसका कर देके आगे बढ़े तब अवसर पाके राणी साहिबाने राजा से पूछा कि आपने किस को करदिया आपतो स्वयमराजा है राजाने कहा कि यह राणी के साले का साले का कर दिया जाता है, राणी ने हँस के कहा कि स्त्रियों के साले नहीं होते हैं आप समझ के बात कीजिये, राजा ने ब्रोधके साथ उत्तर दिया कि इस बात को हम भी जानते हैं कि स्त्रियों के साले नहीं होते परन्तु सनातन धर्म की रीति को मिटना भी तो पाप है । देव बृन्द । आज कल दान की भी यही दुर्दशा जगत् में हो रही है, कोई मृत्युज्ञय के जप से अमर होना चाहता है, कोई शनै-श्वर और केतु के सुजावर को थोड़ा सा लोहा वा तिल उड़ा देके शरीर को अजर और निरोग बनाना चाहता है कोई दो चार रुपकी चान्दी दे के अपने कर्म फल को उलझन करके ईश्वर के नियम को भङ्ग करने की चेष्टा कर रहा है, मुक्ति के विषय में भी संसारी जनों की दशा है, जिन लोगों ने रिक्षत लेले के जब भर श्रावखोरी सीने जोरी को है वह भी ईसामसीह की शरण में आके सुकृति मुहबाय रहे हैं ऐसे हो खुदा को मख़लूक को खाल में मिला को और मुहम्मद के मोहताज बनके नजात पाने को उत्सुक होरहे हैं परन्तु परमेश्वर पर भी विश्वास नहीं है और न मुकम्मीं का भरोसा है सुतराम् हम लोगों को अब ऐसा उद्योग करना चाहिये जिससे जगत् में ईश्वरकी भक्ति बढ़े और मनुष्योंकी अद्वा सत्य धर्म में बढ़े यदि अब भी हम लोग आलस्य करेंगे तो जगत् में नास्तिक और

आस्तिकाभासीं का ही प्रभाव फैल जायगा, और सत्य धर्म नाम-मात्र को भी कहीं न रहेगा, मैं चाहता हूँ कि आज की सभा में सब लोग स्वतन्त्र भाव से अपनी २ राय प्रकाशित करें ।

सभापति के अवस्थानानन्तर देवर्षि नारद खड़े होके कहने लगे चूंकि पुराण वालों ने मेरी असीम निन्दा की है लिहाजा मैं प्रस्ताव करता हूँ कि पुराण (द्रष्टवैवर्तादि) और मेरे नाम को कलंजित करनेवाले नारद पंचरात्रादि पुस्तक रहे रहने में फिकदिये-जायं मैं शपथपूर्वक कहताहूँ कि मैंने उन पुस्तकों को हर्गिज़ नहीं बनाया भला सुझि क्या जहरत थी कि मैं घट्कोघी मत का प्रतिपादन और शैवादि मतों का खण्डन करता न मैं रिश्वतखोर हूँ कि डोम आदि नीचोंसे कुछ धनलेके किसी आधुनिक पुस्तकपर अपनी सुहर कर देता, देवी भागवत के बनाने वाले ने जो अकारण सुभ पर दोष लगायेहैं वह अवश्य ही आप लोगों ने सुने होंगे (द० भा० स्कन्ध ६ अ० २८, २८ व ३०) देखिये तो सुझे विष्णु ने कैसा धीखा-दिया कि मेरे कपड़े लते और बीन आदि लेके भाग गये और मैं तलाव में स्नान करताही रह गया जब मैं तालाव में से निकला तब खौ हो गया फिर राजा तालध्वज से मेरा विवाह हुआ देखिये तो क्या लालबुभकड़ी कथा है ? देवी भागवत वाले को मरी इतनी ही निन्दा करने से सन्तोष नहीं हुआ बल्कि और भी अपूर्वकथा लिया गया, उसमें तो सुझे बन्दरही बना दिया है, उसमें भी राजा र की कन्या से मेरी विवाह करा दिया है सोचिये तो सही कि मैं पर्यं होके मानुषों से विवाह कर्या करता ।

देव हृन्द ! आप लोगों ने यह न सुना होगा कि हमारे सभापति देवराज भी एक बार बैल बने थे (द० भा० स्क० ७ अ० ६) राजा ककुल्य जब देवतों की प्रार्थना को सुन के दैत्यों से लड़ने को चले तब उड्ढो ने कहा कि यदि इन्द्र हमारे बाह्य बने तो हम दैत्यों से लड़े, भला कहिये तो यह कितनी गाली है कि जिन इन्द्र महाराज

को विशुआदि सब ही राजा मानते हैं उनको ही बैल लिख दिया और सुभे तो पुराण वालों ने डाक का थैला और लड़ाई कराने का औजार वा चुगलखोर नियत कर दिया है इस कारण मैं प्रस्ताव करता हूँ कि पुराणों को मन्त्रूख कर दिया जाय।

इस प्रस्ताव को महर्षि पराशर ने अनुमोदन करते समय कहा कि वेशक पुराणों को मन्त्रूख कर देना चाहिये क्योंकि इन पुराणों में इजारां बातें असम्भव लिखी हैं मेरे परिवार को और सुभे जैसे वाहियात दोनों पुराणवालों ने लगाये हैं उनको मैं फिर वर्णन करूँगा किन्तु अब एक ऐसी असम्भव गाथा का वर्णन करता हूँ जिसको सुनके आप सबलोग करें दिन तक हमते रहेंगे। देवी भागवत सप्तम स्कन्ध अध्याय में लिखा है कि राजा यौवनाश्वके १०० स्त्री थीं परन्तु पुत्र किसी के नहीं था इस से राजा को अल्पत चिन्ता रहती थी, इसही चिन्ता से व्याकुल होके रांजा यौवनाश्व बन की चले गये और वहाँ अनेक महर्षियों से कहा कि मेरे सन्तति नहीं है अतएव आपलोग ऐसा यज्ञ कीजिये जिस में मेरे पुत्र हो, ऋषियों ने सन्तान प्राप्ति के वास्ते यज्ञ आरम्भ किया, ऋषियों ने जो मंत्रों से अभिमंत्रित करके जल से पूर्ण घट स्वापन किया या वह इस अभिप्राय से था कि जो नाशी इस जल को पान करे उसकी जगी ही पुत्र हो, एक दिन रात्रि में राजा यौवनाश्व को बहुत जल मैंने पी लिया इस बात को सुनके सब ने कहा कि तुम्हारे प्रातः काल जब यज्ञकर्ता ब्राह्मणों ने कलश को खाली देखा तो राजा से पूछा कि वह जल कहाँ गया तब राजा ने कहा कि वह जल मैंने पी लिया इस बात को सुनके सब ने कहा कि तुम्हारे अवश्य पुत्र होगा उस जल के प्रताप से राजा के गर्भ रहा, जब १० महीने पूरे हुए तब राजा यौवनाश्व के पेट की ओर के बालक निकाला गया, तब राजा के मंत्री ने कहा “कन्धाता” यह बालक किसका दूध पीयेगा तब ही देवराज इन्द्र ने प्राके कहा कि “मा-

“माता” द्वारा दूध पियेगा इसही कारण उसना नाम मान्माता रखा गया, देवब्रह्म ! कहिये यह कथा क्या इस पहेली की चरितार्थ नहीं करती है कि —

सास कुवारी बहू देट से ननद पंजीरी खाय ।

देखन वाली लड़का जन्मे बांझिन दूध पिलाय

क्या यह जापकर जटकी का किस्मा नहीं है भला विचारिये तो कि जिस गर्भाशय को मनुष्योंके देठने सूखर ले ही नहीं रखा उसकी मंत्र के पानी ने क्यों कर बना दिया ? यदि अभिरुचित पानी में दूह शक्ति थी तो राजा के सूनों में दूध क्यों नहीं उत्पन्न कर दिया बालक भृगु भृगु के बाथाओं ने देव भाषा को श्रीरवेदी को बड़ा ही बढ़ावा कर रखा है ।

देवब्रह्म ! इन पुराणों ने भैरों द्वादा वशिष्ठ से ही हमारे कुल की काल्यकित वारना आरक्ष किया है लिखा है कि वशिष्ठ विश्वामित्र से लड़ने को बगुला बन गये और लिखा है कि उस्की ने ऐसी ईर्षा करो कि अपने सौ पुत्रों को मरवा के लब विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि कहा पिर भैरो माता के गर्भ में देह पाठ कारना लिखा है क्या यह सम्भव है कि कोई मनुष्य गर्भ में सुख खोल सके ? यदि गर्भ में सूख आय तो माता के गर्भ के बल बालक के सुख में भर उठवार ने गर्भ का बालक को पुष्टि के वाली यही नियम कर है कि बालक का सुख उन्न रहे और नाथी की जाल के द्वारा के भल्लू किये अद्वादि का इस बालक के उदर में जाय, औ एक ज्ञान अहुत बात सुनिये कि हैं परम धर्मज्ञ और वेदज्ञ हीको भी अविद्याहित मल्लगंडा पर मोहित हो गया (देवी भागवत द्वितीय खान्ध द्वितीय अध्याय) और अपनी कामहत्ति को दिन ही में चरितार्थ करने की मैने कुचिरा उत्पन्न किया आप सब जानते हैं कि कुचिरे का नाम वेदों में भी लिखा है (नीहारण प्राहृता उक्त द्वादशांगम्भरत्ति) इसके अतिरिक्त कुचिरा के बाले उस बाण का नाम

हैं जो सूर्य की किरणों के द्वारा पृथिवी से आकाश को जाती हैं और उब से सूर्य तथा पृथिवी और जल बने हैं तब से ही कुहिरा भी बना है भला मैं उसकी कठों कर बनाता फिर मेरे जन्म से भी पूर्व की अनेक कथाओं में भी कुहिरे का नाम आता है जिस मत्स्यगम्य से मेरे व्यभिचार की कथा लिखी है अब उसके जन्म का अङ्गुत हाल सुनिये, जिसको सुनके आप लोगों की भी बुद्धि चक्ररा जायगी देवी भागवत के प्रथम स्कन्ध की प्रथम अध्याय में ही यह अपवर्त्तन कथा लिखी है कि राजा उपरिचर की गिरिका नाल्डी भार्या जिस दिन कटुस्थाता थी उस ही दिन उपरिचर के पिता ने उड़े शिकार खेलने के बास्ते बन को जाने की आज्ञा दी, राजा उपरिचर पिता की आज्ञा को परम धर्म समझ के बन को गये परन्तु उनको अपनी कटुस्थाता भार्या का खरण दहा इस कारण बन में उनका बीर्घ खलित हुआ, राजा ने उस बीर्घ को बटपत्र के दीने में रख के अपने एक बाज से कहा कि इस बीर्घ को मेरी खो के पास ले जाओ इससे अवश्य पुत्र उत्पन्न होगा, उपरिचर के बाज ने जब उस बीर्घ युक्त दीने को सेके आकाश आर्ग से गमन किया तब और बाजों ने समझा कि यह मांस लिये जाता है तब और बाज उस से क्लीनने को आये इस कारण बाजों में खूब युद्ध

ह दीना यमुना जी में गिर गया, उस दीने के बीर्घ की एक (आदिका जो शाप से मर्ही हो गई थी) खा गई उसको

कुए ने पकड़ के चौरा तो उसके पेट से एक पुल और एक पाण्य उत्पन्न हुए, मकुआ उन दीनों बालकों को राजा उपरिचर के पास ले गया, राजा उपरिचर ने लड़कों को अपने रूप का हिख की ले लिया और कन्या को उसहो मकुए को दे दिया, वही मर्ही के पेट का लड़का राजामर्ख हुआ और कन्या व्यास की माता सत्यवती हुई, कहिये आपलोगों ने कभी ऐसी लाल बुझकड़ी कथा सुनी थी, कथा अश्विनीकुमार और धन्वन्तरि का यह कहना,

मिथ्या है कि बालक के अनेक प्रत्यक्ष माता के रज से बनते हैं, यदि मानसी लिया जाय कि राजा उपरिचरका वीर्य अभोव या तो उस में रज किसका और क्योंकर मिला ? यदि, कहा जाय कि मछरो का रज मिलगया होगा तौभी अयुक्त है क्योंकि जिनके अण्डे उत्पन्न होते हैं उनके गर्भाशय में उस प्रकार का रज नहीं होता जैसे जरायुज स्त्रियों के होता है । इसके अतिरिक्त अण्डज स्त्रियों का गर्भाशय भी भिन्न रौति का होता है वह मनुष्यके वा गधे के दीर्घ को धारण नहीं कर सकती है, चिकित्सा शास्त्र में जो शरीर को रचना का वर्णन लिखा है उसके देखने से अष्ट जान पड़ता है कि सुख के मार्ग से गर्भ में गया वीर्य लौटी के उस स्थान में नहीं पहुँच सकता है जहां पहुँचने से गर्भाधान होता है ।

खैर हमारो तो दुर्दशा की है और परन्तु व्यास की भी वह दुर्दशा की है जिसको सुनके भद्रजन अशान्त हो जाते हैं, व्यास को दासी पुत्र लिखके फिर लिखा है कि उन्होंने १०० वर्ष शिव की आराधना करके पुत्र होने का वर पाया, परन्तु व्यास के घर ची-ती थी हो नहीं जो पुत्र होता एक दिन प्रातः काल व्यासजो अग्नि-होव करने के बासी अग्नि उत्पन्न करने की अरणी अथ रहे थे उत्तर ही समय छृताचौ अप्सरा उधर आ निकली, उसे ढेख कर लाल ली कामातुर हुए परन्तु मन में व्यभिचार कर्म से डर और कुछ चिन्ता करने लगी, व्यास सुनिको चिन्तातुर देख के छृ घबड़ाई और भय से शुक्री (सुभो, तोतो) बन की भागी । शुक्री को देखकर अत्यन्त बिस्मित हुए और अप्सरा का ध्यान लगे तब उनका वीर्य अरणी पर पतित हुआ और उससे ही शुक्र होव (लकड़ी) से उत्पन्न होगये, देववृन्द ! विचार (देवो भागवत प्रथमस्कन्ध अध्याय १४) कर देखिये कि इस महालालदुभक्षणी कथा में कैसी गप्त मारी है कि लकड़ी से ही पुत्र उत्पन्न हो गया, एक और भी मुमे आश्चर्य है कि जिस श्रीमद्भगवत की पौराणिक

लोग पुराणी का शिरोमणि मानते हैं उसमें शुकदेव का विवाहादि कुछ नहीं लिखा परन्तु हजारों ब्राह्मण अपने को वशिष्ठ गोदी बताने हैं जब कि शुकदेव का वंश ही नहीं चला और व्यास के भी दूसरों सत्तान नहीं थे तब जगत्‌में वशिष्ठ का गोच कहाँ से आया! क्या विना भाता पिताके भ्रो पुराण वाले किसी की उत्पत्ति कलियुग में मानने लगे हैं परन्तु देवी भागवत में शुकदेवका विवाह पीवरी खो के साथ लिखा है और उससे क्षण, गौरप्रभ, भूरि तथा देवशुत नामक ४ पुत्रों की उत्पत्ति लिखी है हम नहीं जानते कि पुराणी में परस्यर क्यों विरोध है? पुराण वालों ने हमारे वंश पर एक तो क्षणी की है कि शुकदेव को कोई दीष नहीं लगाया, परन्तु “जब फसे दाढ़ा तो किस गिनती में फिर पोते रहे” इस कहावत के अनुसार कुल भरो ही हमारे कलङ्कित बना दिया है।

सभ्य महाशयों! मैंने आप लोगों की बहुत देर तक कष्ट दिया, परन्तु अब मैं केवल एक बात कहकर अपने व्याख्यान की समाप्त करूँगा आजकल के सन्धारी अपनी गुरु परम्परा में कहते हैं।

नारायणम् पञ्चमवम् वशिष्ठम्, शक्तिं चतत्युत्पदराश्वरं च ।

व्यासं शुकङ्गैडपदम्भान्तम्, गोविन्द्योगीन्द्रमयाख्याश्वरम् ॥

श्रीशङ्कराचार्यं मध्यास्यपद्म, पादं च हृस्तामलकंचशिष्य ।

लक्ष्मीटकम् वार्त्ति कारमन्या, नस्महुरुन्मलतमानतीस्मि ॥

देव के शिष्य गौड़पादाचार्य, गौड़पादके शिष्य गोविन्दाचार्य न्दाचार्य के शिष्य श्री शङ्कराचार्य हुए परन्तु इन सब के समय का। मेलाने से यह बात सत्य नहीं मालूम होती क्योंकि शुकदेव का खर्ग वास पाण्डितों के जब से भी ५० से वर्ष पूर्व हो हो चुका था और गोविन्दाचार्य तथा शङ्कराचार्य का जब बुद्धदेव के समय से सैकड़ों वर्ष पश्चात् हुआ था तब गौड़पादाचार्य का शुकदेव के समय में होना क्योंकर सिद्ध होसका है? गौड़पादाचार्य की कलियुग में भी काई सहस्र वर्ष की अवस्था का होना वेदों से तो

विश्व छड़ि है किन्तु कलियुग के दाच्य में पुराणों से भी निषिद्ध है

महर्षि पराशर के लोच को बढ़ताहुआ देख कर शीमान् सभा पति खड़े होके कहने लगे कि महर्षि ! पराशर ! आप को यह अधिकार नहीं है कि आप सन्यासियों के विषय में भी कुछ कहें क्योंकि इस विषय में दत्तात्रेय तथा गङ्गराचार्य स्वयम् वर्णन करने को उपस्थित है। मेरी सम्मति में अब पञ्चदेवों में से किसी को अपनी सम्मति प्रकाशित करनी चाहिये।

सभापति की बात को सुनके स्वयम् भगवान् विष्णु हँसते हँसते खड़े हुए और इस प्रकार से कहने लगे, सम्युच्चन्द ! इस महत्वी सभा में जो कुछ मैं कहूँगा उसे आप लोग दिक् प्रदर्शन वा नमूना माल समझियेगा क्योंकि संसार के लतझ लोगों ने सुझे एक काठ का पुतला समझ रखा है और मेरे नाम से स्वयम् विषय भोग करते लज्जित नहीं होते, भला यह कौन इन्साफ की बात है कि जिसको उपास्य देव वा देवी समझे उसकीही रासमें न चावें, फिर मेरे नाम से मन्दिरों में विष्णाओं को न चावें और स्वयम् व्यभिचार करें, अपनी अपनी हठ को पूरी करने के बास्ते विषयी लोगों ने सुझे बदनाम कर रखा है, कोई कहता है कि विष्णु गोलोक में रहते हैं और गोलोक में सिवाय विष्णु के सम्पूर्ण स्थियां रहती हैं, कोई कहता है कि विष्णु दैत्यों को मारने के बास्ते उदैव अवतार लिया करते हैं जिन मनुष्यों की वह मेरा अवतार बतलाते हैं उन महात्म जीवन चरित्रोंको स्थिक्रम विश्व बातों से भर दितीहै, खैर अकी कथाओंको मैं फिर कहूँगा, प्रथम अपनीही दुर्दशा को सुनाता हूँ, सब ही लोग सुझे मधुसूदन और कैटभारि कहते हैं परन्तु मधुकैटभ के मारने के समय न मालूम सुझे किस २ का उपासक पुराणवालों ने बना दिया है। गणेश पुराण की १७ और १८ अध्याय में लिखा है कि जब मैं मधु और कैटभ नामक दैत्योंसे लड़ता जा॒ड़ता थक गया और वह न मरे तब मैं गन्धर्वको रूप धारण किया दूने

जो बन में जा के बीन बजाई और गाया उससे शिव महाराज बड़े प्रसन्न हुए और अपने दूत के द्वारा सुनी अपने पास बुलाया और मैंने गानेको सुनके बड़े प्रसन्न होके बर हीवी तथारहुए सुनके तब मधु-कैटमवाली कथाकी सुनकेशिव महाराज बोलकि तुमने गणेशकी धूजाँ नहीं की थी इसी ही तुम्हारी विजय नहीं हुई, अब मैं तुमको गणेश का भन्न बताता हूँ उसको उपने से गणेश तुम पर प्रसन्न हीयी और उस्से ही तुमको विजय प्राप्त होगी, शिव ने यह भी कहा कि गणेश के ३००००००० मंत्र हैं, मैं उन में से षड्क्षर मंत्र तुमको उपदेश करता हूँ, मैंने शिव से उस मंत्र को अहम्य करके १०० वर्ष तक उपाया तब गणेश जी ने प्रत्यक्ष होके दर्शन दिये, देखिये तो यह गणेश जी और शिव जी कैसे धोखेबाज़ हैं कि जब मेरे गीत सुनने की शिव जी ने सुनी अपने पास बुलाया आ उस समय गणेश जी वहीं मौजूदथे परन्तु वहां पर उनसे बरन दियागया पिर की गणेश जी मेरे ऊपर भेहर्वानी करने को १०० वर्ष के बाद आयी थी उनकी रूप का तेज ३००००००० सूर्यों के समान लिखा है भला विचारिये तो सही कि एक सूर्य के उत्ताप से तो जगत् भर उत्सर रहता है परन्तु तीन करोड़ सूर्यों के समान तेजवाले गणेश से मैं भी न जला और न मधु कैटभ जले, गणेश पुराण में तो यह लिखा है मैं भार्केडे युराण तथा देवी भागवत में लिखा है कि देवी की मैंने मधुकैटभ को मारा, हाँ एक बात तो मैं भूल ही गया गणेश जी का मंत्र सुनी १०० वर्ष तक उपना पड़ा था वा ये थे कि जिनवाली उपासना से मुझे सिंहि मिली थी, वह गणेश जी कौन है ? देवदत्त ! वह गणेश जी भी धार्वती के इरीर के मैल से उत्पन्न हुए थे, लिखा है कि एक समय पार्वती जी महादेव से रह रही के दूसरे बन में जली गई थीं, उन्होंने बन में जाके अपनी रक्षा के बासे अपने शरीर के मैलते एक मधुषाकार पुतला बनाया और उसे सजीव करके हार पर लिठाया दिया, जब सहादेव अपने

गणीं के सहित पार्वती को ढूँढते हुये वहाँ आये और भीतर जाने लगे तब गणेश ने उनकी रीका, इस कारण परम्पर और संग्राम हुआ, उस संग्राम में महादेव ने गणेश का सिर काट डाला इस बात को देख कर पार्वती जी बड़ी चिन्तायुक्त हुई और शिव महाराज से कहने लगीं कि इसको जिला हो अन्यथा मैं भी प्राण लाग दूँगी, इस इठकी सुनके शिव महाराज ने अपने दूतों को इधर उधर भेज के गणेश के सिर की तलाश कराया परन्तु गणेश के सिर की प्रथम ही देवता लोग उठाके ले गये थे और चन्द्रलीक में रखा था अतएव महादेव की दूत एक हाथी के बच्चे को और उसकी माता को अचेत सीया हुआ देख के उस बच्चेके सिर को काट लाये, शिव महाराज ने उसही हाथी के बच्चे के सिर को गणेश के कबन्ध पर रख दिया और उसे जिला दिया, देखिये देवषन्त ! कैसी शख्त क्रिया है कि दूसरे के सिर को धड़ पर रखके छू मंत्र किया और अप से वह जी गया, यदि कहा जाय कि शिव महाराज सर्वशक्तिः मान् थे तो क्यों नहीं बिना सिर के ही गणेश को जिलाया ?

ऐसी हास्यास्यद कथा कुछ गणेश की ही विषय में नहीं लिखी बरन मुझे भी देवतों ने एक बार ऐसे ही छू मंत्र से जिलाया था, महाशय ! इस बात को मैं पाहसाल की सबजिकृत कमीटी में बयान कर सुका हूँ अब एक बात और सुनिये, जिस गरुड़ जी ने निराहन बताते हैं उस से ही मेरा और युद्ध भी लिखा है

यह कहानी ऐसी अज्ञुत दीति से लिखी है कि जिसको सुहंसी आती है, लिखा है कि कश्यप की भी कढ़ (सर्पी की माता) और विनता गरुड़ की माता में एक दिन सूर्य के घोड़ों के विषय में विवाद हुआ, कढ़ कहती थी कि सूर्य के रथ में जो घोड़े जुते हैं वह काले हैं और गरुड़ की माता उनको सफेद बतलाती थी, सर्प अपनी माता की सच्ची सिद्ध करने के बाहरी सूर्य के घोड़ों के ग्राही में जा लिपटे इस से वह घोड़े काले मालूम होने लगे, उब

बिनता शपथ के अनुसार कदु की दासी हो गई तब दासों भाव के सब कार्य करने लगी, एक दिन गरुड़ ने अपनी माता से पूछा कि तुम इसकी घर दासी का काम क्यों किया करती हो? गरुड़ की माताने प्रथम की सब कथा कह सुनाई, गरुड़ ने उस कथा को सुनके पूछा कि कोई ऐसा कार्य है जिसके करने से तुम्हा रादासीपन कूटजायं, गरुड़ को माताने अपनी सौतीनसे पृच्छके गरुड़ से कहा कि यदि तुम असृत लाके सर्पोंकी पिलाओ तो मैं दासीपन में मुक्त होजाऊं, इस बात को सुनके गरुड़ जी असृत लाने के बास्तु चले, मार्ग में अपने पिता के दर्शन की उनको अद्वा हुई तब वह अपने पिता के पास गये और दण्डवत् प्रणाम करके उन से कहा कि पित! मुझे हुधा ने बहुत सताया है, आप मुझे बताइये कि मैं क्या खाऊं, गरुड़ के पिता ने कहा कि एक द्वीप में शूद्र ही बसते हैं तुम उन सबको खाजाओ, परन्तु खबरदार किसी ब्राह्मण को मत खाना गरुड़ ने अपने पिता से पूछा कि मैं ब्राह्मण को क्योंकर पहचानूँगा, उसके पिता ने कहा कि जो मनुष्य तेरे पेट में न गले उसे ही तुम ब्राह्मण समझना, गरुड़ उस द्वीपमें गये और सम्युर्ण दीपबासियोंको चौंच में भरके निगलने लगी, उनमें ही एक ब्राह्मण भी था वह गरुड़ के पेट में तो चला गया परन्तु पेट में जब न गला तब पेट में घोड़ा-सा उछलने लगा, तब गरुड़ ने उसे पूछा कि तू कौन है जो मेरे पेट में गलता है? उसने पेट में से ही उत्तर दिया कि मैं ब्राह्मण हूँ, नि उस्मे कहा कि तुम फौरन मेरे पेटसे निकल आओ! ब्राह्मण ने कहा कि मैंने जिस कहारिन को अपनी भार्या बनाके रखा था उसको भी आप निकाल दीजिये तब मैं निकलूँगा, गरुड़ ने तथासु कहके दोनोंको पेट से निकलने की आज्ञादी, इस आज्ञा को पाते ही वह ब्राह्मण कहारिन के सहित पेट से निकल आया, गरुड़ वहाँ से पेट भरके जब चले तब एक ऐसे बट्टुच पर बैठे कि जो कई योजन का था गरुड़ की बैठने से उस बच्च की शाखां टूट पड़ी और

उस ही शाखा पर कई हजार बालचित्कार ऋषि तप करते थे यदि गरुड़ जी उस शाखा को छोड़ देते तो वह सब ऋषि दब के मर जाते, इस लिये गरुड़ जी उस शाखा की अपने पंजोंमें दबा के उड़े और बहुत दिन तक उड़ते ही फिर किये फिर अपने पिता से पूछा कि इनको मैं कहाँ रखूँ, कश्यप ऋषि ने कहा कि इनको अलूक पर्वत पर जाके रखदो, और उनको रखके गरुड़जी अमृत लेने को चले जब खर्ग में पहुँचे तब अमृतकुञ्ज के रखवालों से और गरुड़ से भयानक युद्ध हुआ, फिर उनको हार जान पर समस्त इन्द्रादि देवता गरुड़से लड़ने को आये, जब वह भी हार गये तब सुभको सब ने बुलाया और मैं भी गरुड़ से लड़ने लगा, जब उड़ते २ मैं भी अका तब गरुड़ ने प्रसन्न हो के कहा कि हे विष्णो ! मैं तुम से बड़ा प्रसन्न हुआ मुझ से ईश्वित बर माँगो, मैंने गरुड़ से यही बर माँगा । कि तुम मेरे बाह्य बनो (इत्यादि) देखिये ! देवबृन्द कैसी असभ्यव कथा है क्या हम लोग इससे किसी को अपने बशमें करते हैं ? जबकि मुझे पुराणाले सर्वशक्तिमान् मानते हैं तो फिर ऐसे ऐसे ढक्कीसलों से सुभक्तिहीन बद्धों सिद्ध करते हैं ? मेरे अवतारों में से जिस क्षण को पूर्णावतार मानते हैं उसके विषय में जो २ असभ्यव और अश्वील कथा लिखी है उनका आप लोगों के सन्मुख बर्णन करना केवल समयकी नष्ट करना मात्र है, तौ भी दो अपूर्व कथ को मैं अवश्य यहाँ बर्णन करूँगा, आप लोगोंने सुना होगाकि १ के बड़े भाई बलराम से रैवती का विवाह हुआ था, यह रैवती महाराजा रैवत की कन्या थीं, उस कन्या की अत्यन्त रूपवती और गुणवती देख के उस के समान बर की जिज्ञासा करने को महाराजा रैवत अपनी कन्या के सहित ब्रह्मा के पास ब्रह्मलोक में गये, ब्रह्मा के सामने उससमय एक और सामला पेश था इस कारण राजा रैवत वहाँ बैठ गए और ब्रह्मा से बिनय करने की अवसर की प्रतीक्षा करने लगे, जब अवसर मिला तब राजा ने

ब्रह्माजी से सुयोग्य बर की जिज्ञासा की ब्रह्माजी ने हंस के उत्तर दिया कि राजन् ! जितनी देर तक तुम यहाँ बैठे रहे उतनी देर में मर्त्यलोक में अनेक युग बीतगये इस कारण तुहारे दंश में अब कोई भी नहीं रहा है, अब तुम श्रीब्रह्म चले जाओ और इस कन्या का यदुवंशीय बलराम से विवाह करदो ब्रह्मा की आङ्गा से राजा रैवत मर्त्यलोक में आये और बलराम से रेवती का विवाह कर दिया, जों महाशय ! रेवती का शरीर क्या पर्यावरण परमाणुओं का नहीं था ? जो उसको मृत्यु ने न धेरा, यदि यही बात थी तो अब तक क्यों न जीवित रही ? यदि यहो कहिये कि ब्रह्मलोक में चले जाने से मृत्यु न हुई तो जिना शरीर लाग किये ब्रह्मलोक में जाना ही क्योंकर सम्भव है ? सत्य तो यह है कि लाल बुझकड़ी ने दूसरी कथा सुच कुन्दको भी ऐसी ही रची है कि राजामुचकुन्द देवतीको दैत्यों से बचाने के निमित्त स्वर्ग में गये परन्तु यहाँ उनका कुल छय हो गया, यदि यह दोनों कथा सत्य होती तो महाराजा दुष्टन्त जब इन्द्रको सहायता देने स्वर्ग में आये थे तब मर्त्यलोक में उनकी खीं शकुनता और उनका पुत्र भरत क्यों कर जीता रहा था, क्या उनके वास्तु मृत्युका दूसरा नियम था, और महाराजा रैवत तथा सुचकुन्द के वास्तु दूसरा नियम था ।

देवछन्द ! इन कथाओं से ही सिद्ध होता है कि भिन्न अदतारों के अन्य में भी सब मिथ्या कथा लिखी हैं । अदतार लेने के जो कारण मुराणवालों ने लिखे हैं वह भी हास्यात्मक ही है, भला सोचिये तो के जरा से बल वाले कंस को मारने के बास्तु यदि सुभि खयम् अवतार लेने की ज़रूरत होता तो जिस जगत् में कंस सरोखि करीड़ी बलवान् भरे हैं उसकी प्रलय करने के बास्तु तो सुभि में शक्ति ही सिद्ध न होगी, पिछर अदतारों का भी ठिकाना नहीं है कि कितने हुए क्योंकि गोकुलिए गोसांई सब अपनेको दिष्टुका अदतार ही सभ-भत्ते हैं, एक और भी आर्ष्य की बात है कि श्रीमद्भागवत में लक्षण

को अनेक स्थलों में सर्वज्ञ लिखा है और यह भी लिखा है कि कृष्ण ने अपने गुरु सान्तपन के मरे हुए पुत्रों को ला दिया था परन्तु जब उन के पोते अनिरुद्ध को बाणासुर ने अपने घर में कैद कर लिया था तब उन को यह भी न मालूम हुआ कि मेरा पोता कहां चला गया, जब नारद ऋषि ने जा के उब को सब गुप्त हाल सुनाया तब उन को मालूम भया कि अनिरुद्ध को बाणासुर की कन्या ने चित्र रेखाके द्वारा मर्गा लिया है । न मालूम उस समय कृष्ण की सर्वशक्तिमत्ता और सर्वज्ञता कहां को उड़ गई थी, हां एक बात और भी कहना मैं भूल गया कि, जब बालक अवस्था में यशोदा ने कृष्ण को मट्टी खाने के अपराध में बांधा था उस समय कृष्णने अपने मुख में तीनों लोक दिखा दिये थे, भला कहिये तो मुख था या दुनियां का नकाशाथा परन्तु जब दुर्योधन ने कृष्ण को कैद करने का प्रवच्य किया उस समय सब सौटीपटांग भूल गई, यदि कृष्ण बास्तव में मेरा अवतार वा सर्वज्ञ होते तो अपने प्यारे भानजे अभिमन्यु को यमराज के घर से क्यों न लौटा लाते ? असल में न कृष्ण मेरे अवतार थे और न सर्वज्ञ थे ।

जिन प्रह्लाद की विशु का परम भक्त लिखा है और जिन को नृसिंह की कृपा से परम विज्ञान प्राप्त होना एवम् मोह से रहित होना भागवतादि पुराणोंमें लिखा है उनका बटरिकाश्म में रहने वाले उन नारायण के साथ (देवी भागवत) घोर युद्ध लिखा है जिन को पुराण वाले विशु का अवतार मानते हैं (भागवत स्कं० १ अ० - तृथ्येऽधर्मकलासर्गं नरनारायणाहृषीभूतात्मशमोपेत-मकरोद्युश्चरत्नपः) कहिये तो वह प्रह्लाद की नारायण भक्ति कहां को चली गई, फिर जिन नृसिंह जी की सब से अधिक प्रशंसा और शक्ति लिखी है उनके ही विषय में पुराणों की दादा गुरु आकाश भैरव तंत्र में लिखा है कि जब नृसिंह जी का क्रोध किसी प्रकार से शान्त न हुआ तब देवतीने शिव महाराज से जाके प्रार्थना

की, शिव जी भी देवतों को अभय दान देके उनके क्रोध को शान्त करने का उपाय सोचने लगे जब कोई और उपाय न सूझा तब शिव जी ने शरभ शालव पक्षी राज का रूप धारण किया और नृसिंह जी को पंजों में दबा के उड़ गये अनेक बर्घों तक शिव महाराज नृसिंह को पंजोंमें दबाये आकाश में फिरा किया, जब नृसिंह जी थके और घबड़ाये तब शिव की सुति की यहाँ सुन्ति दारण समक्त नाम से प्रसिद्ध है, इन शरभ जी के रूप को आप लोग सुनेंगे ता और भी चकित होंगे इनका रूप यों वर्णन किया गया है ।

चन्द्रार्काञ्जितिष्ठिः कुलिशवदनखश्चलात्युग्रजिह्वः
काल्मौ दुर्गा च पच्छौ हृदयजठरगौ भैरवोवाङ्वार्गिनः
अस्त्रस्त्रीव्याधमृत्युशरभवरखगञ्जवानातिवेगः
संहर्त्तासर्वशत्रून् जयतिसशरभः शालवः पक्षिराजः

अब कहिये क्या यह अवतारों के बहाने से सुझे गाली देना नहीं है ? फिर बावन के नाम से सुझे धोखे बाज और जाल साज बनाया है, क्या सुझे पुराण वालों ने पाश्चिय वा पक्षपाती समझ रखा है कि मैं इन्द्र के बास्ते पहिले क्षोटा सा रूप बना के भिज्ञा मांगने जाता और फिर बिकट रूप बनाता और बिचारे निरपराध बलि को छल के कौद कर देता, क्या मैं अन्याधी हूँ कि निरपराध को दण्ड देता हूँ फिर पुराण वाले यह भौ कहते हैं कि बालून सदा बलि के द्वार पर पहरा दिया करते हैं क्या यह सम्भव है कि ईश्वर किसी का पहरेदार हो सक्ता है । खैर एक और भी बात सुझे याद आई है जब कृष्ण महाराज से शालव लड़ने की हारिका में गया था तब कृष्ण बलराम की हारिका की रक्षा के बास्ते घर पर छोड़ के आप शालव से लड़ने को आये तब घोर घमसान मच गया कृष्ण को छलने के बास्ते शालव ने माया से बसुदेव का सिर बनाया और कृष्ण को दिखलाक कहने लगा कि ले मैं तेरे पिता का सिर काट लाया उस समय सिर को देख के कृष्ण महा-

राज के होश हवाम गुम होगये और रण में मुख भोड़ के रोने लगे, बहुत देर के बाद जब ध्यान आया कि मैं बलराम को रक्षा के बासे छोड़ आया था और बलराम ऐसे साधारण बौर नहीं हैं जिनको शाल्व क्षण मात्र में जीत लेता, इस से निश्चय होता है कि यह दानवी माया है देखिये तो क्षण की सर्वज्ञता को कैसा साफ उड़ा दिया है यह तो भागवत की बात है अब भागवत का हाल सुनिये इस—मैं लिखा है कि जब रुकमिणी के गर्भ में प्रद्युम्न की उत्पत्ति हुई तब ही सूतिका गहर से प्रद्युम्न को कोई उठा ले गया, श्री क्षण पुत्र के बिंह से अत्यन्त दुःखी हुए और कई दिन तक रोते फिरा किये परन्तु बालक का बुद्ध पता न मिला तब नारद ने आके क्षणको समझाया कि सम्बर दैत्य तुम्हारे पुत्र को उठा ले गया है तुम कुछ मत घबड़ाओ वह स्त्री के सहित तुम से आके मिलेगा, खैर अन्त में ऐसा ही हुआ कि प्रद्युम्न सम्बर दैत्य को मारके अपनी स्त्री रति के सहित कड़ वर्ष के पश्चात् क्षण के पास आया पुराण बनाने वाले से कोई पूछे कि जो क्षण अपने गुरु पुत्रों को लाने के समय सर्वज्ञ बने थे और मरे हुए गुरु पुत्रों की यमराज के पास लेने को गये थे वह इतना भी न जान सके कि मेरे पुत्रको कौन लेगया और न उसको कुड़ाके लाये, कहाँ तक कहूँ अवतारी के विषय में खूब ही लोला रची है, इसके अतिरिक्त मुझे भी खूब ही कलङ्क लगाये हैं जय विजयके विषय में जो कथा लिखी है वह भी हँसीमें भरी हुई है देवगण ! यह क्या हँसी की बात नहीं है कि जो स्वयम् मुक्तिदाता है उसके ही पार्षदोंको राज्य स बनादिया फिर— “आप गलन्त पाखिया यजमान भी गाले” ।

इस कहावत के अनुसार जय विजय के कारण मुझे भी मछली और कछुआ बनना पड़ा फिर हर बार मैं उनको मुक्ति देता रहा पर वह बराबर जमा लेते ही रहे, महाश्य मैं कहाँ तक कहूँ या तो आप लोग पुराणों को खारिज कीजिये नहीं तो मैं ईश्वरपन से ध-

स्त्रीफा देता हूँ, विष्णु महाराज को और भी बहुत कुछ कहना था परन्तु एक ही व्याख्यान में कई दिन व्यतीत हो जाने के भय से उनका व्याख्यान रोक दिया गया ॥

विष्णु भगवान् के बैठते ही सूर्यनारायण खड़े हुए और कहने लगे:—

देवद्वन्द्व ! सुमेरु आपलोग भलीभांति जानते हैं कि मैं स्फटिकर्त्ता ईश्वर को उस महिमा को प्रकाशित करने वाला हूँ जिस से उस को अपूर्व कारीगरी और असीम विज्ञान का प्राणीमात को परिचय मिलता है, स्फटि के आरब्ध में हो परमेश्वर ने सुमेरु इस अभिप्राय से निर्माण किया था कि मेरे आकर्षण से अनेक लोक अपनी सीमा पर स्थिर रहें परन्तु पुराण वालों ने मेरी उत्पत्ति अझुत प्रकार से लिखी है । लिखा है कि कश्यप की स्त्री अदिति के गर्भ से मेरी उत्पत्ति हुई, भला कहिये तो कि यदि मैं किसी स्त्री के गर्भ से उत्पन्न होता तो मेरे? जन्म से पूर्व के मनुष्य अर्थात् मेरी माता पिता ही क्यों कर देखते, क्या वह लोग अन्यथे थे? इसही प्रसङ्ग में मैं यह भी कहे देता हूँ कि पुराण वालों ने मेरे मिल बायुदेव को भी ऐसी ही दोष लगाया है लिखा है कि जब बायु अपनी माता के गर्भ में थे तब इन्द्र उसकी माता के गर्भ में बुस गये और बासक के ४८ टुकड़े कर डाले जब बायु की माता की चेत हुआ तब उसने इन्द्र को शाप दिया, क्या यह असम्भव और अश्वील बात नहीं है कि देवराज इन्द्र अपनी विमाता (Step mother) के गर्भमें चलेगये? खैर मेरे विषय में जो पुराण वालों ने लिखा है वह बिल्कुल असत्य है, लिखा है कि दुर्वासा ऋषि से कुन्ती ने मंच ले के सुमेरु मंत्र बल से अपने पास बुलाया वह कन्या थी मैंने उस से व्यभिचार की इच्छा प्रकट की जब वह सचमत न हुई तब मैंने उसे वर देके प्रसन्न किया, कहा कि तेरा कन्यापन नष्ट न होगा और तेरा पुत्र मेरे ही समान तेजस्वी होगा कुन्ती इस बात को

सुनके राजी हुई और मैं जनाविलजन्म के कस्तूर से बरी हुआ
मगर (Rape case) कन्यात्व नष्ट का दोष तो मेरे ऊपर लग ही
गया खैर ! कुन्ती कौं गर्भस्थापन कर के मैं फिर आकाश में जा
चमका और १० मास के पश्चात् कुन्ती कौं पुत्र उत्पन्न हुआ इस
पुत्र की उत्पत्ति भी विलक्षण है लिखी है कि कुन्ती के कान से
वह लड़का पैदा हुआ, वाह जी वाह ! क्या ही कथा गढ़ी गई है
(मैं ठीक कहता हूँ कि यह कथा लाल बुझकड़ की इस कहानी
के अनुसार है कि एक बार लाल बुझकड़ के घाम में कोई सौदा
गर हाथों लेग्राया उसको देखके ग्रामबासी चकित हुए और लाल
बुझकड़ से पूछने लगे कि बतलाओ यह क्या है ? लाल बुझकड़ ने
उत्तर दिया कि “ लाल बुझकड़ बूझियां और न बूझे कोय । रात
इकट्ठी हो गई यादिज्जी वाला होय ” बस इसही प्रकार से राधा
पुत्र का कर्ण नाम सुन के ही कान से पैदा होने की कहानी गढ़ी
गई है) भला कान से भी कहाँ पुत्र उत्पन्न होते सुने हैं फिर ता-
रीफ यह है कि लोहे का जिरह बख्तर पहिने ही उसका जन्म
होना लिखा है, क्या कोई वैद्य किसी विद्या से सिद्ध कर सकता है
कि माता के पेट में लोहे का जिरह बख्तर बन जाय, आप लोग
खूब समझ सकते हैं कि राधेय कर्ण को क्षत्रिय बनाने के बास्ते
जो यह कथा गढ़ी गई इस में सुमि और पाण्डवों की माता कुन्ती
को बड़ा भारी दोष लगाया गया है, फिर क्या को मेरी सूझी
लिखा है, नृसिंह पुराण कौ १८ अध्याय में मेरे बंश को अङ्गुत कथा
लिखी है, लिखा है कि त्वष्टा को कन्या संज्ञा से मेरा विवाह
हुआ, जब वह मेरे तेज को न सह सको तब अपने पिता के पास
गई उमके पिता ने यह कह के फिर मेरे पास उसे भेजा कि मैं
सूर्य के पास आके सूर्य के तेज को कम कर दंगा तब फिर वह
मेरे पास आई और रहने लगी उसके गर्भ से मेरे तीन सन्तान हुईं,
वैवस्त मनु, यम और यमी नाम की एक कन्या इसके पश्चात् संज्ञा

मेरे तेज कों न सह सकी तब आपतो घोड़ी बनके उत्तर कुरु देश
को चलौ गई और अपनी छाया को मेरी स्त्री बना के मेरे घर छोड़
गई तब मुझे इतना भौं ज्ञान न रहा कि यह मेरी असल स्त्री नहीं
है तब उस छाया से मेरे तीन सन्तान फिर हुईं, मनु, शनैश्चर और
तापतो नाम की कन्या, छाया। अपनी सन्तान से अधिक प्यार क-
रती थी और संज्ञा की सन्तान से कम प्रेम रखती थी इस कारण
यम और यमी ने मुझे से कहा तब मैंने छाया को समझाया पर
छाया ने क्रीध कर के यम को शाप दिया कि तू प्रेतों का राजा हो
आर यमी को शाप दिया कि तू नदी हो जा, तब मैंने भी छाया
की सन्तान को शाप दिया कि शनैश्चर तू क्रूर यह हो जा, और
तापतो तू भी नदी हो जा, तब मैंने ध्यान कर के देखा तो मालूम
हुआ कि संज्ञा घोड़ी का रूप धारण किये उत्तर कुरु देश में दिच-
रती है तब मैं भी घोड़ा बन के भागा और उस से दो पुत्र उत्पन्न
किये वहो आप लोगों के डाककृत अस्थिनी कुमार हैं, भला कहिये
तो मुझे कैसा घोड़ा बनाया है, कोई पुराण बनाने वाले पोष से
पूछे कि जब मैं घोड़ा बनके कई वर्ष तक उत्तर कुरु देश में रहा
था तब जगत् में प्रकाश कौन करता था, देववृत्त में आपलोगों
से प्रायं ना करता हूँ कि इन देवकुल कलङ्क कारी पुराण दुर्लक्षि
को इतिहासों की लिट (सूचिपत्र) से अवश्य काट हीजिये ।

सृथ नारायण के बचन की ताईद महर्षि अगस्तु ने कौ और
कहा कि पुराणों का नाम आज से पंच (दिनांगी के अख्बार)
रखा जाय क्योंकि इन में ऐसी ही हँसी की बातें लिखी हैं, मेरे
विषय में लिखा है कि अगस्तु का जन्म घड़े से हुआ और फिर
लिखा है कि मैं ममुद्र को पी गया, भला जो खुद घड़े से पैदा हो
वह समुद्र को क्यों कर पी सकता है ? क्या घड़े में समुद्र समा सकता
है ? अब मेरे चरितों को सुनिये कि दक्षिण पथ में आतापि और
बातापि नाम के दो दैत्य रहते थे वह सदैव कुल से ब्राह्मणों को

निमंवित करके बुलाते थे और उन दैत्यों में से एक बकरा बन जाता था और दूसरा उसे मार के ब्राह्मण को खिला देता था एक दिन मेरा भी उन्होंने निमंत्रण किया पर यहाँ तो उहरे गुरु घण्टाल उसे ब्रह्म के पचा गये फिर वह भी मारा गया इसके अनन्तर मैंने समुद्र को पिया और मूत्र के मांग से निकाल दिया गोया व मेरे इन्द्रिय जुलाब था फिर विष्णुचल पर्वत सूर्य को रोकने के बास्तु ऊँचा होता जाता था तब देवताओं ने सुभ से प्रार्थना की, मैं पर्वत के पास गया वह प्रणाम करने को पृथिवी में गिरा मैंने उसके सिर पर हाथ रख के कहा कि जब तक मैं तीर्थयात्रा कर के न लौटूं तब तक तुम ऐसे ही पड़े रहो बस मैं तो आके तारा बन गया और विष्णुचल अब तक वैसे ही पड़ा है, इस कथा में प्रथम तो सुझे धोखेबाज़ सिद्ध किया फिर सृष्टिक्रम विश्व जड़ का चैतन्य के समान प्रणाम करना और मेरे बचन को मानना आदि असम्भव बातें सिद्ध की हैं, क्या हम महर्ष होके भी मांस भक्षण करते? समुद्र का ज्ञारहो ने पुराणों से जो प्राचीन पुस्तक है उनमें बराबर लिखा हुआ है परन्तु उसको भी मेरा मूत्र लिख दिया, इन कथाओं से हमलोगों की बड़े दोष लगते हैं इस कारण इन को जरूर ही मन्त्रूख कर देना चाहिये ।

इस के अनन्तर सांख्य शास्त्र के प्रणिता महर्षि वदिल खड़े हुए और कहने लगे कि मैंने जो सांख्य शस्त्र बनाया है, उस को बिना बिचारे और पढ़े ही भागवत में मेरे मत को प्रकाशित किया है इस कारण मैं भागवत बनानेवाले परमदाखलत बेजाका जुम्मे कायमकर के नालिश करने वाला था परन्तु अब आप लोगों ने पंचायत करके भागवत को रही करने का प्रस्ताव किया है इस कारण मैं आप लोगों को धन्ववाद देता हूँ पुराण वालों ने सुझे भी चोरों का रक्षक लिख दिया है, उन्होंने लिखा है कि जहाँ मैं तपश्चर्या करता था वही राजा इन्द्र राजा सगर के अप्तमधार्य छोड़े भीड़े को कुरा के

बांध गया मैं समाधिस्थ था इस कारण सुभे कुल खबर न पड़ी, जब राजा सगर के ६०००० पुत्र घोड़े को सब जगह ढूँढ़ के हार गये तब उन्होंने शृंखों के नीचे ढूँढ़ने के अभिप्राय से शृंखों को खोदना आरम्भ किया उन्होंने के खोदने से सात समुद्र बन गये (और जव गंगा जो आई तब उन में पानी भरा) शृंखों को खोदते खोदते उनको मेरा आश्रम मिल गया तब उन्होंने सुभे पीड़ा दी उस पीड़ा से मेरों समाधि खुल गई, ज्योंही मैंने उन को नज़र उठा के देखा, त्योंही वह सब भस्म हो गये, भला कहिये क्या मैं ऐसा हत्यारा हूँ कि ६०००० भनुषों को मार डालता, हम लोग कर्षण क्या हुए मलकुलमौत हो गये, फिर राजा प्रियव्रत के रथ की कथा इस से भी बिलक्कण लिखो है अर्थात् सूर्य की सर्वांगी से जगत् में बराबर चान्दना रखने के वास्ते जो सात दिन स्थिर रथ पर चढ़ के घूमे थे उन के प्रकाश से सात दिन तक जगत् भर में चान्दना रहा था और उन के रथ के एक ही पहिये की लीक से सात समुद्र बन गये, इन ही राजा प्रियव्रत को ११ अरब वर्ष तक राज्य करते लिखा है, स-ध्यगण अब कहिये किस की सच्चा माना जाय अर्थात् राजा सगर के पुत्रों के खोदने से समुद्र बने वा राजा प्रियव्रत के पहिये से समुद्र बने हम तो इन दोनों ही कथाओं को मिथ्या समझते हैं क्योंकि वेदों में लिखा है कि सुष्टि के आरम्भ में ही ईश्वर ने समुद्र को बनाया ।

महर्षि कपिल के व्याख्यान का अनुमोदन करने को महर्षि व-शिष्ट दण्डायमान हुए और यों कहना आरम्भ किया । सभ्य बृन्द ! और सभापते पुराणों के विषय में मैं क्या कहूँ वह तो असम्भव और ग्रमाण शून्य कहानियों का भण्डार है, महर्षि विश्वामित्र और मेरे विरोध के कारण में लिखा है कि एक बार विश्वामित्र जी (जब राजा थे) बन में शिकार खेलने को आये मैंने उन को धर्मज्ञ राजा समझ के अपने आश्रम पर निमंत्रित किया, उन्होंने मेरे आश्रम

पर खान पान की जब कुछ भी सामयी न देखी तब बड़ा आङ्गर्य करने लगी मैंने उन का अभिभाव भङ्ग करने को उन की महत्वी सेना और अमात्य वर्ग के सामने ही सुरभी गी से कहा कि तुम सब का यथा योग्य सज्जान करो मेरे बचन को सुन के सुरभी ने हुंकार क्रोड़ी उस के हुंकारते हो सहस्रों दास और दासी उत्पन्न ही गये फिर सुरभी की हुंकार से ही सब प्रकार के भव्य भोज्य और चोय्य तथा लेह्न पदार्थ उत्पन्न हो गये और दास दासियों ने सब के पास पहुंचा दिये, इस अद्भुत बात को देखके गाधिसुअन विश्वामित्र बड़े चाकत होके सुभ से कहनेलगे कि ही महर्षि ! यह गौ तो हमारे योग्य है तुम भिजुक इसे लेके क्या करोगे ? मैंने कहा, राजन् ! यह हमारी यज्ञ धेनु है इसको लेनेकी आप इच्छा न कौजिये, मेरे बहुत समझाने पर भी विश्वामित्र न साने और अपना चात्र बल दिखाने लगी, तब मैंने कहा कि तुम जर्वदस्त ही यदि शक्ति रखते होतो मेरी यज्ञ धेनु को लेजाओ, विश्वामित्र ने अपने सैनिकों को आज्ञादी कि बशिष्ट को धेनु को खोल लो जब वि० मि० के स्वेक मेरी गौ को खोलके ले चले तब धेनु सुभ से कातर स्वरके साथ कहा कि महर्षि मेरा क्या अपराध है जो आप मुझे परित्याग करते हैं, मैंने कहा सुरभि ! मैं तुझे परित्याग नहीं करता हूं बरन राजा [विश्वामित्र जब-दर्दस्ती तुझे छीन के लिये जाता है, यदि तू अपनी रक्षा कर सकी हो तो कर मेरे बचन को सुन के धेनु ने झङ्घार किया और उसके क्रोध करते ही उसके खुर्ची से खुरासानी राचस तथा और २ प्रकार के सहस्रों राचस उत्पन्न होगये और विश्वामित्र की सेना से युद्ध करने लगे उन राचसों ने क्षण मात्र में विश्वामित्र की सेना को विघ्नकर दिया, जब विश्वामित्र की सब सेना मारी गई और वि० मि० एकले खड़े रह गये तब उनको चात्र बल पर अविज्ञास और छुए उत्पन्न हुई और वह उस ही समय राज्य क्रोड़ तप करने बन की चले गए, आप लोग विचारिए कि वह गौ थी वा ब्रह्मा की भी दादी थी जिस

के हुँकारते हो सहस्रों दैत्य पैदा होगए, यदि यही बात है तो इन्द्र न क्यों नहीं अपने घर में एक वैसी गौ पाली जिस्के कोई भी दैत्य दानव खर्ग पर चढ़ाई न कर सके, खैर एक और अद्भुत कथा सुनिए मेरे यजमानों के साथ मेरी लड़ाई का कैसा बयान पुराणों में लिखा (द० भा० स्क० ६ अ० १५) राजा इच्छाकु के १२ वें पुल राजा निमि ने एकबार मुझे यज्ञ करनेको बुलाया, राजा निमि का वह यज्ञ ५००० वर्ष में पूर्ण होने वाला था परन्तु इस यज्ञ से पहले मुझे देवराज इन्द्र ने यज्ञ करने को निमिलित किया था इस कारण मैंने राजा निमि से कहा कि प्रथम मैं इन्द्र की यज्ञ कराय आऊं पश्चात् तुम्हारी यज्ञ कराऊंगा अभी तुम यज्ञ मत करो, राजा निमि ने कहा कि मैं सब ऋषियों को बुला चुका हूँ और सब सामग्री भी इकट्ठी करत्तुका हूँ अब यज्ञ को नहीं रोक सकता हूँ आप हमारे बंशके पुरोहित हैं इस कारण हमें छोड़ के धन के लोभ से इन्द्रके यहां तुम को जाना उचित नहींहै परन्तु मैंने राजा निमिका कहना न माना और मैं इन्द्र के यहां यज्ञ कराने चला गया तब राजा निमि ने महर्षि गौतम को पुरोहित बना के यज्ञ कर लिया जब मैं इन्द्र की यज्ञ को समाप्त करके ५००० वर्ष के पश्चात् राजा निमि के घर खौट के गया तब देखा कि राजा शयन करते हैं राजा के सेवकों ने राजा को न उठाया तब मुझे ऐसा क्रोध आया कि मैंने राजा को शाप दिया कि तेरा शरीर नष्ट हो जाय जब मैंने शाप दिया तब राजा के सेवकों ने राजा को जगाया वह जाग के मेरे एस आया और कहने लगा कि मष्टर्ष ! तुम ने अकारण सुभे शाप दिया और प्रथम लोभ बश सुभ यजमान की यज्ञ को छोड़ के इन्द्र के घर चले गये थे यदि जागता होता और तुम्हारे पास न आता तब अवश्य अपराधी होता परन्तु तुम ने सुभ निन्दाग्रस्त को शाप दिया इस कारण तुम्हारा अविवेक पूर्ण और क्रोधी शरीर भी नष्ट होजाय, राजा के शाप को सुनके मैं ब्रह्मा के पास गया और उन से

सब वृत्तान्त सुनाया ब्रह्माने कहा तुम्हारा दूसरा जन्म मिला बरथ के यहां होगा और तुम्हारा विज्ञान विनष्ट न होगा खैर मेरा दूसरा जन्म छुआ और किर घड़ेसे मेरी उत्पत्ति हुई, अब राजा निमिका हाल सुनिये, उसका भौ प्ररीक नष्ट हुआ परन्तु ब्रह्मा के बर से उस का बास समस्त मनुष्योंके नेत्रों पर होगया, देखिए तो क्या दिल्ली की कथा है कि राजा का निवास सब मनुष्यों के नेत्रों पर हो गया क्या उसे पूर्व मनुष्योंका पलक (निमेष) नहीं लगतो थीं ? यदि यही बात है तो महर्षि गौतम ने जो जीवके साधारण लक्षण लिखे हैं वह क्या मिथ्या है ? महर्षि बशिष्ठजी की बात को सुनके सभापति जी ने अपने आसन से उठके कहा कि अभी तक किसी वस्तुके अधिकार देवता ने अपनी सम्मति प्रकाशित नहीं की है जिससे उस गरोह की राय भी जाहिर हो, लिहाजा अब किसी गरोह के देवता को अपनी सम्मति प्रकाशित करनी चाहिये श्रीमान् सभापति जीकी आज्ञा को सुनके सब नायियों के अधिपति श्रीमान् समुद्र देव खड़े हुए और कहने लगे कि—

सम्युक्त ! पुराणवालों ने जो मेरी दुर्दशा की है वह अकथनीय है, आप लोगों ने मेरे मध्यने की कहानी को अवश्य सुना होगा ? देखिए तो कैसा वाहियात भगड़ा मचाया है कि मेरे मध्यने के वास्ते मेर पर्वत को उठा के देवतों ने मेरे बीचमें छाल दिया किर सर्पराज बासुकी की नेत्री (रस्सी) बनाके घरटेके साथ बुमाया उस बुमाने में भी बिशु ने चालाकी की कि दैत्यों को सर्पराज के सुखकी और खड़ा किया और देवतों को पूछ की और खड़ा किया सिस्ते सर्प का विष दैत्यों को ही चढ़े और देवता उसे बचे रहे खैर यह भी चालाकी चमत्कारिणी और हितकारिणी न हुई और न सर्प काटा तब जो २ चीज़ अच्छी २ निकली वह देवतों को मिलती गई और खुरी २ चीज़ बिचारे दैत्यों को दी, उच्चश्रद्धा घोड़ा तो खुद देवरा ने इथिया, लख्मी विष्णु को पसन्द हुई और मेरे विचारे भीला

कि विष उनको पीनापड़ा फिरजब मंदिरा निकली तब तो वह दि-
ल्ली हुई कि भाड़ांको भी मात कर दिया, दैत्यों को छलने के बास्ते
स्वयम् विष्णु भगवान् को मोहनी रूप धारण करना पड़ा, उस रूप
को देख के हमारे भोलानाथजी ऐसे बहके कि विष्णुकी भी छकड़ी
भूल गई, उनको पिण्ड कुड़ाना कठिन होगया और विष्णु ने उस हो
मोहनी रूप से दैत्यों को छलके देवतों को असृत पिलाया, भला
सोचिये तो कि खारी पानी में असृत कहाँ से आया सो भी असृत
ऋषि के भूत में, देव इन्द्र ! क्या पुराण वालों ने आप लोगों को यह
गली नहीं दी है कि अगस्त ऋषिके पेशाब से मरी उत्पत्ति लिखी
और उसे उत्पन्न हुए असृत को आप लोगों को पान कराया, फिर
यह भी बिचारने की बात है कि मुझमें क्या किसीने गुड़ वा महुआ
घोल रखे थे जो सुख में से शराब निकल आई ? इसके अंतिरक्त
जिन धन्वन्तरों के पिता दीर्घतमा थे और जो काशी के राज कुल
में पैदा हुए थे उन धन्वन्तरों की भी उत्पत्ति मेरे जल में से ही हुई
बतलाते हैं, क्या धन्वन्तरी ककुए या मछरी थे जो पानी से उत्पन्न
होते ? फिर सुशुत में धन्वन्तरी ने स्वयम् कहा है कि—

“ अहंहि धन्वन्तरिरादिवीजराहजामृत्युहरीमराणाम् ।

शत्याङ्गमङ्गैरपरैरपेतम् ग्रासोम्मिगाश्यूयङ्गोपदेष्टुम् ॥

नहीं मालूम धन्वन्तरी ने यह शेख्खी क्यों बघारी है ? यदि मेरे
मथने से धन्वन्तरी की उत्पत्ति होती तो वह अपने मूँ से आदिदेव
क्यों बनते ? क्या अपने मूँ से मिठू बनना सभ्यता से बाहर नहीं है

महाशय ! जिन नदियों का सुभे पति लिखा है उनको कथा
सुनिये, देवो भाठ में लिखा है कि एक दिन ब्रह्मा के दर्वार में गङ्गा
जी खड़ी थीं इन्द्र भी दर्वार में हाजिरी देने को उसही समय पहुंच
गये, इनके अलावा और और देवता भी दर्वार में हाजिर थे, इन्त-
फाकिया वायु से गङ्गा के शरीर का बस्त उड़गया, इससे सब देवतों
ने नीची नज़र करलौ परन्तु देवराज तिमी बांधकर देखिए रहे और

गङ्गाजी भी सुखुराई, इस धृष्टता (विश्रदबो) को देख कर ब्रह्मा ने दोनों को शाप दिया किन्तुम मनुष्य योनि में जन्मलो इस ही कथा की भूल भुलैया में पुराण वालों ने एक और भी कथा जोड़ी है, जब गङ्गाजी शाप पाके ब्रह्मा के दर्वार से लौटी आती थीं तब उड़ो ने देखा कि आठों बसु रासो में बैठे रो रहे हैं, वह सब गङ्गाजी को देख कर और भी रोये तब गङ्गाजी ने उनसे पूछा कि तुम लोग क्यों रोते हो? उड़ोने उत्तर दिया कि हम सब को वशिष्ठऋषि ने मनुष्य योनि में जन्म लेनेको शाप दिया है, शापका कारण पृथ्वी पर बसुओं ने कहा कि हम सब भी अपनो स्त्रियों को साथ लेके बन बिहार (सैर) करते २ वशिष्ठजी के आश्रम पर पहुंचे वशिष्ठजी ने अपनो यज्ञ धेनु से अतिथि सल्कार करके सब पदार्थ लेके हम लोगों का सल्कार किया, तब गौको इस अपूर्व शक्तिको देख कर हम में से एक बसुकी स्त्री ने अपने पति से कहा कि इस गौ को लेलेना चाहिये स्त्री की अनुचित हठ से उस बसु ने गौ को चुरा लिया परन्तु वह दिव्य गौ थी औ इस कारण बोल उठी कि इससे वशिष्ठ महाराज क्रुद्ध हुए और हम लोगों से बोले कि तुम मनुष्यों के समान बुद्धि रखते हो इस कारण तुम सब मनुष्य योनि में जन्मलो महर्षि के इस शापको सुनके हम लोगों ने बड़ी बिनय की उससे वशिष्ठजी का जब क्रोध शान्त हुआ तब उड़ों ने कहा कि जिस ने गौ चुराई है वह अधिक दिन तक मनुष्य रहेगा और अन्य बसु जन्म लेते ही शाप से सुक्त हो जायेंगी, हे गंगी! इस ही दुख से हम लोग रो रहे हैं, गंगा जी ने यह सुन कर उन्हे संतोष दिया और अपने दुखड़े को सुनाया तब यह सलाह ठहरी कि वसु गंगा के गर्भ में जन्म लें खैर यही किया गया और देवराज इन्द्र राजा शान्तनु बने और गंगा उन को पत्नि हुईं जब वह अपनी प्रतिज्ञानुसार सात पुत्रों को मार चुकीं तब वही आठवां पुत्र भौष्म उत्पन्न हुए और पिता के वर से स्थाधीन मरण हो गये। यह तो गंगा जी की कथा हुई, यसुना और तापती

का शाल आप लोग सुनही चुके हैं इन के अतिरिक्त और भी कहूँ
एक ऐसी नदी है जिनको पौराणिक लाल बुमकड़ों ने पहले जन्म
की मानुषी लिखी है और वह परथार के शापों से नदी ही गई है
परन्तु यह किसी पुराण में नहीं लिखा कि लगड़न की टेमस नदी
पहले जन्म में कौन थी हाँ एक बात तो मैं कहना भूल ही गया
कि एक नदी एक राजा की राल में बनी है और वह राजा जिस
को परम धर्मात्मा महाराज हरिष्वन्द्रका पिता लिखा है वह अभी
तक आधे खग में टंगा है और उसके मुख से राल गिर रही है बस
वही राल नदी होके बहती है इस नदी का नाम कर्मनाशा इस
कारण है कि उस में स्नान करने से वा उस का जल स्पर्श करने से
ही मनुष के पूर्व लत सब सुकर्म नष्ट हो जाते हैं, क्या मैं आप
लोगों से यह प्रश्न कर सकता हूँ कि उस नदी के आस पास निवास
करने वाले पाप पुंज नहीं बन गये हींगी ? क्या उन लोगों के वास्ते
दृश्वर दयालु और न्यायकारी नहीं रहा है ? फिर आइर्य यह है
कि उस ही नदी के किनारे पर बसी झुट्ठ गया पुरी में पितरों का
आङ्ग करने से खग का फाटक खुल जाता है उस पर भी तुरा यह
है कि जिन पितरों का गया में आङ्ग हो जाता है उन की सुक्ति ही
जाती है पर फिर भी उन का वार्षिक आङ्ग होता रहता है । देव
हृन्द ! मैं प्रकरण विरुद्ध आङ्ग के विषय को कहने लगा था इब मैं
केवल यही कहूँके अपने व्याख्यान को समाप्त करूँगा कि श्री पौ-
राणिक योप राज ने अपने मन धड़त भूगोल में लिख दिया है कि
शराब का धीव का और ऊख के रस का भी समुद्र है यदि रह
बात सत्य होती तो सब लोग मजे से धीव के समुद्र से घड़े क्यों न
भर साते और मध्य प्रिय अंगेज उस खुदाई शराब का व्यापार क्यों
न करते ? इस के अतिरिक्त यदि शराब का समुद्र होता तो सुभे
मथके शराब क्यों निकाली जाती ? सभ्य हृन्द ! मैं तो यही चाहता
हूँ कि जो पुस्तक मुगालते से भरे हुए हैं उनको मात्य पुस्तकों की
सूचि में से अवध्य काट देना चाहिये ।

समुद्र का व्याख्यान ही जाने के अनन्तर भगवती भूमि उठीं
और थोकाहने लगीं, दैष्टब्द ! आप लोग जानते हैं कि जिन पर-
सागुओं से मेरा संगठन हुआ है वह परमाणु नित्य है और उन का
संयोग ईश्वर ने स्थिति के आरम्भ में किया है, परन्तु पुराण वालों ने
मेरी पवित्रता को घटाने के निर्मित लिख दिया है कि मधु और
कैटम की चर्ची से पृथ्वी बनी है भला विचारिये तो कि यदि मधु
कैटम से पहिले मैं न होती तो जिस जल पर दिष्टु सीधे थे वह
किस के आधार पर ठहरता ? फिर मेरे आधार के विषय में वह
बहार की है कि जिससे आप लोग अवश्य हँसेंगी, मेरा आधार शिष्य
नाम को लिखा है भला यह क्या दिल्ली की बात है कि एक वह
सर्प जो कदू के गर्भसे उत्पन्न हुआ वह सुनी क्यों कर धारण करता
और उस के जल्द से पूर्व मैं काढ़े पर रखी थी फिर उसका भी एक
आधार लिख दिया है परन्तु हज़रतों को यह न मालूम हुआ कि
हम सब लोक परम्परा के आकर्षण से ठहरे हुए हैं, फिर यह भी
पुराण वालों को मालूम नहीं है कि जड़ पर्वतों के सन्तान क्यों
कर होती, पर्वतों का विवाह पर्वतों की सन्तति और पर्वतों का
निमंत्रणों में जाना न मालूम किस विज्ञानसे सिद्ध करते हैं ? पौरा-
णिक महात्माओं ने लाख लाख योजन का एक एक छक्क लिख
दिया है और द्वीपों का जो विस्तार लिखा है उस को पढ़ते ही
इसी आती है सभ्य महाशय ! आज इतना समय नहीं है कि मैं
अपनी पूरी सम्पति वा द्वीपादिकों की पूरी कथा को प्रकाशित
करूँ किन्तु इतना अवश्य कहती हूँ कि पुराणों ने मेरे विषय में
सैकड़ों असच्चर बातें लिखी हैं इस कारण पुराणों को अवश्य खा-
रिज़ कर देना चाहिये ।

भगवती भूमि की वक्तृता को सुन के श्रीमान् सभापति जी ने
सिंहासन से उठकर कहा कि सभ्य छन्द ! आप लोगों ने इस महत्वी
सभा में जितने व्याख्यान सुने मेरी सम्पत्ति

यही है कि पुराणों के बनाने वालों ने आप लोगों पर सहस्रों मिथ्या दीप लगाये हैं अतएव आप लोगों को सम्मति है कि उन सब पुराणों को रही खालि में पेंक दिया जाय, यह भी हित ही गया है कि भगवान् विष्णु और शिव महाराज भी आप लोगों से सहमत हैं यद्यपि ब्रह्मा जी ने अभी तक अपनी सम्मति प्रकाशित नहीं की है तो भी वह आप लोगों से ज़रूर इनकाका राय हींगी क्योंकि उन को भी पुराण वालों ने पुली गमन का महा कलङ्क लगाया है इस के सिधाय भागवत के कर्ता ने उन को अच्छानी और चीर भी लिखा है सुतराम् उन की राय आप लोगों से मिलती है मगर अभी तक बहुत से देवता और देवियों ने अपनी सम्मति प्रकाशित नहीं की है और उन की राय इस बारे में निश्चायत ज़रूरी है, आप लोग दह भी खुदाल कर लोजिये कि अब बहुत ही अतिकाल हो गया है यदि अब किसी देवता का व्याख्यान होगा तो सन्ध्योपासन का समय भी व्यतीत हो जायगा इस कारण भीरी सम्मति में आज सभा का विसर्जन करना उत्तम जान पड़ता है और फिर दूसरे हिन सभा कारके इस विषय पर विचार किया जाय ।

सभापति की सम्मति को सुन के खामी प्रङ्गणाचार्य ने तथा राजाराम मौहन राय चाहि अहैतवादी धर्माचार्यों ने नाक भौंह सिकीड़ की कहा कि सन्ध्योपासनके वास्तु सभाके कार्यको रोकना उचित नहीं है क्योंकि जिन लोगोंको आत्माका साक्षात् कर हुआ है उन परिपक्ष ज्ञान वाले देवतों को वहिरङ्ग साधन खरूप उपासना को आवश्यकता नहीं है इनके प्रस्ताव को यूरोप के अनेक लोगों के साथ योग्यती मैडम्ब्रैवेटस्की ने अनुमोदन किया परन्तु श्रीरामानुजाचार्य तथा वरमपदारुढ़ महर्षि दयानन्द सरस्तीजी महाराज के शिष्यों ने इस प्रस्ताव का बड़े बल से विरोध किया और महामार्द साहिब ने यशोपीय लोगों को अपनी तेज़ दिखा के धमकाया कि

४५६ ओ३८० लै४५८

कण्ठी जनेऊका विवाह

परिदृत रुद्रदत्तजी शर्मा सम्पादका-

चार्य द्वारा लिखित

और

पं० शंकरदत्त शर्मा ने अपने
“शर्मा मैथीग प्रिंटिंग प्रेस” मुरादाबाद में
बापकर प्रकाशित किया।

तत्त्वज्ञान
१००० } सन् १९१५ } मूल्य
} रु॥ आठा

इस्तकै मिलनेकापता-पं० शंकरदत्त शर्मा वैदिकपुस्तकालय मुरादाबाद

भूमिका ।

आजकल भारतवर्षीय धर्मसम्पदायों में अनेक प्रकार के दक्षोसले चल रहे हैं यद्यपि उनका कुछ भी सिर पैर नहीं है तौभी अनेक लोग उनको धर्म समझ के करते हैं अधिक आश्चर्य यह है कि वर्तमान हिन्दू समाज के संशोधन का भार जिन परिदृष्टों के शिर पर अपित है वह स्वयम् उन अविवेकजन्य दक्षोसलों में फसे हुए हैं, इन दक्षोसलों में से तुलसी और शालिग्राम जी का विवाह भी एक दक्षोसला है, बस मैंने उस विवाह का मिथ्यत्व और बालकीडनसिद्ध करने के निमित्त ही “कठी और जनेऊ का विवाह” लिखा है।

“इस छोटे से पुस्तक को हिन्दूलोग धर्मग्रन्थ समझ कर अबश्य पहें क्योंकि इसके पढ़ने से मूर्तिपूजकों की परम पूजनीय तुलसी में जो ब्रह्मत्वा का दोष लगा था वह दूर हो जायगा ।

पं० रुद्रदत्त शर्मा रचित मनोहर पुस्तक ॥

पतञ्जलि-योगदर्शन-व्यासभाष्य-समन्वित-तथा महा-
राज-भोज-कृत योग-पार्त एड-ब्रह्मियुक्त योगशास्त्रका भाषा-
टीका १॥) स्वर्ग में महासभा ।) पुराणपरीक्षा ≡) स्वर्ग में सब-
जेवट क्षेत्री ।) उरदू में ।) कंठी जनेऊ का विवाह ।)॥
अन्य पुस्तकें ।

दृष्टान्त समुच्चय १०) द्वच्चपती शिवजीका जीवनचरित्र ॥)
हकीकतराय धर्मी ।)॥ सिक्खों के दश मुरु ॥) तर्क इस्लाम १०)॥
विष्णुता ।) कुरान की ज्ञान वीन ≡) यवनमतादर्श १) यवन-
मत परीक्षा ।) आर्य हिन्दू और नमस्ते का अनुसंधान ।)॥
विचित्र व्रह्मचारी ।)॥ बाल सत्यार्थ प्रकाश ।)॥

पुस्तक मिलाने का पता धैदिक पुस्तकालय सुरादाबाद

प्रौद्योगिकी

कृष्णली जानेझुक का विधाहि ।

३१५८

ए पु

भादों की चन्द्र दुःखकारी, आशियारी साक्षि
से देव मनवानी इन्द्र की राजधानी अमरावती औं
सम्पूर्ण सती सुचुमारी देवनारी श्रीब्रजचन्द्र आन-
न्द छन्द नन्द नन्दन का जन्मोत्सव बनाने के
वास्ते एकत्रित हुई, परस्पर अनेक प्रकार के हास
विलास होते होते श्रीमती बहारणी इन्द्राणी ने
विष्णु प्रिया लक्ष्मी जी से हंसते हंसते कहा कथा
वहिन ! तुम तो रात दिन सौतिया—ढाह से ही
दृष्ट रहती हो फिर तुमको जगतके मनुष्य रत्न-
खली सुखमनी क्यों मानते हैं ? श्री सावित्री दे-
र्वा बोल उठी अजी ! इन के अक्त भी ऐसे ही
रक्षिते होते हैं कि इनकी गुप्तलीलाओं को खुले
घाजार युक्त र गते हैं और यह भी ऐसी अक्त
बत्सला हैं कि उन पर रीझ ही पड़ती हैं, क्यों न
हो इस ही बैंतो इन के पति को इन के अक्त
गाली दिया करते हैं, गीतगोविन्द से लिखा हैं
“वाहिरिदि वलिन्दरन्तवकूषण मनोपिदविष्याते

नूनष्, यद्धा, नायातस्तिनिदयोयादि शब्दस्तुं
हृति किन्दूयसे, अथवा भूरश्याष को कहा एरेतो
बाप किया जिन और) श्री शौलानाथ की शाण
प्यारी शैलकुमारी पर्वती मुसकरा के बोली है बहिन !
कहती तो सत्य हो खेंने भी अपने एक भक्त के
घर इस ही श्रावण बास की शुद्धता एकादशी के
मित्रविलास में इनकी ऐसी ही लीला पढ़ी थी,
क्या कहूं बहिन ! ऐं अपने पुत्र समान भक्त ने
सम्मुख उस निस्त्रपत्र को देख के अपने घन में
बड़ी लज्जत हुई भला अपनी प्यारी लखी की
ऐसी बातें मुनके किसे लज्जा नहीं आती ? पा-
र्वती की बात को सुन महारणी हन्दाणी फिर
मुसकरा के बोली क्यों बहिन ! उस त्रपहीन पत्र
में ऐसी क्या बात लिखी थी जिस से तुषको ल-
ज्जत होना पड़ा ज़रा छुके थीं तो छुना दो । श्री
प्रती पर्वत मुता ने कहा बहिन ! क्या कहूं छुके
तो उन बच्चों को पढ़ते भी लज्जा आती है उस
में “प्रार्थना” शार्षक लिख के भीषे यह पढ़
लिखे थे ।

बलार-धीजत सांवरे के सद्गु गोरी अस्त उरक्ष
बातन रख क्षली बांह बाह खें जोशि । कहम

परम्परी घनेज पा पियाए ।

तरे डाढ़े दोउ ओढ़े एकहि पीत पिछोरी । चुवत
रह अझ बसन लिखट रहे थीं ज थीं ज दोऊ
ओरी । जलकनश्रवतसरपगिपलकन करन
जुगल चित चोरी । गावतहंसत रिकावत
हिलापिल पुनिपुनि भरन अंकोरी ।

इनक्षणी ने फिर ऐंह चढ़ा के कहा दूर ! दूर !
धड़ पड़े ऐसी मार्थना पै जिस में पेसी २ रहस्य
की बातें कही जाती हैं ।

इन सब की उथेली को सुन के श्री विष्णु
द्विया लक्ष्मी कुछ नीची आंख करके बोर्ही बहिन !
तुम सब शुश्रीला और लज्जावती हो इसी से अ-
पने पतियों की बात को पेट में छिपा के स्वती
हो, बेचारे गौतम के घर को घाल के आप कल-
दित धन्ना सहस्राश की कीर्ति को बढ़ाता है
वर्षोंकि वह देवतों के राजा हैं उन की बात कौन
कह सकता है और दीयाविहारी त्रिपुरारी तो ऐ-
लाज्जाप ही हैं उन का कहना ही दया है
नशों में किसी धीरनी धूर्ति पर जो जी दलभया
तो वह कुछ कहने योग्य बात नहीं हैं, पर एक
बात तो ये अरु पूर्वोगी, खला अस्तायुर को ज्य-
वादमाय नहीं बर्थों दाय या ? इसे उथेली को दृष्ट

पर्वत नन्दनी तो मुसकरा के चुप होगई परन्तु
महाराणी इन्द्राणी फटेख बोल उठीं बहिन ! जिस
बौखे ने काष को अस्थ करके रति को रांड बना
दिया उसकी किसी बात का ठिकाना यत सबको
गरज़ इसी प्रकारसे इंसास विलास की बातें करते १
देवराज की पत्नी ने सबको पान तमाखू दिया ।

अब सब देवपत्नी पान तताखू खा स्वस्थचित्
हो के बैठीं और गाने बजाने की ठहरी तब ही
विष्णुप्रिया तुलसी महाराणी उठ के देवाङ्गलासमाज
मैं खड़ी होके कहने लगीं । मैं अपनी सब बहिनों
से हाथ जोड़ के बिनय करती हूं कि मेरे हुँख को
सब मिल के दूर करें मैं आज ऐसे कष्ट मैं हूं कि
जिस का वर्णन करना कठिन है ? महाराणी इन्द्रा-
णी ने गम्भीरभाव से कहा तुलसी तुम अपने हुँख
हुँखों का वर्णन करो हम सब मिल के तुम्हारे हुँखों
को दूर करने का उपाय करेगीं और जो हुँख ह-
मारी शक्ति से दूर न होगा उसे हम देव राज इन्द्र
तथा सबेकलासम्पन्न विष्णुसे दूरकरने का उत्तोग
करेगीं ।

इन्द्राणी के आश्वासन देने पर तुलसी के-
ली, आशक्त आप लोगों के लक्ष मुख दरहा ही

बहुत देते हैं जो लोग सबातनधर्मी कहताहे हैं वह विधवाविवाह का खण्डन करते हैं इस से सुझे ददा कष्ट होता है क्योंकि विष्णु राहाराज ने प्रथम मेरे साथ नियोग किया था फिर मैं अपने पति जालन्धर के मरजाने पर विधवा हो गई तब से विष्णु के अक्त हरसाल में विवाह शालिष्ठम के साथ करते हैं इससे मेरे बे सब विवाह विधवा विवाह ही की रीति से होते हैं इस कारण जब कोई हिन्दू पण्डित किसी ठाकुरद्वारे में दैठ के विधवाविवाह या नियोग का खण्डन करता है तब मुझे ददा ही क्षोध आता है, मैं सब देवपतनियों से प्रार्थना करती हूँ कि यातो हिन्दुओं से विधवाविवाह स्वीकार करायाजाय नहीं तो उन से कहाजाय कि सुख विधवा का हरसाल विवाह न किया करें (सद्बोल उठीं ठीक कहतो हो) दूसरा दुःख मुझे यह है कि विष्णु राहाराज के नियोग से और शालिष्ठम के विधवाविवाह से जोधेरे अनेक कन्या उत्पन्न दुर्द हैं उनके विवाह करने की सुझे ददी चिन्ता हरी रहती है क्योंकि वे सब अब किशोरवस्था को नांच छार छार दरथा लो पाप होना चाहती हैं, यदि अप

की उनका विवाह न किया जाएगा तो देवतुल को कलंक लगने का धय है ।

बहारणी इन्द्राणी श्रीतुलसीदेवी के बच्चों की सुन के गम्भीर स्वर से बोलीं कि इस बात की विज्ञा मतकरों तुम्हारी पुत्री के बास्ते ऐसे उत्तम कुल का सदाचारी और आति ख्यातवान् वर दूँढ़ रखता है वह सर्वदा वेदाध्यात्म और यज्ञ करने वाले उत्तम यन्त्र-प्योंके पास हीरहता है। इन्द्राणी की बात को सुनके तुलसी देवी बड़ी असन्तुष्ट हुई और कहने लगीं कि उस वर का नाम और कुल भी यदि छुझे आदूष हो जाता तो मैं अधिक प्रसन्न हो के श्रीधर्ती को धृतियोगद देती । इन्द्राणी ने कहा कि वह वर स्वयं भरे शृष्टिकर्ता की पुत्र महर्षियों का साथी और यह नामी हन्त्री का ओरत है, आर्थर्दर्शी मैं शरण रथार्थी के अतिरिक्त कोई देव भी प्राप्तिकर्ता नहीं इसा आद्यार्थी वहीं हुआ जो उस का दिशाधी हो, इसका परिवर्त्तन आर्थ यज्ञोर्वति था जनेज है, तुम इस के साथ दिना विचर इनकी पुत्री करणी का विचार करही ।

श्रीधर्तीसंहारणी इन्द्राणी के शास्त्रार्थ और तुलसी जी की लोकाती एवं संघर्ष है बायनाजी के अद्वै-

लोहद दे गुह स्थिर दुआ कि कण्ठी का दिवाह
जनेजलैलाथ किया जाय परन्तु दिना वर पक्ष की
स्त्रीछति के विवाह का होना असम्भव है इसकारण
श्री विष्णु मिथा लक्ष्मी के घट्टे से देवर्णि नारद
को बुलाने का विचार आरम्भमुआ ।

नारद का वास छुलते ही गन्धर्वराज शिवा
बसु की प्यारी आर्या बोल उठीं हैं । हैं ! छुए
मुर्दें का हमारी अण्डली यें बुलाना क्योंकर अ-
च्छा समझती हो, कथा तुम को पराये बर्द के सा-
मने बातिलाते लज्जा नहीं लगती इनकी बात को
छुन के श्रीछति शैल कुमारी मुस्करा के बोलीं
दहिन ! नारदजी ऊर्ध्वरेता हैं उन के साथते बो-
लते बातिलाते यें हसकों कुछ दोष नहीं है खास
कर सब देवताओं के विषेष समातार यही ले
जाते हैं ऐरे विवाह के समय भी यह रवंत्र आ-
ते जाते थे ।

श्रीलती विष्णुशिथा ने हंसकर कहा हाँ जी !
नारद ही तो देवताओं के लास नाड़ है और ऊ-
र्ध्वरेता तो वे ऐसे हैं कि राजा समय की युद्धी
दलयन्ती के बारे में कह वर्ष तक वन्दर वन के रहे
थे (देखो देवी भागवत)

मद्वाराणी इक्कट्ठी बोलीं देखो ? जहिल ? एहु
ठोली का सबूथ नहीं है यदि वह एक लाले इस
सम्बन्ध को स्वीकार करते तो शुक्राचार्य को
बुला के छठ पट विवाह का दिन और तुड्हुर्स्थिर
कर के विवाह की सायंगी इकट्ठी की जाए, अन्त
में सब की यह सम्पाति ठहरी कि सरस्वती जी देव-
र्षिनारद की हस्पेशा हैं इस कारण वही नारद
का आठानकरें, सरस्वती जी ने क्षी सब की सम्पाति
को स्वीकार करके और वीना हाथ में लेके एक शेष
मन्त्र का आत्मापना आस्था किया उस मन्त्र के
गाते ही गाते श्रीदेवर्षि नारदजी देवाङ्गना समा-
ज में आ उपस्थित हुए, उन को आते हुए देख
कर सब देवाङ्गना खड़ी होगई और यथायोग्य
अर्थ पाद्य देकर स्वच्छालन पर विठलाया ।

देवर्षि सब की ओर को सौध्यभाव से देखकर
बोले क्यों यजमानिओं आज क्या बात है जो
सब इकट्ठी हो रही हो क्या विष्णु मद्वाराज कोई
नया अवतार ग्रहण करेंगे ? वा देवराज इन्हपर कोई
आपसि आई है ? वा भोलानाथ भंग का गोला
खा के अतवाले तो नहीं होगये हैं ? ठीक बतलाओं
आज तुम सब क्यों इकट्ठी हो रही हो ?

देवर्जि नारद की बात को लुक के यहाशणी इन्द्राणी हाथ जोड़ के बोलों, देवर्जे ! यह कोई बात नहीं है, हम सबने आप को इस बास्ते बुला याहै कि आप एक कन्याको पक्षी बात कर आवें ।

नारद ने पूँछा वह कन्या किम्बकी है और किसके साथ उसके विवाह की बात करना होगी यहाशणी इन्द्राणी ने विनीतभाव से उत्तर दिया कि वह कन्या तुलसी की है और उसके पिता का नाम आप जानते ही हैं ।

इस बात को सुन के नारद कुछ चाकित हुए और नाक खोंह चढ़ाके कहने लगे कि ऐसी कन्या के विवाह का उद्योग मैं कदापि नहीं करूंगा श्री विष्णु प्रिया लक्ष्मी मुसकरा के कहने लगीं, यहाशय आजकल इण्टरनेशनेल मैरेज (वर्णान्तर विवाह) जारी हो गया है फिर आप हित्र भित्र क्यों करते हैं जाइये विवाहकी बातें पक्षी कीजिये नारद बोले कि मैं कदापि इस विवाह की बातें न करूंगा क्योंकि प्रथम तो कन्या ही नियोग से उत्पन्न हुई है दूसरे उसकी माताके देवाङ्गना होने थे अधी तक बहुतेरों को सन्देह है ।

सब देवाङ्गनाओं ने देवर्जि नारद के बच्चों

को सुन कर बड़ी विनय और नव्रता के साथ कहा कि देवर्षे ! इस विवाह के बास्ते हम सब आप से विनय करती हैं । कृपासागर ! आप अवश्य इस कार्य को कीजिये । खैर किसी प्रकार से नारद ने स्वीकार किया और रोली अक्षत लेके टीका चढ़ाने को चले । नारद मार्ग में विचार करने लगे कि तुलसीदेवी विष्णु की प्यारी हैं और यह कन्या भी उन की ही विशेष कृपा से उत्पन्न हुई है और प्रत्यक्ष देख पड़ता है कि विष्णु भक्तों के सम्प्रदायी ही कण्ठी को अपने गले में बांधते हैं, इस कारण विष्णु भगवान् तो वर के पिता नहीं ज्ञात होते हैं, भङ्गड़ी भोलानाथ ऐसे भगड़ों से कुछ सम्बन्ध ही नहीं रखते हैं इस कारण चौमुख बाबा के ही घर चल के इस टीके टुन छुन के बखेड़े को मिटाना चाहिये ।

नारद महाराज बीन बजादे और रङ्गविरङ्ग कजरी गाते (क्योंकि जाज कल स्वर्ग में कजरी बहुत गाई जाती हैं) अनेक लोग लोकान्तरों को देखते भालते ब्रह्मलोक में जा उपस्थित हुए । देवर्षि नारद को आते हुए देखकर प्रजापति ब्रह्म अपने सभासदों के साहित खड़े देखये और यथा

थोड़े खातिर तवाजा करने के अजन्दरसब अपने
 अपने आसनों पर बैठ गये, अजा एति ब्रह्मा का
 इशारा पाके महर्षि वशिष्ठ ने देवर्षि नारद से पूछा
 कहिये अद्यवन् ! आज किधर भूल पड़े ? सब लोक
 लोकान्तरों में कुशल तो है ? मर्त्यलोक में कोई
 राजा दैत्य वा दानव तो नहीं होगया जो संसार
 को उद्धेश पहुंचाता हो ? कहिये किस उद्देश्य से
 आप ने दर्शन दिये हैं ? महर्षि वशिष्ठ के वचनों
 को सुन के देवर्षि नारद ने बड़े विनीतधाव से
 कहा कि यह कोई बात नहीं है संसार का कुशल
 धंगल तो आप इससे ही जान सकते हैं कि एक
 रूपये के १८ से १८ गोहूं बिकरहे हैं और धर्म कर्म का
 यह हाल है कि यज्ञ धूम के बदले इंगिनों (मैं
 जौंके गये पत्थर के कोयले) के धुयें से स्वर्ग—
 वासियों की नाक में नकचुहे भर गये हैं, परन्तु
 आज मैं इस वास्ते नहीं आया हूं कि गोबध के
 निवारणार्थ विष्णुभगवान् से अवतार धारण करने
 को कहूं वा आप लोगों में से किसी को गोपी
 और किसी को गाय बनने का कष्ट हूं मैं आज
 एक छोटे से कार्य के वास्ते यहां उपस्थित हुआ
 हूं यदि आए लोग इस कार्य को सम्पन्न करेंगे

तो केवल हैं ही सन्तुष्ट न होऊँगा वरन् देवताँकी सब स्थियाँ चौमुखे बाबा की मानता यानेगी वह कार्य भी कुछ बड़ा आरी नहीं है केवल यही है कि प्रजापति ब्रह्माजी के योउथ एत्र यज्ञोपवीतका विवाह तुलसी पुत्री कुमारी कण्ठीके साथ होजाना चाहिये ।

देवर्षि नारद के इस प्रस्ताव को सुनते ही सब सभासद् कुछ क्रोध के साथ बोले, महाराज ! आपका यह प्रस्ताव असङ्गत है क्योंकि तुलसी जलन्धर शक्षसर्की विधवा स्त्री है उसकी नियोगज कन्या का विवाह देवकुल में क्योंकर हो सकता है ? क्या हम लोग ऐसे पतित हैं जो कण्ठी के साथ ब्रह्मा के पुत्र का विवाह होने देंगे विशेषतः कण्ठी के मचारक और सहायक सब शूद्र हैं, जब कि धर्म सभावालों का पक्ष है कि शूद्राँ को वेद लुनते का अधिकार नहीं है तब कौन ऐसा ब्राह्मण है जो कण्ठी का विवाह करने में आचार्य बनेगा ।

देवर्षि नारदने विनीतशाव से कहा कि आप का कहना पुराणों के विरुद्ध है इस कारण मानवीय नहीं है क्योंकि पुराणों में इण्डरनेशनेलप्रैरेज

(वर्णान्तर विवाह) करना लिखा हुआ है और कितने ही विवाह ऐसे हुए भी हैं कहिये तो च्यवन ऋषि का विवाह कौन से ब्रह्मण की कन्या से हुआ था, फिर मत्स्योदरी कौन से क्षत्रिय लुल की कन्या थी जिसे वैयाप्रपाद गोत्र के महाराज शन्तनु विवाह करके लेगये थे ? इसके आतीरक प्रहर्षि पुलस्त्य भी तो ब्रह्मा के ही और सुन्दर ये जिन्होंने राक्षसी से विवाह किया था परन्तु आश्र्य की बात है कि इस विवाह में आप लोग जाति का विचार करते हैं और अपनी परम्पराको नहीं देखते हैं । भला यह तो कहिये कि जिन विष्णु ने स्वयम् तुलसी से नियोग किया था । उनको भी आप लोगों ने जाति से पतित किया वा नहीं ? अब छपानाथ ! अधिक मत कहलाइये और विवाह करना स्वीकार कीजिये नहीं तो देवतों में तफक्का पड़ जायगा लीजिये मैं टीके का सामान लाया हूँ नारद के और वशिष्ठ के बाद प्रतिवाद को सुनके ब्रह्मा महाराज बहुत हँसे और गम्भीर स्वर से बोले थाई ! यह नारद हैं इन से जीतना बड़ा कठिन है सब से उच्चम

यही है कि थीकर ले लिया जाए और विवाह की दैशरी की जाए ।

ब्रह्मा भहाराज के अनुमोदन करने से ब्रशि-
ष्टादि सप्तर्ण महाशय चुप हो गये और सब
सभालदों ने देवर्षि नारद से कहा कि आप ति-
लक की सब सामग्री निकालिये और वरकों देख
याल के तिलक चढ़ा दीजिये पीछे जो होगा
देखा जायगा ।

देवर्षि नारद ने कहा कि वर के घर बार को
लीपने पोतने की आज्ञा दीजाय, ऐर ब्रह्माजी ने
तिलक लेने के वास्ते महासभा करने की आज्ञा
दी, वायु देव तथा तड़ित देवों को आज्ञादी कि
तुम दोनों स्वर्ग, मर्त्य पाताल तीनों लोकों से वर
पक्ष वाले मनुष्य, देव, गन्धर्व यक्ष किन्वर और
पाताल वासियों को बुलाके लाओ । ब्रह्मा महा-
राज की आज्ञा पाते ही वायुदेव और तड़ित देवी
अपने ३ कार्य करने को चल दिये और बातकी
बात में सबको ब्रह्मलोक में ला बिठलाया, सब के
एकत्रित हो जाने और अनुमोदन करने पर तिलक
चढ़ायागया इस यहोत्सव में जो ३ विशेष बातें
हुई वे ३ पाठकों को किसी और अवसर पर सुनाई
जायेंगी ।

देवर्षि लारह तिलक चढ़ा के पिछे अदरशदती को लौट गये और पूर्व कथित देवाङ्गना समाज को सब सधाचार कह मुनाये, विवाह की स्वीकृति को मुनके देवाङ्गना समाज बहुत ही सन्तुष्ट हुआ अनन्तर सबने देवर्षि को धन्यवाद देके तुलसी देवी से कहा कि अब तुम अपने घर जाके दिवाह का सरबजाम एकात्रित करो । तुलसी देवाङ्गना और की आज्ञापाकर और सबको निमंत्रण देकर अपने घरको छली गई ।

तुलसी ने घर पर जाके समस्त कछड़ी-धारियों को बुलाया और सबको यथा योग्य काष सौंप दिये, बल्लभीय सम्प्रदाय बालों को खोजन बनाने के निमित्त हलवाई खाने में भेजा गया, लाल्ह सम्प्रदायियों को आज्ञा दी गई कि तुम वाज्गर की सापश्ची लाके हलवाई खाले ये पहुँचाते रहो, निम्बाकी लोग लकड़ी चीरने पर खड़े कर दिये गये, चैतन्य सम्प्रदाय के बंगालियों को तर्कारी बनाने का काष सौंपा गया, परन्तु बड़ी ढाठ के साथ कह दिया गया कि खुबरदार यच्छती रसोई ये न जाने पावे नहीं तो वैष्णव सम्प्रदाय से दिलाल दिये जाओगे, सैल धनत को आहर दीर्घ

कि तुम श्रीश्रता के साथ पतरी हाँवे तैयार करो, सध्या अल्ल को हुक्म लिला कि तुम बारात के बैतों के लिंगियों भूसा इकट्ठा करो औपिया पीषा को थोड़े से कपड़े औपले को दिये गये और रैदास अल्ल से जूते बनाने को कहा गया एवं कर्वीर दास से कहा गया कि वरातियों को देनेके बाहते थोड़ी गजी और दश बीस थान घाड़े के बुनके तैयार करो, पानपदास तथा उनके अल्युयाङ्गों को आज्ञा लिली कि तुम इतने पाटे तैयार करो जिन पर बराती बैठ के भोजन कर सकें। इस शकार से सब को विवाह के काम सोंप के तुलसी के नरसी शाह को और मीराबाई को बुलवाया, उन दोनों के आ जाने पर तुलसी जी ने नरसी शाह से कहा कि सेठ जी लड़की का विवाह बड़े घर में ठहरा है जरा रूपये पैसे की मदद खबना, नरसी जी ने “आव अला नझा बहुत (से) बैठे गदी पै धड़ा लगाये जाओ (तक) हुण्डी पढ़ के कहा यहाराणी इस बर्जे तो कलकत्तेकी टकसालबन्द है या सो रूपैयान को बड़ी आना ठानी है, जो मर्जी होय तो बड़ौदे से नये पैसे लंगा ढूँ, तुलसी जी ने कहा कि उन के बाहते रिक्ता थत करो एहरएहर के स्वाधी नार-

यिथे आप ही उन पैसों को ले आवेंगे परन्तु तुम जो इस बक्क कुछ सहायता न करेंगे तो याद रखो तुम से कठठी छीनली जायगी तब तो मेठ जी बड़े घबड़ाये और कहने लगे कि अच्छा मैं बिलायत से कुछ पौरण और शिलिङ्ग पेन्स आदि जाके श्रीमती के अपेण करूंगा, लीजिये मैं अभी प्रिन्सरणजीतीसिंह जी को लिखता हूं कि फौरन स्वर्गीय ढांक द्वारा उक्त सिक्के भेजदें। इस के पश्चात् भीराबाई से कहाकि तुम सब देवाङ्गनाओं को यथा योउय आदर पूर्वक बिठलाके गाने बजाने का ठीक प्रबन्ध रखना, हाँ हाँ एक प्रबन्ध तो भूल ही गई देखो घर बार में सफाई रखने के वास्ते पठकोपदास के अनुयायी जो रामा नुजी कहलाते हैं उनको नियुक्त करना चाहिये और राधास्वामी तथा वृन्दावन के मार्गचालों का इधर उधर खबर पहुंचाने के वास्ते हलकारे नियत रखना चाहिये जिससे सब प्रबन्ध ठीक रहे परन्तु इन में से कोई भी योजन की ओर न जाने पावें क्योंकि हम को कई एक पर उच्छ्वष्ट योजी होने का सन्देह है।

देखो यहाँ ख्याल रखना कि भारतमें यादि

जीससक्षाइष्ट और मुहम्मद आदि आजांय तो उनका 'आदर सत्कार करने तथा उनके खान पान का प्रबन्ध करने के वास्ते कुण्डापन्थी और बीजमार्गी नियुक्त रहे और समस्त वाममार्गियों को खान पान की सामग्री में नियुक्त कर दिया जाय खबरदार मेरे कहे हुए किसी प्रबन्ध में चुटि वा असावधानी न हो, नहीं तो तीनों लोक में बदनामी होगी।

ब्रह्मा यहाराज ने यथा समय आने के वास्ते सब देवतों के पास निमन्त्रण पत्र भेज ही दिये थे वे सब अपने २ विमानों पर तथा अन्यान्यानां पर वैठ के ब्रह्मलोक में पहुंचे और वहां से धूमधाम के साथ बरात सजाई गई, सब से आगे शोलानाथ महादेव का ढूँढा बैल मोहरे पट्टे से दुरुस्त हो के चला, उन के पीछे विष्णु भगवान् का गरुड़ पूछ हिलाता और पंखों को छटकारता हुआ चला, महादेव के आभूषण सूर्यराज गरुड़ को देख के कुछ स्कुचाये परन्तु देवी के सिंहको देख के फिर कुछ शांत हुए, श्री गणेशजी के चूहेराम विनायक महाराज की इस थोंद से ऐसे दशे हुये चले जाते थे मानों विल से इनकी गर्दन अभीतक दर्वी हुई है, यमराज का लैसा और शनै-

श्वर का बकरा एवम् घैरेंजी का कुत्ता ब्रात की शोभा को छिगुणित किये हुये थे कहाँ तक लिखा जाय यह देवतों की ब्रात ऐसी जान पड़ती थी मानों किसी ने अजायब घर (अद्वितालय) की सामग्री इकट्ठी की है ।

ब्रात को आई हुई सुन के श्रीमती तुलसी देवी ने आज्ञादी कि हमारे शहर से बिल्कुल बिल्ली निकाल दी जांय क्योंकि बिल्ली को देखके गणेश जी का चूहा गणेश जी के सहित आग जायगा, फिर तुलसी देवी की आज्ञानुसार श्री गोस्वामी बम्मकलाल जी महाराज भांकरौली वारे श्री गोस्वामी चिमगूदड़लालजी महाराज वैजनाथ छारे वारे, श्री गोस्वामी शिमलालाल जी महाराज लण्डनवारे और राजाधिराज श्री वैल स्वामी हिड़म्बकलाल जी महाराज जर्घन वारे, इन के अतिरिक्त श्री प्रसन्न पाञ्जन्यदास, श्रीमहन्त श्री स्वाधीचरण कमल रघु धूरदास जी, इन के सिवाय, भिक्कादास हिक्कादास और छिक्कादास आदि आदि ब्रात की पेशवाई को चले और अगौनी की रीति को समाप्त करके सब कोई यथा योग्य स्थानों में उहराये गये ।

द्वारपूजा और थोजन के पश्चात् बरातियों का दिल बहलाने के बास्ते नाच रंग की ठहरी देवराज इन्द्र का इशारा पाते ही उर्वशी और घृताची आदि अप्सराओं के बृन्द पिशवाज आदि से लुसाजित होके नाचने को तैयार हुए और हाहा हू हू आदि गन्धर्व तबले और सारंगी के स्वरों को मिला के साज बाज के सहित खड़े होगये, सब से पहिले उर्वशी की बारी आई, वह देश की ध्वनि में नीचे लिखी [वेतुकी] गजल गानेलगी।

अभी फैसला है हमारा तुम्हारा । ज़रा न्याय पर हो इशारा तुम्हारा ॥ चैतन्य ईश्वर को त्यागा है तुमने । जडादि की पूजा सहारा तुम्हारा । जीते बुजुगों को माना न तुम ने । मेरे का हुआ शाद्ध प्यारा तुम्हारा । यन्दिरखें अपने नचाओ हो वेश्या । यही कर्म भारी नकारा तुम्हारा ॥ पोथी तुम्हारी गणेड़ों भरि है । उन्हें छोड़ने से गुजारा तुम्हारा । बेदों को जानों सनातन पियारो । इसी ज्ञान से उबारा तुम्हारा ॥ ९ ॥

इस के पश्चात्-घृताची उठी और लावनीकी ध्वनि में यह गा के बैठ गई ।

जग पाप ताप से हृष्टे तो पानी बरसे [टेक]

छल छिद्र छिनाला घटे तो पानी बरसे । जन ज-
गत पिताको रटे तो पानी बरसे । तज भोग योग
में सटे तो पानी बरसे । जब खपट कपट की छटे
तो पानी बरसे । अधरम की बदशी फटे तो पानी
बरसे । जब प्रजा में हो नित यज्ञ तो पानी बरसे ।
छल छिद्र छिनाला घटे तो पानी बरसे ॥ १ ॥ सब
करें हवन शुभ पवन पूर हो जावे । क्षासिन को—
इले का धूम दूर होजावे । दुर्गन्ध अन्धतामिक्ष
धूर हो हो जावे । सब रोगों की वह स्वान चूर हो
जावे । सब सुनो दीन जन अन्य विना नहिं तर
से । छल छिद्र छिनाला घटे तो पानी बरसे ॥ २ ॥
सब सन्यासी हों सत्य मार्ग के गामी । ताजि नशी
फशो को बनेवेद धर्म अनुगामी । नहीं रहे ब्रह्मचारी
भी लौलुप कामी । वनवासी भी बने नहीं बहु-
धारी । जब वेदों की शुभध्वनी भनी घर घर से ।
छलछिद्र छिनाला घटे तो पानी बरसे ॥ ३ ॥ जब
प्रजा करे सब धर्मराज अनुशासन । औ पक्ष न-
हीं कोई करे बैठ न्यायासन । यदि राजा पर दुःख
पड़े प्रजा आश्वासन । दे सहाय सब विधि उसे
बेंच के बासन । लखि दीन हीन दे छोड़ शज के
करसे । छल द्यिद्र छिनाला घटे तो पानी बरसे ॥ ४ ॥

करि धारण पातिब्रत पुरुषकरे सब कामा । सब प-
तिब्रता बलि जग में विचरे वाया । यह वेश्या भ-
दुए नशैं घूर्ख बेकामा । जग जन मिल नित ही
रटैं ईश गुन आया । उपदेश हमारा लुनों छुट्टो स-
ब डर से । छल छिद्र छिनाला घटे तो पानी
बरसे ॥ ५ ॥

सब लोग इन बेतुकी तानों को लुन के वाह!
वाह ! करने लगे इस के पश्चात् विवाह का ल-
गन आया और सब लोग अपने २ कामों को
करने के बास्ते मैफिल से उठे ।

सबको सभा से उठते देखकर श्रीकृष्णचन्द्र
आनन्द कन्द यशोधानन्दवर्ज्ञन बोले कि आप
लोग क्षणमात्र और ठहरिये कि जिससे रासलीला
भी होजाय क्योंकि फिर आपलोगोंको रास देखने
का ऐसा अवसर न मिलेगा ।

श्री गोपीजन बल्लभ की आज्ञा पातेही श्री
गोस्वामी चित्रकूटलाल जी पखरौली वाले और
श्री वकरी स्वामी जगहरणलाल जी सिंहद्वार वा-
ले राधा और कृष्णकी मूरत वनके नेपथ्य में
आखड़े हुए और खिपटा नाचने लगे, इस अद्भुत
लीला को देखकर खोलानाथ महादेव जी क्रौध

के साथ बोले कि यदि हमारे भक्त हमारा ऐसा उपहास करते तो हम तीसरा नेत्र खोल के उन्हें अस्म कर देते, इनकी बात को मुनके श्रीदेवराज इन्द्र ने मुसकरा के कहा भाई। विष्णु की लीला अपार है इनको अपनी इज्जत का कुछ भी ध्यान नहीं रहता क्योंकि यह स्वयम्भी भिखारी (बावन) का रूप धारण करके मांगने चले गये थे, विष्णुने हँस के कहा कि हां भाई हम त्से ऐसे ही हैं परन्तु आप लोग यह नहीं जानते कि जो लोग हमारी और हमारी स्त्रियों को नकल करते हैं उनको हम घोर नरक नें डाल के कठोर दण्ड देते हैं।

इसके अनन्तर कन्थपक्ष के नाऊ सैन भक्त ने जनवासे में जाके कहा कि विवाह का लग्न समर्पित आगया शुतशष नाच मुजरे को बन्द करके आप सब लोग मण्डप में पधारें, इस बचन को मुनते ही चौमुखे नाचा की आज्ञानुसार नाच सभा का चिसर्जन किया गया और सब देवता तुलसी यन्दिर में जाके उपस्थित हुए, जबसब देवता यथा स्थान बैठ गये तब देवतों के पुरोहित श्री वृहस्पति जी ने विवाह कार्य आरम्भ किया।

कलश स्थापन के अनन्तर ज्यों ही वरुण

देवता का उसमें आवाहन किया त्यों ही झट से बरुण देवता उठे और उसघड़ेमें घुसने लगे परन्तु पैर के लगते ही घड़ा फूट गया और सब पानी बहगया तब तो सब देवताँ ने वृहस्पति की हंसी आरम्भ की किसी ने कहा कहिये भगवन् ! इस छोटे से घड़े में श। हाथ के बरुण का आवाहन क्यों करते थे, आपने क्या घड़े को मदिरा का पीपा समझा था ? किसी ने कहा हाँ हाँ ! इस ही बुद्धि के बल से गुरु जी ! तारा देवी को ता रना चाहतेर खैर ! देवगुरु वृहस्पति लुच्छ लज्जित हुए और मिट्टी और मिट्टी के एक ढेले में लाल डोरा लपेट के मण्डप के बीच में रखा और उस में गणेश का आवाहन करने लगे इस को देख के गणेश जी ने अपनी लूंड को बढ़ा के मट्टी के ढेले को उठा के फैक दिया और हंसके कहा कि भगवन् ! मेरे एक पैर के बोझको थी यह मट्टी नहीं संभाल सकी तो मैं इस में क्यों-कर आसक्त हूँ इस बार थी वृहस्पति जी की खूब हंसी हुई ।

नवश्रहों की पूजा के समय तो वह कहके उड़े कि देव गुरु के छक्के छूट गये, प्रथम तो नव-

ग्रहों में से सात ही ग्रह मिले क्योंकि एक तो देव-
गुरुपूजक के हाँने के कारण स्वयम् ही पृथक् हो
गये, दूसरे कन्या पक्ष के पुरोहित श्री शुक्राचार्य
भी पूज्यग्रहोंमें मिथ्रित न हो सके, शेष सात ग्रहोंमें
से चन्द्रमा महाराज ने कहा कि मैं अभी अपनी
इयूटी (काम) पर हूँ और मुझे कोई एवजी मी
नहीं मिला, इस कारण विवाह में पूजा लेने नहीं
आसक्ता हूँ. भगवान् भास्कर ने कहला खेजा कि
इस समय मेरा दौरा अमेरिका द्वीप में हो रहा है,
इस के अतिरिक्त जिस लग्न में विवाह स्थिर हु-
आ है वह लग्न व मुहूर्त मेरे आते ही पाताल को
भाग जायेंगे, इस कारण मैं करणी के विवाह में
नहीं आसक्ता हूँ, नवग्रहों की इस गड़बड़ी को
देखकर तुलसी देवी को बड़ी चिन्ता हुई तब उ-
न्होंने उच्चस्वर से कहा कि यदि नवग्रहों की हा-
जिरी ठीक नहीं है तो उन सबकी स्त्रियों की ही
पूजा करनी चाहिये, तुलसी जी की बात को
सुन के चन्द्रमा की स्त्री रोहिणी बोल उठी कि
“आप का यह कहना ठीक नहीं, क्योंकि हम सब
पतिव्रता हैं इस कारण अपने पतियों को त्याग
कर हम पूजा नहीं कर सकती हैं, हम क्या तुलसीके

समान हैं जो अपने पति (शालिश्राम) के शिर पर छढ़ बैठती हैं” खैर इस ही प्रकार से पूजा पत्री के बखेड़े में अधिक रात्रि व्यतीत होगई, तब श्रीब्रह्माजीने विनीत भाव से कहा कि यह सब बखेड़े हिन्दुओं के वास्ते हैं अन्य लोगोंके वास्ते नहीं तबसिविलाइज़ड (शिक्षित) देवतों के विवाह में यह झगड़ा क्यों ढाल रखा है? विवाह के अन्य कार्यों को आरम्भ कीजिये। वरके जन्म समय में जैसे अग्निहोत्र हुआ था वैसे ही इस समय भी होना चाहिये, खैर अग्निहोत्रादि के समाप्त होजाने पर कन्यादान का समय आया, प्रथम वर पक्ष से रेशम और कलावन्तु आदि आभूषण वधु को विभूषित करने के निमित्त भेजे गये और उन से लुक्जित हो के जब कन्या मण्डप में आई तब प्रधान २ देवतों ने उसे आशीर्वाद दिया, प्रथम वर के पिता ब्रह्मा जी ने कहा ।

शूद्राणामन्त्यजानाश्च, प्रियाभूयास्मुखण्डिते ।

पण्डितैराद्वतामाभूर्भूमौ त्वं तन्तुमण्डिते ॥

अर्थ—शूद्र और चमार आदि अन्त्यजोंकी तू प्यारी हो और ब्राह्मण तेरा आदर न करें और अच्छे लूत से तू गुही जाय ।

इनके अनन्तर अन्य देवताओंने भी यथायोग्य आशीर्वाद दिये अनन्तर कन्याके माया रामानुज, शुक्राचार्य और बल्लभाचार्यादिकों ने कन्या को अङ्ग में विठला के विवाह के कर्त्तव्यों को किया, तब देवगुरु वृहस्पति ने शुक्राचार्य से कहा कि कन्याके पितासे दान कराइये शुक्राचार्य ने विष्णु भगवान् की ओर इशारा किया, परन्तु विष्णु ने कहा कि यह कन्या मेरी ओर से नहीं है इस कारण मैं कन्यादान न लूँगा मेरी समझमें इसका कन्यादान शालिग्राम को ही लेना चाहिये (वा बद्धि को लेना चाहिये) ।

इस के उत्तर में शालिग्राम जी बोले कि मैं भी तो आप का ही रूप हूँ, इस कारण आप को ही कन्यादान का लेना उचित है । श्री विष्णु भगवान् ने कहा कि मेरे रूप तुम क्योंकर होसकते हो, मेरे शरीर में चार हाथ हैं और तुम्हारे एक भी नहीं, मेरे कमल से नेत्र और तुम निपट अन्धे, मेरे चरण देखो दोनों विद्यमान हैं और तुम निरे पङ्कु हो तब कहो तुम मेरे रूप क्योंकर हो सकते हो ? इस के अतिरिक्त तुम एक वर्ष में अनेक वार तुलसी के साथ नियोग करते हो तब कन्या हात

का करना तुम को ही मुनासिब है, अन्त मे शालि-
आम में डोरा लपेट कर कन्यादान पढ़ा गया ।

कन्यादान का संकल्प ।

ओ३म् विष्णुर्विष्णुविष्णु अद्याज्ञानस्य त्ति-
तीयं प्रहराद्देऽप्रजानमोन्तरे श्वतांग्रबराहकल्पे ऊन-
विंशताब्दिं मध्येऽमुक खीष्टाब्दे दशमवरमासे जा-
तीयपक्षेऽतिथिविशहितायां तिथौ विमाङ्काष्ठरूपां क-
लावत्वादिविभूषिता मतिसूक्ष्मसूत्रेणोत्प्रोतां कंठी
दासीं कन्यां सूत्ररूपांयाच्युत गोत्रोत्पन्नांयज्ञो पर्वी-
तशम्रणे वारायाहं सम्प्रददे ।

इस कन्यादान के अनन्तर वर बधू में नीचे
लिखी प्रतिज्ञा हुई ।

वर-जैसे ब्राह्मण के हाथ से वटे पवित्र सूत
से मैं बना हूँ वैसै सूत से मैं तुम्हें कभी नहीं
गुथने दूँगा ।

२-द्विजातियों के कण्ठ में लगने की यदि
तुम चेष्टा करोगी तो मैं तुम्हें त्याग दूँगा ।

३-यदि तुम कभी मेरे सूतरूपी परिवार को
छोड़ के किसी धातु के तार में गूथी जाओगी
तो मैं तुम्हें त्याग दूँगा ।

४—जो लोग तुमको धारण करके अद्य आंख
का सेवन करेंगे तो मैं तुमको दण्ड ढूँगा ।

बधू—जो छिज वेद, यज्ञ और १६ संस्कारों
से रहित होंगे उनको शूद्र समझ मैं अपना चेला
बना लूँगी खबरदार उनके पास तुम मत जाना ।

२—जो छिजाति किसी चिन्ह से दण्ध होंगे
वह मेरे आश्रय समझे जायेंगे ।

३—मेरे भाई रुद्राक्ष, कमलाक्ष, शंख और महा-
शंख (हाड़) एवम् मेरी बहिन माला तसबी,
पुतर जिया, पोत पवित्री आदि से तुमको सदा सालै
और साली का सम्बन्ध और प्रेम रखना होगा ।

४—जैसे वेदानुकूल ग्रन्थों में तुम्हारे लेख हैं
ऐसे ही लेख अपने खास यजमान ब्राह्मणों से
बनवा के मेरे सम्बन्ध में पुराणों में मिलवा देने
होंगे यदि यह तुम को स्वीकार हो तो मैं तुम्हारी
वासांगी बनूँगी ।

वर—अच्छा मैंने स्वीकार किया ।

परिवर्तन होने के पश्चात् सूत और बन्दी जनों
ने मङ्गल पाठ आरम्भ किया ।

(१) रुई बिलायत जाय सूत को | मिले न लेशा ।

मिष्टर बन के छिप विश्र त्यागे निज देशा ॥
 आलस से नहीं बने सूत ब्राह्मण गृहमाहीं ।
 खच्छ शील के कणठ बीच उपवीत सुहाहीं ॥
 मैल छुड़ावन हेतु नित्य साबुन से धोवें ।
 सबहिं दिखावन हेतु जनेऊ पुनि पुनि जोवें ॥
 जय लाला का आया टीका । घर बाहर सब लागे फीका ॥
 जप लाला का आया लगन । चारों पोरसे लगर्इ आगन ॥
 जय लाला को चढ़िया तेल । घर में ऐर्गई दुःख की रेल ॥
 जय लाला छी चली बरात । को पूछे लिसकी छुशनात ॥
 जय लाला के फिर गये फेरे । यह बर बरियो और घनेरे ॥



सब भकार की पुस्तके भॅगाने का पता:-

एं० श्रीकरदत्त शास्त्री,

वैदिक पुस्तकालय मुरादाबाद यू. पी.

गुरु विरजानन्द दण्डी

मन्दर्भ प्रसारण

पृष्ठग्रहण करान्

२४७९

द्वानन्द पहिला महावद्यालय, कुमाऊँ